वैशाख कृष्ण पक्ष 06
संवत 2082

डालटनगंज (मेदिनीनगर)
शनिवार
19 अप्रैल 2025

वर्ष-31, अंक-182
पृष्ठ-12

डालटनगंज (मेदिनीनगर) एवं रांची से एक साथ प्रकाशित

रजिस्ट्रेशन नं: आरएनआई. 61316/94 | www.rastriyanaveenmail.com

ईश्वर में हमारा विश्वास

# राष्ट्रीय नवीन मेल

सत्यमेव जयते

₹3.00

हर पक्ष की खबर | हर पक्ष पर नजर

पेज 10

## एक नजर

### डॉ शशिबाला सिंह बनीं रिम्स की अंतरिम प्रभारी निदेशक

**रांची।** डॉ. शशिबाला सिंह को राजेंद्र आयुर्विज्ञान संस्थान (रिम्स) का अंतरिम प्रभारी निदेशक बनाया गया है। इससे संबंधित अधिसूचना जारी कर दी गई है। ज्ञात हो कि गुरुवार की देर रात रिम्स के निदेशक डॉ राजकुमार को तत्काल प्रभाव से पद से हटा दिया गया था।

### जेएसएससी सीजीएल पेपर लीक मामले में आईआरबी के 6 जवान होंगे बर्खास्त

**रांची।** झारखंड कर्मचारी चयन आयोग (जेएसएससी) की सीजीएल परीक्षा में प्रश्नपत्र दिलाने के नाम पर ठगी करने वाले गिरोह में शामिल झारखंड आईआरबी के जवानों पर अब कड़ी कार्रवाई की तैयारी हो रही है। विगत 24 मार्च को सीआईडी द्वारा गिरफ्तार किए गए पांच जवानों के अलावा एक फरार जवान को मिलाकर कुल 6 जवानों को बर्खास्त करने की प्रक्रिया शुरू कर दी गई है। राज्य के डीजीपी अनुराग गुप्ता ने मामले की जांच के बाद झारखंड सशस्त्र बल (जैप) के डीआईजी को पत्र भेजकर जवानों को धारा 311 के तहत बर्खास्त करने के निर्देश दिए हैं। सभी जवान फिलहाल निलंबित हैं और जेल में बंद हैं। इनके खिलाफ विभागीय जांच भी चल रही है।

### व्हाट्सएप से सीधे जुड़ें

1994 से अनवरत हम आपके लिए समाचारों को प्रमुखता की नीति पर कार्य करते रहे हैं। इसे और सुगम बनाने के लिए एक विशेष व्हाट्सएप नंबर 72094 53444 पर आप सीधे अपनी परखी हुई सच्ची खबर फोटो सहित संक्षेप में भेज सकते हैं। आपत्तिजनक बातें भेजने पर आइटी एक्ट के अंतर्गत कार्रवाई हो सकती है। यदि आपको अखबार की प्रति नहीं मिल पा रही है या विज्ञापन देना चाहते हैं तो इस नंबर पर 72094 03444 संपर्क करें।

### आज | कल

---

परंपरागत जल स्त्रोतों की उपेक्षा से गहराया जल संकट

# तालाब सूखे, जमीन प्यासी... अतिक्रमण व अधूरी योजनाएं बनी बड़ी बाधा

राणा अरुण सिंह

**मेदिनीनगर।** पलामू जिले में पेयजल संकट की स्थिति दिन-ब-दिन गंभीर होती जा रही है। लेकिन इस संकट की जड़ में केवल सूखी नदियां या घटता भूजल स्तर नहीं, बल्कि वर्षों से उपेक्षित पारंपरिक जल स्त्रोत भी हैं। जिले में कभी सैकड़ों तालाबों और जलाशयों का एक सुव्यवस्थित नेटवर्क था, जो वर्षाजल संचयन, सिंचाई, पशुपालन और घरेलू जरूरतों की रीढ़ हुआ करता था। आज वही तालाब या तो अतिक्रमण की भेंट चढ़ चुके हैं या मरम्मत के अभाव में बेकार हो चुके हैं।

पंडवा पंचायत के लोहड़ी गांव का कौआ तालाब

जिले के कई प्रखंडों चैनपुर, छत्तरपुर, पाटन, हुसैनाबाद, पाटन, पांकी और विश्रामपुर जैसे क्षेत्रों में आज भी 300 से अधिक ऐतिहासिक तालाब मौजूद हैं, जिनमें से अधिकांश का निर्माण ब्रिटिश काल या उससे पूर्व स्थानीय लोगों ने कराया था। इनकी वैज्ञानिक संरचना वर्षाजल को सहेजने और भूजल स्तर बनाए रखने के उद्देश्य से की गई थी।

**तालाबों के सूखने से भूजल स्तर में भारी गिरावट :** तालाब केवल सतही जल संग्रहण नहीं करते, बल्कि भूजल का पुनर्भरण भी करते हैं। इनके सूख जाने या गाद से भर जाने पर जल स्तर तेजी से गिरता है। पाटन, छत्तरपुर और मोहम्मदगंज क्षेत्रों में पहले जहां 30 से 40 फीट पर पानी मिल जाता था, अब वहां 100 फीट तक खुदाई करनी पड़ रही है।

**पशुधन पर भी भारी असर :** पशुपालन विभाग, डालटनगंज के अनुसार 2023 की गर्मियों में जल संकट के कारण 370 से अधिक पशु प्रभावित हुए। गर्मियों में पीने के पानी के अभाव में पशुपालकों को भारी नुकसान झेलना पड़ता है।

**तालाबों पर कब्जे, प्रशासन की चुप्पी :** हरिहरगंज, चैनपुर, पाटन,पांकी, मनातू और छत्तरपुर जैसे क्षेत्रों में पुराने तालाब अब या तो निजी निर्माण स्थल में बदल गए हैं या खेतों के रूप में उपयोग हो रहे हैं। राजस्व विभाग की रिपोर्ट के अनुसार जिले के 89 तालाबों पर अवैध अतिक्रमण की पुष्टि हुई है, लेकिन अब तक कोई ठोस कार्रवाई नहीं हो पाई है।

**जन भागीदारी से बनी मिसालें :** कुछ क्षेत्रों में आम लोगों की पहल से सकारात्मक उदाहरण भी सामने आए हैं। पाटन प्रखंड के नगवां गांव में ग्रामीणों ने चंदा और श्रमदान से तालाब की सफाई की, जो अब हर वर्ष बारिश में भर जाता है और स्थानीय जरूरतों को पूरा करता है।

### विभागीय रिपोर्ट से खुलती हकीकत

झारखंड जल संसाधन विभाग की 2022 की रिपोर्ट बताती है कि जिले के 523 चिन्हित तालाबों में से 78% तालाब मरम्मत योग्य स्थिति में हैं। 100 से अधिक तालाबों पर अतिक्रमण हो चुका है। 2021-22 में जिला प्रशासन ने मनरेगा और राज्य योजना के तहत 40 तालाबों के जीर्णोद्धार की योजना बनाई थी, लेकिन मात्र 12 तालाबों पर कार्य हो सका। अधूरी योजनाएं और तकनीकी अनदेखी के चलते यह प्रयास असफल रहा।

### जल स्त्रोतों को पुनर्जीवित करना जरूरी : डीडीसी

पलामू के उप विकास आयुक्त शब्बीर अहमद ने कहा है कि जल संकट से निपटने के लिए परंपरागत जल स्त्रोतों–जैसे तालाब, आहर और पोखर–को संरक्षित और पुनर्जीवित करना अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने कहा, 'इन जलस्त्रोतों में यदि जल बना रहेगा, तो यह स्वाभाविक रूप से भूजल स्तर को ऊपर उठाने में सहायक होगा और पेयजल संकट की स्थिति में राहत मिलेगी।' डीडीसी अहमद ने बोरिंग के अत्यधिक उपयोग पर चिंता जताते हुए कहा कि इससे प्राकृतिक जलसंतुलन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। उन्होंने होटल, मॉल और अन्य व्यवसायिक परिसरों में पानी के अनावश्यक दोहन को जलस्तर गिरने का एक बड़ा कारण बताया। उन्होंने जोर देते हुए कहा कि पानी को बचाने के लिए जनभागीदारी के साथ सार्थक और ठोस प्रयास करने होंगे। उपविकास आयुक्त ने बताया कि जल संरक्षण के लिए जिला स्तर पर तीन स्तरों पर काम किया जाता है–पेयजल, पशुओं के लिए जल और सिंचाई।

---

औद्योगिक व ऊर्जा निवेश संबंधों को मजबूत करने जा रहे स्पेन व स्वीडन

# सीएम सोरेन करेंगे झारखंड के प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व

- 11 सदस्यीय टीम के साथ आज पहुंचेंगे स्पेन की राजधानी मैड्रिड

नवीन मेल न्यूज नेटवर्क

**रांची/नई दिल्ली।** राज्य के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन 11 सदस्यीय टीम के साथ 19 से 27 अप्रैल, 2025 तक स्पेन और स्वीडन के दौरे पर रहेंगे। सीएम सोरेन झारखंड और स्पेनिश उद्यमों के बीच औद्योगिक और ऊर्जा निवेश के क्षेत्र को मजबूत करने के रणनीतिक प्रयास में स्पेन में राज्य के एक वरिष्ठ सरकारी और उद्योग प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व करेंगे। इस प्रतिनिधिमंडल में विधायक कल्पना सोरेन, मुख्य सचिव अलका तिवारी, मुख्यमंत्री के अपर मुख्य सचिव अविनाश कुमार, उद्योग विभाग के सचिव अरवा राजकमल, निदेशक उद्योग सुशांत गौरव के साथ अन्य विशिष्ट लोग शामिल हैं।

### 21 को मैड्रिड में स्पेनिश और 25 अप्रैल को गोथनबर्ग में स्वीडिश कंपनियों से होगी बात

21 अप्रैल को यह टीम मैड्रिड में प्रमुख कंपनियों के प्रतिनिधियों से मुलाकात करेगी। 22 अप्रैल को मैड्रिड में ही माइनिंग और स्टील सेक्टर की कंपनियों के प्रतिनिधियों के साथ बैठक आयोजित होगी। 23 अप्रैल को बार्सिलोना में स्पेन के कृषि मंत्रालय के प्रतिनिधियों के साथ वार्ता होगी। 25 अप्रैल को स्वीडन के गोथनबर्ग में स्वच्छ ऊर्जा पर काम करने वाली कंपनियों के प्रतिनिधियों से बात होगी। स्वीडन में 26 अप्रैल को उद्यमियों के साथ झारखंड सरकार के अधिकारियों के साथ वन-टू-वन मीटिंग होगी।

ज्ञात हो कि मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन और उनकी पत्नी विधायक कल्पना सोरेन गुरुवार की देर शाम को ही नई दिल्ली पहुंच चुके थे। टीम के अन्य सदस्य शुक्रवार को दिल्ली पहुंच गए। शनिवार (19 अप्रैल) को 11 सदस्यीय टीम स्पेन की राजधानी मैड्रिड पहुंचेगी। यह आधिकारिक यात्रा इस्पात और धातु, ऊर्जा (पारंपरिक और **शेष पेज 11 पर**

---

पहली बार राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन व वीमेन डॉक्टर्स विंग आईएमए झारखंड बने आधिकारिक पार्टनर

# सर्वाइकल कैंसर उन्मूलन की दिशा में ऐतिहासिक पहल : डॉ इरफान अंसारी

- स्वास्थ्य मंत्री ने कहा, दूसरे राज्यों के लिए भी बनेगी मिसाल
- जिलों में लगातार स्क्रीनिंग करने के लिए दिया जाएगा निर्देश

नवीन मेल डेस्क

**रांची।** झारखंड देश का पहला राज्य बन गया है, जहां आईएमए की किसी शाखा को राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन का ऑफिशियल पार्टनर बनाया गया है। राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन और वीमेन डॉक्टर्स विंग आईएमए झारखंड सर्वाइकल कैंसर उन्मूलन के लिए आधिकारिक पार्टनर बने हैं। राज्य के स्वास्थ्य विभाग और वीमेन डॉक्टर्स विंग आईएमए झारखंड के बीच एक एमओयू हुआ है। एमओयू के दौरान वीमेन डॉक्टर्स विंग की चेयरपर्सन डॉ भारती कश्यप और राज्य के स्वास्थ्य मंत्री डॉ इरफान अंसारी मौजूद थे। झारखंड के स्वास्थ्य मंत्री इरफान अंसारी ने कहा कि आईएमए के साथ यह **शेष पेज 11 पर**

### अभियान को लगातार जारी रखने की जरूरत : डॉ भारती

वीमेन डॉक्टर्स विंग आईएमए झारखंड की चेयरपर्सन डॉ भारती कश्यप ने कहा कि इस अभियान को लगातार जारी रखने की जरूरत है। क्योंकि, लक्ष्य से ज्यादा स्क्रीनिंग के बावजूद भी कुछ जिलों में लक्ष्य से कम स्क्रीनिंग की गई है और हर साल लगातार नए केस भी जुड़ते जा रहे हैं। वर्ष 2021 में स्वास्थ्य विभाग के साथ झारखंड मॉडल बना कर के प्रजनन क्षमता वाली 5 लाख से ज्यादा महिलाओं की स्क्रीनिंग की गई है। सर्वाइकल एरोजन के 2,792 मरीजों का क्रायो उपचार कर नया जीवन दिया गया है, क्योंकि ऐसे ही कई **शेष पेज 11 पर**

---

# जुआ विवाद में युवक की टांगी से काटकर हत्या

- रूद गांव की घटना, शव को घर से कुछ दूरी पर फेंका गया, पुलिस कर रही है जांच

**छतरपुर (पलामू)।** थाना क्षेत्र के रूद गांव में जुआ खेलने के दौरान हुए विवाद में एक युवक की टांगी से मारकर हत्या कर दी गई। मृतक की पहचान 18 वर्षीय कृष्णा भुइयां उर्फ कईला के रूप में हुई है, जो नगर पंचायत क्षेत्र के बारा निवासी कुलदीप भुइयां का पुत्र था। वह अपने नाना के घर रूद गांव में रह रहा था। ग्रामीणों ने आशंका जताई है कि जुए के दौरान पैसे के लेन-देन को लेकर हुए विवाद में ही कृष्णा की हत्या कर दी गई। वह जुए का आदी था और गांव के अन्य युवकों के साथ अक्सर जुआ खेला करता था। मृतक के पिता कुलदीप भुइयां ने बताया कि शुक्रवार की सुबह घर के समीप उसका शव लहूलुहान हालत में पड़ा मिला। शव को देखकर अंदेशा होता है कि उसकी हत्या टांगी या किसी अन्य धारदार हथियार से की गई है। घटना की सूचना मिलते **शेष पेज 11 पर**

# जमशेदपुर में सीएचओ पर धारदार हथियारों से हमला, हालत गंभीर

- टाटा मेन हॉस्पिटल में भर्ती, पुलिस कर रही मामले की जांच

नवीन मेल डेस्क

**जमशेदपुर (पूर्वी सिंहभूम)।** जमशेदपुर में 'आयुष्मान आरोग्य मंदिर' की सामुदायिक स्वास्थ्य अधिकारी (सीएचओ) ज्योति कुमारी के सरकारी क्वार्टर में शुक्रवार को मरीज बनकर पहुंचे चार-पांच लोगों ने उन पर कुदाल, कुल्हाड़ी और अन्य हथियारों से हमला किया। इस हमले में वह गंभीर रूप से जख्मी हो गई हैं। उन्हें इलाज के लिए टाटा मेन हॉस्पिटल में दाखिल कराया गया है। हमलावर कौन थे और हमले की वजह क्या थी, यह पता नहीं चल पाया है। पुलिस मामले की जांच कर रही है। जानकारी के अनुसार, शहर के एमजीएम थाना क्षेत्र के रुहीडीह स्थित आयुष्मान आरोग्य मंदिर (स्वास्थ्य केंद्र) की प्रभारी ज्योति कुमारी अपने क्वार्टर पर थीं। सुबह करीब नौ बजे चार-पांच लोग उनके आवास पर पहुंचे। उन्होंने एक मरीज को दिखाने की बात कही। ज्योति जैसे ही बाहर निकलीं, उन पर हथियारों से कई वार किए गए। वह लहूलुहान होकर गिर पड़ीं। हमलावर घटनास्थल **शेष पेज 11 पर**

### रांची में पहली बार 19 को दिखेगा वायुसेना का शौर्य

**रांची।** भारतीय वायुसेना रांची में शनिवार को पहली बार अपना शौर्य और करतब दिखाएगी। नामकुम आर्मी ग्राउंड में 19 और 20 अप्रैल को होने वाले एयर शो में सूर्यकिरण की टीम सूर्यकिरण और हॉक विमानों द्वारा कई रोमांचकारी करतब दिखाएगी। कार्यक्रम में भारतीय वायुसेना के चीफ ऑफ स्टाफ एयर चीफ मार्शल एपी सिंह भी शामिल होंगे। मौके पर रक्षा राज्य मंत्री संजय सेठ भी उपस्थित रहेंगे। उन्होंने राजधानी रांची के सभी स्कूल प्रबंधक और कॉलेज के प्राचार्यों से रांची में होने वाले पहले एयर शो को देखने की अपील की है।

---

# भाजपा में बड़े पैमाने पर है फेरबदल की तैयारी

- राष्ट्रीय अध्यक्ष के नाम की घोषणा से पहले हो सकता है बदलाव

– ब्यूरो

**नई दिल्ली।** भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) नए राष्ट्रीय अध्यक्ष के नाम की घोषणा से पहले बड़े पैमाने पर पार्टी संगठन में फेरबदल करने जा रही है। बीते मंगलवार को केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह व रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने पार्टी अध्यक्ष व केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री जेपी नड्डा के घर पर तीन घंटे तक विचार-विमर्श किया। इसके बाद बुधवार को शाह, राजनाथ सिंह व भाजपा महासचिव (संगठन) बीएल संतोष ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मुलाकात की। इसके बाद शाह नड्डा से मिले।

भाजपा अब तक 15 राज्यों के लिए प्रदेश अध्यक्षों की घोषणा कर चुकी है। 19 अप्रैल तक 6 और 7 अन्य राज्यों के अध्यक्षों के नाम की घोषणा होने की संभावना है। 20 अप्रैल के बाद पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष के चुनाव के लिए नामांकन प्रक्रिया शुरू हो सकती है। पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष का चुनाव इस महीने के अंत में या अगले महीने की शुरूआत में हो सकती है।

जेपी नड्डा जनवरी, 2020 में पार्टी के अध्यक्ष बने थे और उनके कार्यकाल को बढ़ा दिया गया था। कुछ का कहना है कि पार्टी दक्षिण भारत से अगला अध्यक्ष चुन सकती है। कर्नाटक से केंद्रीय मंत्री प्रहलाद जोशी, तेलंगाना के किशन रेड्डी और ओबीसी मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष के. लक्ष्मण सहित कुछ और नाम चर्चा में है। लेकिन, बीच-बीच में उत्तर भारत के भी कुछ नेताओं के नाम की चर्चा हो रही है। चर्चा है कि जो भी होगा, नड्डा जैसा ही होगा।

---

इंडिया

# कोचिंग क्षेत्र में भ्रामक विज्ञापनों की रोकथाम के लिए जागरूकता जरूरी

सुनील बादल
कार्यकारी संपादक

केंद्रीय उपभोक्ता संरक्षण प्राधिकरण (सीसीपीए) के एक आधिकारिक बयान के अनुसार, 'उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम' और 'कोचिंग क्षेत्र में भ्रामक विज्ञापनों की रोकथाम के लिए बनाए गए दिशा-निर्देशों' का उल्लंघन करने के लिए कुछ कोचिंग संस्थानों को नोटिस जारी किया गया है। आईआईटी-जेईई और एनईईटी जैसी परीक्षाओं के पिछले दिनों घोषित परिणामों के बाद सीसीपीए ने पाया कि कोचिंग सेंटर 'कोचिंग क्षेत्र में भ्रामक विज्ञापनों की रोकथाम के लिए दिशा-निर्देश, 2024' का पालन नहीं कर रहे हैं।एक समय था जब किसी बड़े बुजुर्ग या सम्मानित व्यक्ति की कही हुई बात पर हर आम या खास लोग विश्वास करते थे और यही विज्ञापन या पीआर एजेंसियों की पूंजी होती है जिसे वे अपनी सुविधा और आवश्यकता के हिसाब से खर्च करते हैं या कहें बड़े नामों या सेलेब्रिटी से कहला कर भुनाते हैं। उपभोक्तावाद और आक्रामक बाजारवाद के दौर में जब बैंक के ऋण और बच्चों की शिक्षा तक को उत्पाद माना जा रहा है तो ग्राहकों को लुभाने के लिए अतिशयोक्ति ही नहीं झूठ तक का सहारा लिया जा रहा है जो चिंता की बात है। अधिकांश भोली भाली जनता सोशल मीडिया या विज्ञापनों में किसी नामी गिरामी हस्ती की कही हुई बात को सच मान लेती है जबकि उन्हें पता भी नहीं होता कि मोटी रकम देकर वे बातें कहलाई जाती हैं जो लिखी हुई स्क्रिप्ट होती है न कि व्यक्तिगत अनुभव। जैसे एक गुटका का विज्ञापन तीन बड़े फिल्म स्टार करते हैं जो स्वयं उसका सेवन नहीं करते। इस अंधी दौड़ में जब निजी शिक्षण संस्थान और कोचिंग इस्टिट्यूट शामिल हो गए तो गला काट स्पर्धा में बात झूठ तक पहुंच गई। किसी सफल प्रतियोगी को अपना पूर्व विद्यार्थी बताकर विज्ञापन देने में एक बार बहुत हास्यास्पद स्थिति उत्पन्न हो गई थी जब अनेक प्रमुख समाचार पत्रों में सभी बड़े कोचिंग संस्थानों ने विज्ञापन दिए जिसमें सभी टॉपर को सभी ने अपना बताया था। इसपर बहुत चर्चा हुई थी । केंद्र सरकार ने इसपर रोक के लिए दिशानिर्देश बनाने की पहल की है। उपभोक्ता संरक्षण नियामक सीसीपीए ने कोचिंग क्षेत्र में भ्रामक विज्ञापनों की रोकथाम के लिए दिशानिर्देशों के मसौदे पर 16 मार्च तक सार्वजनिक टिप्पणियां मांगी हैं। एक आधिकारिक बयान में कहा गया है कि केंद्रीय उपभोक्ता संरक्षण प्राधिकरण (सीसीपीए) ने कोचिंग संस्थानों, कानून फर्मों, सरकार और स्वैच्छिक उपभोक्ता संगठनों सहित सभी हितधारकों के साथ विस्तृत विचार-विमर्श के बाद मसौदा दिशानिर्देश तैयार किए हैं। मसौदा 'कोचिंग' को परिभाषित करता है और ऐसी स्थितियां बताता है जो भ्रामक विज्ञापनों के अंतर्गत आती हैं। उदाहरण के लिए, कोचिंग संस्थानों को सफल उम्मीदवार द्वारा चुने गए पाठ्यक्रम की अवधि, पाठ्यक्रम के नाम (चाहे मुफ्त हो या भुगतान) या किसी अन्य महत्वपूर्ण जानकारी जो उपभोक्ताओं के उनकी सेवाओं को चुनने के निर्णय को प्रभावित कर सकती है, छिपाने की अनुमति नहीं है। कोचिंग संस्थान को बिना सत्यापित सबूत के किसी भी प्रतियोगी परीक्षा में छात्रों की सफलता दर, चयन की संख्या या रैंकिंग के संबंध में झूठे दावे करने से बचना चाहिए। कोचिंग संस्थानों को छात्रों के व्यक्तिगत प्रयासों को स्वीकार किए बिना, ऐसा नहीं दिखाना चाहिए कि छात्रों की सफलता के लिए पूरी तरह से कोचिंग जिम्मेदार है। अन्य शर्तों के अलावा, सीसीपीए ने कहा कि कोचिंग सेंटरों को छात्रों की सफलता में कोचिंग की भागीदारी की सीमा को स्पष्ट रूप से बताना चाहिए। कोचिंग संस्थानों को छात्रों और अभिभावकों में यह झूठी भावना नहीं भरनी चाहिए कि कोचिंग की सख्त जरूरत है या इसके बिना छात्र सफल नहीं हो सकता। कोचिंग संस्थानों को किसी भी ऐसे काम में संलग्न नहीं होना चाहिए जो उपभोक्ताओं को गुमराह कर सकता है या उपभोक्ता की स्वायत्तता और पसंद को नष्ट कर सकता है। सीसीपीए ने कहा कि दिशानिर्देशों का उद्देश्य उपभोक्ताओं को कोचिंग क्षेत्र में भ्रामक विज्ञापनों से बचाना है और यह कोचिंग में लगे प्रत्येक व्यक्ति पर लागू होगा। कोचिंग क्षेत्र द्वारा भ्रामक विज्ञापनों को उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम, 2019 के अनुसार नियंत्रित किया जाएगा और प्रस्तावित दिशानिर्देश हितधारकों में स्पष्टता लाएंगे और उपभोक्ता हितों की रक्षा करेंगे। कोटा या अन्य स्थानों में ऐसे भ्रामक विज्ञापनों को सच मानकर जो अभिभावक अपने औसत बच्चों को टॉपर बनाने का सपना देखते हैं या बच्चों पर अनुचित दबाव बनाते हैं उसे रोकने में शायद यह प्रयास काम आए। झारखंड में भी लगभग सभी कोचिंग संस्थान सार्वजनिक संस्थानों में बड़ेझबड़े होर्डिंग लगाते हैं जिसमें शत शत प्रतिशत नंबर तक का दावा किया जाता है जबकि चालाकी से किसी में भी लिखा नहीं रहता कि किस वर्ष में वे पढ़ते थे । कई कोचिंग संस्थान बढ़ा चढ़ाकर अपना प्रचार कराते हैं जबकि केंद्र सरकार के निर्देशों का खुला उल्लंघन करते हैं।

# जपला में सोन नदी पर बनेगा पुल वाराणसी से अयोध्या जाना होगा आसान

**नवीन मेल संवाददाता**

**हुसैनाबाद।** पलामू जिले के हुसैनाबाद की तस्वीर जल्द बदलने वाली है। यहां से वाराणसी और अयोध्या जाना आसान हो जाएगा। बताते चलें कि जपला में सोन नदी पर पुल बनने की सैद्धांतिक सहमति बन चुकी है। क्रियान्वयन की दिशा में काम के लिए स्वीकृति मिलना शेष है। पलामू के सांसद विष्णु दयाल राम ने बताया कि केंद्रीय सड़क परिवहन व राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने सहमति दे दी है। पुल पलामू जिले के हुसैनाबाद प्रखंड के देवरी कला, रोहतास (बिहार) जिले के नौहट्टा प्रखंड के देवीपुर गांव के बीच प्रस्तावित है। इस पुल के निर्माण से जपला एनएच-119 से जुड़ जाएगा। इससे पलामू से वाराणसी और अयोध्या जाना आसान हो जाएगा।

# अवैध लकड़ी कारोबार से उजड़ रहे जंगल

**पांकी के कारीमाटी, अंदाग, बीरवीर व पुंडरू के जंगलों में बेखौफ माफिया**

**अनुज प्रसाद**

**पांकी।** पांकी प्रखंड के जंगलों में वर्षों से चल रहा अवैध लकड़ी कारोबार अब भी बेरोकटोक जारी है। कारीमाटी, अंदाग, बीरवीर और पुंडरू के जंगलों से प्रतिदिन बड़े पैमाने पर पेड़ों की कटाई की जा रही है। लकड़ी माफिया रात के अंधेरे से लेकर दिन के उजाले तक पेड़ों को काटकर ट्रैक्टर, पिकअप व अन्य वाहनों पर लादकर उन्हें बाजार में खपाने का काम कर रहे हैं। वन विभाग की निष्क्रियता और जनप्रतिनिधियों की चुप्पी से इन माफियाओं के हौसले बुलंद हैं। शाम होते ही तस्करी का खेल शुरू हो जाता है, जो पूरी रात चलता है।

**पदाधिकारी ने जताई चिंता, जल्द कार्रवाई का दावा :** इस संबंध में कुंदरी वन क्षेत्र पदाधिकारी महेंद्र प्रसाद ने बताया कि उन्हें इस गतिविधि की सूचना मिली है और वे इस पर कार्रवाई के लिए प्रयासरत हैं। उन्होंने कहा कि शीघ्र ही एक विशेष टीम गठित की जाएगी और ग्रामीणों का सहयोग लेकर तस्करों के विरुद्ध अभियान चलाया जाएगा।

**वन विभाग की सतर्कता विफल, माफिया चौकन्ने**

हालाँकि वन विभाग की ओर से कभी-कभार रोकथाम की कोशिशें की जाती हैं, लेकिन माफिया पहले से ही सतर्क रहते हैं। इससे हर बार विभागीय कार्रवाई नाकाम हो जाती है। वन विभाग की तमाम योजनाएं और लाखों की लागत से चलने वाले संरक्षण प्रयास माफियाओं की चालाकी के सामने बेअसर साबित हो रहे हैं।

**सरकार की योजनाएं माफियाओं के आगे बेबस**

सरकार वनों के संरक्षण के लिए करोड़ों की योजनाएं चला रही है, वनपाल सहित क्षेत्रीय कर्मियों की नियुक्ति भी है, फिर भी जमीनी हालात चिंताजनक हैं। जंगलों के लगातार कटने से पर्यावरणीय असंतुलन की आशंका बढ़ गई है।

## न्यूज बॉक्स

### रेलमार्ग से जोड़ने का मुद्दा संसद में उठाउंगा : सांसद

**हरिहरगंज।** हरिहरगंज क्षेत्र को रेल मार्ग से जोड़ने का मुद्दा संसद में उठाउंगा। जो क्षेत्र के विकास के लिए मिल का पत्थर साबित होगा। उक्त बातें चतरा लोकसभा क्षेत्र के सांसद कालीचरण सिंह ने शुक्रवार को गिरिडीह जाने के क्रम में मंडल अध्यक्ष बल्लू बलराम के आवास पर कही। इससे पहले भाजपा कार्यकर्ताओं ने सांसद को अंगवस्त्र देकर स्वागत किया। साथ ही क्षेत्र को रेलमार्ग से जोड़ने का ज्ञापन सौंपा। इस अवसर पर किसान मोर्चा प्रदेश कार्यसमिति सदस्य रामप्यारे उर्फ.मुन्ना विश्वकर्मा,मंडल महामंत्री सन्नी गुप्ता, सांसद प्रतिनिधि अरूण मिश्रा, नथुनी प्रसाद, भीमसेन शर्मा, सोनू जायसवाल,करण राजवीर, कुंदन यादव,विशाल कुमार, अशोक सिंह सहित कई भाजपाई उपस्थित थे।

### सात साल में भी पावर ग्रिड का निर्माण कार्य अधूरा

**नौडीहा।** प्रखंड के मायापुर गांव में बन रहे पावर ग्रिड का काम काफी धीमी गती से होने के कारण सात साल में भी पूरा नही हो सका। बताया जाता है कि पावर ग्रिड का काम वर्ष 2018 में शुरू हुआ था, जबकि आज 2025 हो गया है। उसके बाद भी पावर ग्रिड के काम पूरा नही हो सका। इसके बगल में पावर सब स्टेशन का भी काम साथ में चालू किया गया था, जो नौडीहा प्रखंड में विद्युत आपूर्ति कर रहा है। दोनों काम साथ में चालू किया गया थाी। एक का काम पूरा कर विद्युत आपूर्ति चालू कर दिया गया है। वहीं पावर ग्रिड का काम काफी धीमी गती से किया जा रहा है। कई जगह पर टॉवर भी खड़ा कर दिया गया। धीमी गती से काम होने के कारण आज ग्रामीण बी मोड़ पर निर्भर है। अगर समय पर पूरा कर लिया गया होता तो छतरपुर, हरिहरगंज, नौडीहा प्रखंड में पूर्ण रुप से बिजली की आपूर्ति हो जाता। विभागीगय अधिकारियों का कहना है कि जल्द ही विद्युत आपूर्ति शुरू कर दिया जायेगा। कुछ जगहों पर चार पांच टॉवर खड़ा करना है। कुछ तकनीकी कारण के कमी के कारण भी समय पर ग्रिड से विद्युत आपूर्ति शुरू नहीं पाया है।

### कायस्थ मुहल्ला आंगनबाड़ी केंद्र पर स्वास्थ्य पखवाड़ा का आयोजन

**हुसैनाबाद।** बाल विकास परियोजना अंतर्गत कायस्थ मुहल्ला आंगनबाड़ी केंद्र पर शहरी क्षेत्र की सेविकाओं द्वारा पोषण पखवाड़ा का आयोजन शुक्रवार को किया गया। कार्यक्रम में सेविकाओं द्वारा हरा साग सब्जी व अन्न से विभिन्न प्रकार के व्यंजन बनाकर स्टाल लगाकर उपस्थित गर्भवती महिलाओं,धात्री महिलाओं, किशोरियों व बच्चों को पोषण से संबंधित जानकारी देकर जन सामान्य में पोषण के प्रति जागरूकता व कुपोषण की समस्या से निजात पाने की टिप्स दी गई। मौके पर महिला पर्यवेक्षिका प्रेमलता कुजूर, कांति देवी ने उपस्थित गर्भवती,धात्री महिलाओं, किशोरियों व बच्चों को पोषण युक्त भोजन, एनीमिया,समय पर टीकाकरण,बच्चों को साबुन से हाथ धुलाकर खाना खाने व केंद्र में बच्चों को स्कूल पूर्व शिक्षा के लिये बच्चों को केंद्र में भेजे। मौके पर सेविका पूनम कुमारी, शैल प्रिया, प्रीति शारदा देवी, दमयंती देवी,जहांआरा बेगम, जयंती देवी,कुमुद गुप्ता, सुनीता देवी, सावित्री देवी,चंद्रावती देवी, रमावती देवी, सहायिका ललिता देवी के अलावा गर्भवती महिलाओं में मेघा कुमारी, प्रीति कुमारी, शाहीन हसन,सविता देवी,धात्री महिलाओं में सोनी कुमारी, आरसी बानो, किशोरी खुशबु कुमारी, श्रुति , प्रिया, रिमझीम कुमारी, प्रिंसू कुमारी सहित बड़ी संख्या में बच्चे मौजूद थे।

## एक नजर

### विकास से कोसो दूर डगरा पंचायत के दो गांव

**नौडीहा।** प्रखंड के डगरा पंचायत का रायबार और महुरी सिडहा गांव आज भी विकास के रास्ते से कोसों दूर है। बताया जाता है कि नौडीहा बाजार प्रखंड मुख्यालय से गांव की दूरी 30 किलोमीटर है। प्रधानमंत्री सड़क योजना के तहत बनने वाली सड़क से भी इन गांव में सड़क नहीं बन पाया है। गर्मी के दिनों में इन गांवों में पेयजल के सुविधा में भी कठिनाई होने लगी है। सरकार द्वारा 2002 में सर्व शिक्षा अभियान के तहत स्कूल खोला गया था, जो बाद में बंद कर दिया है गया। गांव डगरा पंचायत मुख्यालय से करीब 7 किलोमीटर दूर है। यह आदिवासी बहुल इलाका है।

### 127 वर्षीय वृद्धा का निधन, शोक

**हरिहरगंज।** नगर पंचायत क्षेत्र के बंजारी मुहल्ला निवासी 127 वर्षीय लक्ष्मी कुंवर का गुरुवार को स्वाभाविक निधन हो गया। इनका अंतिम संस्कार शुक्रवार को बटाने नदी तट पर किया गया। मृतका के ज्येष्ठ पुत्र 80 वर्षीय श्याम नारायण विश्वकर्मा ने मुखाग्नि दी। लोगों का कहना है कि मृतका शहर की सबसे बुजुर्ग महिला थी। वह अपने पीछे छः पुत्रों का भरापूरा परिवार छोड़ गई हैं। मृतका के दाह संस्कार में भाजपा नेता रामप्यारे विश्वकर्मा उर्फ मुन्ना, लक्ष्मी विश्वकर्मा, सोनू विश्वकर्मा, टंटू मिश्रा, राकेश कुमार, संतोष कुमार, विकास कुमार सहित बड़ी संख्या में लोग शामिल हुए।

# ड्रिंक एंड ड्राइव में पुलिस ने दो बाइक किया जब्त

**नवीन मेल संवाददाता**

**हैदरनगर।** पलामू जिला के हैदरनगर थाना क्षेत्र में ड्रंक एंड ड्राइव अभियान के तहत हैदरनगर-जपला व हैदरनगर-मोहम्मदगंज मुख्य पथ पर पुलिस ने छोटे-बड़े वाहनों की जांच की। जिसमें शराब का सेवन कर मुख्य पथ पर चलाते दो बाइक चालक को पकड़ा गया है। प्रशिक्षु आईपीएस सह थाना प्रभारी दिव्यांश शुक्ल ने बताया कि खासकर शराबी चालकों की लापरवाही से कई सड़क दुर्घटनाएं होती है। जिस पर पुलिस लगाम कसने की तैयारी शुरू कर दी है। उन्होंने कहा कि शराब का सेवन कर गाड़ी चलाते कोई भी पकड़े गये तो उन्हें कतई नहीं बख्शा जायेगा। ड्राइव में सदलबल शामिल एसआई अफजल अंसारी ने बताया कि ऐसे चालकों के विरुद्ध लगातार छापेमारी जारी रहेगी। साथ ही उन्होंने शराबी चालकों को चेताया है कि स्वयं नहीं तो दूसरे के जीवन के साथ खतरा पैदा करना कानूनी अपराध है। उन्होंने कहा कि इस अभियान के प्रारंभिक दौर में दो बाइक के चालक को शराब का सेवक कर वाहन चलाते पकड़ा गया है। इनके वाहन को जब्त कर थाना परिसर में लगा दिया गया है। इनके विरुद्ध अग्रेत्तर कार्रवाई के जिला प्रशासन को सूचना दे दी गई है।

# प्रखंड व अंचल की अनियमितता पर पहल नहीं होने से सड़क पर आंदोलन की चेतावनी

**नवीन मेल संवाददाता**

**हैदरनगर।** बीडीसी में मुखिया प्रतिनिधियों की उपेक्षा व प्रशासनिक रोस्टर के मुताबिक पंचायत सचिवालयों में सीओ, राजस्वक कर्मी सहित अन्य कर्मियों की लगातार अनुपस्थिति पर प्रखंड के सभी मुखिया में नाराजगी है। मुखिया संघ के अध्यक्ष संतोष कुमार सिंह की अध्यक्षता में की गई बैठक में कहा गया कि स्थानीय सरकारी अस्पताल में पांच वर्ष से आपातकालीन सेवा मरीजों के बंद रहने से गंभीर रुप से ग्रसित लोगों को जहां-तहां उपयुक्त इलाज के लिये भागदौड़ करना पड़ रहा है। उपाध्यक्ष नाजमा खातून ने कहा कि समस्त मुखिया की ओर बीडीसी के चयनित प्रतिनिधियों को बैठक में साजिश के तहत शामिल नहीं किया जाना गलत है। सचिव सुदर्शन राम ने कहा कि प्रशासनिक रोस्टर के बावजूद किसी पंचायत सचिवालय में सीओ व राजस्वकर्मी की उपस्थिति नहीं होने से आम लोगों की समस्या निपटारा नहीं हो पा रहा है। उन्होंने कहा कि अंचल से किसानों का काम छोड़ अब कृषि मित्रों को ही म्यूटेशन कराने के नाम पर गांवों में दलाली करने को अंचल से भेजा जा रहा है। संयोजक जितेन्द्र सिंह, सोशल मीडिया प्रभारी कमल कुमार, पासवान, शहनाज परवीन रेणु देवी, शारदा देवी, खुशबू कुमारी, अशोक यादव, राजकुमार राम, कुसुम देवी ने कहा कि उनके अंचल के अधिकारी पंचायत सचिवालय में समयानुसार नहीं बैठते हैं। जिससे बाध्य होकर सभी मुखिया ने एकमत से कहा है कि कृषि मित्रों व वर्तमान जल सहिया को तत्काल प्रभाव से हटाने और नये सिरे से चुनाव कराने,

प्रखंड के गृह गांव से पारा शिक्षकों को हटाकर दूरे गांव में 15 दिनों के भीतर पदस्थापित नहीं किया गया तो सड़क पर आंदोलन शुरू किया जायेगा। उन्होंने कहा कि वह विभागीय कार्य से अधिक अपने घरों में ही समय बीताकर सरकारी खजाना को लूटने में लगे हैं। बैठक में शामिल प्रबुद्ध व वरीय सामाजिक कार्यकर्ता नावाजिश खान, सज्जू खान, महेन्द्र राम, राजेश मेहता, इरशाद खान, विरेन्द्र मेहता आदि ने कहा कि बाल विकास परियोजना के पोषण आहार बिल पर मुखिया के हस्ताक्षर का अधिकार हटाने के बाद इसमें लूट मची है। इस विभाग में अधिक मात्रा में खाद्य सामग्री के बिल बनाकर पैसे की निकासी बदस्तूर जारी है। सदस्यों ने चेतावनी देते हुए कहा कि प्रखंड व अंचल कार्यालय की कार्यप्रणाली में एक पखवाड़े के अंदर सुधार नहीं हुआ तो पंचायती राज मंत्री से मिलने के बाद उनका सड़क पर आंदोलन शुरू होगा।

# 30 अप्रैल तक ई-केवाईसी नहीं होने पर स्वत: होगा राशन कार्ड निरस्त : एमओ

**नवीन मेल संवाददाता**

**हैदरनगर।** राशन कार्डधारियों की ई-केवाईसी कराना जटिल समस्या रहने के बावजूद हैदरनगर प्रखंड की आपूर्ति विभाग ने स्थानीय डीलरों से समन्वय बनाकर अब तक बेहतर उपलब्धि हासिल की है। प्रखंड आपूर्ति पदाधिकारी अमरेश कुमार ने बताया कि सरकार के गाइडलाइन के मुताबिक आगामी 30 अप्रैल तक लंबित उपभोक्ताओं का ई-केवाइसी नहीं होने पर स्वतः उनके राशन कार्ड निरस्त हो जायेगा। उन्होंने बताया कि विभागीय आदेशानुसार ई-केवाईसी करने की अंतिम तिथि 30 अप्रैल तक निर्धारित की गई है। ई-पॉश मशीन से सत्यापन नहीं करा पाने वाले उपभोक्ताओं को यथाशीघ्र भविष्य में होने वाली परेशानी से बचने के लिये संबधित डीलर के पास ई-केवाईसी कराने की सलाह दी है। उन्होंने बताया कि इस प्रखंड में कुल राशन कार्डधारी की संख्या 73843 है। उनमें अब तक 53064 कार्डधारी का ई-केवाईसी किया जा चुका है। अब तक ई-केवाईसी कराने से 20779 कार्डधारी वंचित रह गये हैं। इस दौरान 71. 86 प्रतिशत सदस्यों व 92. 73 प्रतिशत कार्डधारी का सफल सत्यापन किया जा चुका है। इस कार्य में अहम योगदान के देने के प्रति इस प्रखंड के डीलर राजाराम साह, संतोष कुमार गुप्ता, अशोक राम, अजय राम, शंकर मेहता, प्रदीप कुमार, मथुरा प्रसाद गुप्ता, कपील देव मेहता, कामता प्रसाद दुबे आदि के प्रति उन्होंने आभार जताया है।

### महुअरी में शिव व बजरंग बली की मूर्ति प्राण प्रतिष्ठ भंडारे के साथ संपन्न

**हुसैनाबाद।** प्रखंड के महुअरी में श्री शिव एवम बजरंग बली की पांच दिनों से चल रहा प्राण प्रतिष्ठा महायज्ञ शुक्रवार को शिव तथा बजरंगबली की प्रतिमा स्थापना के साथ संपन्न हो गया। सुबह यज्ञाचार्य व विद्वानों द्वारा देवी-देवताओं का पूजन किया गया। इसके बाद शिवलिंग, पार्वती, नंदी तथा हनुमानजी की प्रतिमा की प्राण प्रतिष्ठा की गयी हवन व आरती के बाद भंडारे का आयोजन किया गया। भंडारा देर शाम तक चला। जिसमें सैकड़ों लोगों ने प्रसाद ग्रहण किया। यज्ञ में यजमान के रूप में संतोष सिंह व उनकी पत्नी सरिता देवी शामिल थे। वही जिप उपाध्यक्ष आलोक कुमार सिंह उर्फ टूटू सिंह, समाजसेवी कर्नल संजय सिंह, भाजपा के वरिष्ठ नेता अशोक कुमार सिंह, नगर मंडल अध्यक्ष अजय प्रसाद गुप्ता, श्रवण अग्रवाल समेत काफी संख्या में धर्म प्रेमी श्रद्धालुओं ने कार्यक्रम में शामिल होकर पुण्य के भागी बनें। कार्यक्रम को लेकर पूरे गांव में हर्ष का माहौल रहा।

# लक्ष्य बनाकर किया जा रहा विकास कार्य: विधायक

**नवीन मेल संवाददाता**

**नावाबाजार।** क्षेत्र का समुचित विकास एक मात्र लक्ष्य है, जिसे केंद्रित कर कार्य किए जा रहे हैं। विधानसभा क्षेत्र में विकास योजनाओं की जाल बिछाई जा चुकी है। कोई भी गांव व टोला सड़क विहीन नहीं रहेगा। सिंचाई के क्षेत्र में लक्ष्य बनाकर कार्य किया जा रहा है। इसकी एक पहल सिंचाई विभाग से ग्राम ओदकंडा में रबदा नाला पर पक्का चेकडैम निर्माण कार्य शामिल है। ये बातें विश्रामपुर विधायक नरेश प्रसाद सिंह ने कही। वह गुरुवार को नावाबाजार प्रखंड के ओदकंडा गांव में सिंचाई विभाग की ओर कराए जा रहे नाला पर पक्का चेकडैम निर्माण कार्य के शिलान्यास कार्यक्रम में बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि क्षेत्र सिंचाई के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनेगा। लोगों की आवागमन समस्याओं को देखते हुए क्षेत्र में सड़कों की जाल बिछाई जाएगी। सड़क, शिक्षा, स्वास्थ्य के प्रति लक्ष्य बनाकर कार्य कराया गया है। सिंचाई के क्षेत्र में भी अभूतपूर्व कार्य होने जा रहा है। मौके पर राजद जिलाध्यक्ष धनंजय पासवान, सांसद प्रतिनिधि पंकज तिवारी,पूर्व जिला परिषद सदस्य अनूज राम, मीडिया प्रभारी हरिनाथ चंद्रवंशी, बिरु दुबे, राजद प्रखंड अध्यक्ष उपेंद्र चौधरी, मीर वारिस, सांसद प्रतिनिधि पंकज तिवारी, संवेदक प्रिंस कुमार सिंह, इंजीनियर गणेश कुमार, मीर आरिज आलम, अंजनी कुमार सिंह, आलोक सिंह, पिंटू कुमार सिंह, अरुण कुमार सिंह, सुरजू प्रजापति, विकास दुबे, मुकेश कुमार सिंह सहित कई लोग मौजूद थे।

## अनदेखी

# अनुमंडल क्षेत्र पॉलिथीन के जाल में फंसा

# पर्यावरण व मवेशियों के लिए बना खतरा, प्रशासन मौन

**संजय ओझा**

**हुसैनाबाद।** अनुमंडल क्षेत्र के तीनों प्रखंड–हुसैनाबाद, हैदरनगर और मोहम्मदगंज में पॉलिथीन के उपयोग पर सरकारी रोक के बावजूद इसका धड़ल्ले से इस्तेमाल जारी है। बड़े-बड़े प्रतिष्ठानों से लेकर ठेला-खोमचे तक, हर स्तर पर प्लास्टिक थैलियों का खुला प्रयोग देखा जा रहा है। इससे न सिर्फ पर्यावरण संकट में है, बल्कि यह संक्रामक बीमारियों व मवेशियों के लिए भी जानलेवा साबित हो रहा है।

**मवेशी निगल रहे पॉलिथीन, हो रही मौतें :** सड़कों और बाजारों में फेंकी गई प्लास्टिक थैलियों को मवेशी खाना समझकर निगल जाते हैं, जिससे उनकी आंतें जाम हो जाती हैं और कई बार उनकी जान चली जाती है। स्थानीय पशु चिकित्सकों के अनुसार, हर महीने कई मवेशी इस कारण दम तोड़ देते हैं।

**पॉलिथीन से प्रदूषित हो रहे हैं नदी-नाले**

लोग बाजार से सामान खरीदकर पॉलिथीन में ही इधर-उधर फेंक दे रहे हैं। यह कचरा बरसात में नालियों के सहारे बहकर सदाबह, सोन और अन्य स्थानीय नदियों तक पहुंच जाता है, जिससे जलस्रोत प्रदूषित हो रहे हैं। प्लास्टिक कचरे से नालियों में जलजमाव, बदबू और बीमारियों का खतरा बढ़ गया है।

**अभियान असफल, जिम्मेदार खामोश**

प्रशासनिक स्तर पर पूर्व में पॉलिथीन मुक्त अभियान चलाया गया, लेकिन वह केवल औपचारिकता बनकर रह गया। हुसैनाबाद नगर पंचायत, अनुमंडल कार्यालय और पंचायत प्रतिनिधियों की उदासीनता से हालात और बिगड़ गए हैं। हैदरनगर की सदाबह नदी के किनारे व रेलवे गुमटी के पास गड्ढों में पूरे बाजार क्षेत्र का कचरा फेंका जा रहा है, जिससे आसपास बदबू फैली रहती है और राहगीरों का चलना मुश्किल हो जाता है।

**नियम के बावजूद नहीं हो रही सख्ती :** सरकार ने 75 माइक्रॉन से कम मोटाई वाले प्लास्टिक के उपयोग पर पूरी तरह रोक लगा रखी है। झारखंड राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड द्वारा भी समय-समय पर निर्देश जारी किए गए हैं, परंतु हुसैनाबाद अनुमंडल में इन नियमों का पालन नहीं हो रहा।

**समाधान के लिए जरूरी पहल**

प्लास्टिक मुक्त अनुमंडल बनाने की दिशा में प्रशासन को ठोस रणनीति बनानी होगी। साथ ही जन-जागरूकता, सख्त निगरानी और चालान की कार्रवाई आवश्यक है।

# क्षत्रिय विकास परिषद की बैठक में नशामुक्ति पर विचार-विमर्श

**नवीन मेल संवाददाता**

**हुसैनाबाद।** अनुमंडल क्षेत्र के हैदरनगर प्रखंड अंतर्गत ग्राम चेचरिया में राजपूत,क्षत्रिय समाज की बैठक नागेंद्र सिंह की अध्यक्षता में हुई। बैठक में सभी लोगों ने राजपूत समाज के विकास, उत्थान व नशामुक्ति अभियान चलाने के साथ समाज को सशक्तिकरण प्रदान करने पर चर्चा की। साथ ही नए तरीके से समाज को आगे बढ़ाने व संचालित करने के लिए सर्वसम्मति से एक समिति का गठन किया गया। समिति का नाम क्षत्रिय विकास परिषद रखा गया हैं। नई समिति में विभिन्न पदों पर दायित्व सौंपा गया। संरक्षक के रूप में अशोक कुमार सिंह, नागेंद्र प्रसाद सिंह, बल्केश्वर सिंह सेवानिवृत्त शिक्षक, अध्यक्ष धीरेंद्र कुमार सिंह, उपाध्यक्ष ललन प्रसाद सिंह, राजकुमार सिंह, सचिव संजय कुमार सिंह, प्रोफेसर शहीद भगत सिंह, सह सचिव देवेंद्र कुमार सिंह बहेरा गांव निवासी को लोगों ने सर्वसम्मति से चयन किया। नवनियुक्त समिति में विभिन्न बिंदुओं पर चर्चा करते हुए समाज के उत्थान व विकास पर फोकस की गई। आगामी 23 अप्रैल को हैदरनगर चेचरिया में बाबू वीर कुंवर सिंह की जयंती मनाया जाएगा व उसके बाद अनुमंडल परिसर में स्थापित प्रतिमा पर माल्यार्पण भी किया जाएगा। मौके पर झामुमो नेता रामप्रवेश सिंह,पंकज कुमार सिंह, राजा सिंह,अनुज कुमार सिंह,नागेंद्र सिंह समेत कई लोग उपस्थित थे।

### नहीं बनी पक्की सड़क, बरसात में होती है ज्यादा परेशानी

**मोहम्मदगंज।** प्रखंड मुख्यालय के सबसे नजदीकी टोले रामनगर में अभी तक पक्की सड़क नहीं बनी है। ऐसी स्थिति में खासकर, बरसात के दिनों में ग्रामीणों को होने वाली परेशानी को समझा जा सकता है। ग्रामीणों का कहना है कि राज्य की प्रथम पंचायती राज व्यस्था में करीब 100 फीट पीसीसी पथ निर्माण किया गया था। बाद के कार्यकाल में इस मामले में लगातार अनदेखी की जा रही है। जबकि इसी टोले के ग्रामीणों की पहल पर उनके श्रमदान और सहयोग से डेढ किमी कच्ची सड़क बनाई जा चुकी है। जो मुख्य मार्ग और प्रखंड मुख्यालय से दर्जनों पठारी इलाकों के गांवों में आवागमन का महत्वपूर्ण माध्यम बन गया है। अब तो श्रमदान से बनी इस कच्ची सड़क के दिन बहुरने की उम्मीद भी बढ गई है। वर्तमान विधायक संजय कुमार सिंह यादव ने अन्य सड़कों के साथ इसे भी बेहतर तरीके से बनवाने के लिए इसकी लंबाई बढ़ाने के साथ ही मापी भी करवा दी है। मगर, इस सड़क से इस टोले के संपर्क को लेकर कच्ची सड़क के पक्कीकरण की दिशा में उम्मीद की कोई किरण नजर नहीं आई है। ऐसे में 5 से २5 घरों में वृद्धि के साथ २50 से अधिक आबादी वाले इस टोले के ग्रामीणों ने इस कच्ची सड़क का पक्कीकरण कराने की मांग की है।

### बच्चों के बीच प्रतियोगिता का आयोजन

**ऊंटारी रोड़।** प्रखंड क्षेत्र के करकट्टा बाजार के प्रांगण में सरकारी कर्मचारी सहयोग संगठन करकट्टा-जमडीहा के तत्वावधान में करकट्टा-जमडीहा के पढ़ने वाले बच्चों के लिए क्विज प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। अध्यक्षता स्तरोन्नत उच्च विद्यालय करकट्टा के प्रधानाचार्य संजय कुमार ने की। मुख्य अतिथि के रूप में बिनोद पाल मौजूद थे। मंच संचालक लोको पायलट अशोक कुमार मेहता ने किया। कार्यक्रम में जय किशोर, अशोक कुमार राम, डॉक्टर धनंजय मेहता, रविन्द कुमार व ग्रामीण उपस्थित थे। सफल प्रतिभागियों के बीच पुरस्कार वितरण किया गया।

# वक्फ बिल के विरोध में मुस्लिम समाज का जुलूस, समाहरणालय में सौंपा गया ज्ञापन

**● हाथों में काली पट्टी, पोस्टर-बैनर के साथ हजारों लोगों ने जताया विरोध; केंद्र सरकार पर तानाशाही रवैये का आरोप**

**नवीन मेल संवाददाता**

**मेदिनीनगर।** केंद्र सरकार द्वारा लाए गए वक्फ संशोधन विधेयक 2025 के विरोध में शुक्रवार को मेदिनीनगर के मुस्लिम समुदाय ने व्यापक प्रदर्शन किया। शहरी क्षेत्र में स्थित नूरी मस्जिद से समाहरणालय तक पैदल मार्च निकाला गया। प्रदर्शनकारियों ने हाथों में बैनर-पोस्टर और काली पट्टी बांधकर सरकार के खिलाफ जमकर नारेबाजी की।

विरोध जुलूस में 'वक्फ बिल वापस लो', 'हम एक हैं', 'काला कानून नामंजूर' जैसे संदेश लिखे पोस्टर थे। यह जुलूस पहाड़ी मोहल्ला की नूरी मस्जिद से प्रारंभ होकर मदीना मस्जिद, लाल कोठी, छोटी मस्जिद, सतार सेठ चौक, अस्पताल चौक और छह मुहान होते हुए समाहरणालय पहुंचा। वहां उपायुक्त के प्रतिनिधि उप विकास आयुक्त को एक ज्ञापन सौंपा गया। अंजुमन इस्लाहुल मुसलमिन कमेटी पलामू और मोहर्रम इंतेजामिया कमेटी मेदिनीनगर के संयुक्त बैनर तले आयोजित इस प्रदर्शन में जिले के हजारों लोग शामिल हुए।

ज्ञापन में कहा गया है कि केंद्र सरकार ने वक्फ एक्ट 1995 में बिना मुस्लिम समुदाय के विद्वानों, मौलवियों और संगठनों से परामर्श किए जल्दबाजी में संशोधन कर वक्फ एक्ट 2025 बना दिया है, जो असंवैधानिक और तानाशाही है। यह मुसलमानों की धार्मिक स्वतंत्रता और मौलिक अधिकारों का उल्लंघन करता है।

ज्ञापन में यह भी उल्लेख किया गया कि देश और राज्य की अधिकांश वक्फ संपत्तियां–जैसे मस्जिद, मदरसा, ईदगाह, कब्रिस्तान, मजार, खानकाह, मकबरा, मुसाफिरखाना, दुकान, मकान, संस्थान, खेत-खलिहान–मुस्लिम समुदाय द्वारा वर्षों से धार्मिक व सामाजिक कार्यों के लिए वक्फ की गई हैं।

सरकार द्वारा वक्फ संपत्तियों पर अतिक्रमण, अनियमितता और आमदनी की कमी का हवाला देकर नया कानून लाना उचित नहीं है, जबकि 1995 के कानून में ही पर्याप्त प्रावधान हैं। संशोधित एक्ट में गैर-मुस्लिमों को वक्फ बोर्ड का सदस्य बनाए जाने की बात भी मुस्लिम समाज के धार्मिक मामलों में सीधा हस्तक्षेप है।

ज्ञापन में कहा गया कि जब अन्य धर्मों के ट्रस्ट या बोर्ड में केवल उनके अनुयायी ही सदस्य हो सकते हैं, तो मुस्लिम वक्फ बोर्ड में यह हस्तक्षेप स्वीकार नहीं किया जाएगा।

पूर्व मंत्री केएन त्रिपाठी, जिशान खान, मुस्तफा कमाल, इसराइल आजाद, आशिफ राइन, राजा अशरफ, बिट्टू राइन, जाहिद खान, मो. चांद, विक्की राइन, माहताब नूरी, मुन्ना खान, अनवर अंसारी, हाजी ललन, नसीम हैदर, साहबाज आलम, जिम्मी सिद्दीकी, इबरार रिजवी, कलीम अंसारी, फैजल अहमद, अयूब अंसारी, जाफर महबूब, इस्माइल अहमद, मो. गुड्डू अहमद सहित बड़ी संख्या में लोग उपस्थित रहे।

छह माह से परेशान है पीड़ित पक्ष

# फर्जी तरीके से पंजी-2 में छेड़छाड़ कर खानदानी जमीन पर दूसरे के नाम खोला गया डिमांड

**● खाता-प्लॉट में फेरबदल कर जमीन की माप में भी की गई हेराफेरी**

**नवीन मेल संवाददाता**

**तरहसी।** प्रखंड के मंझौली गांव में अंचल कार्यालय की लॉगिन आईडी का दुरुपयोग कर पंजी-2 में फर्जी तरीके से छेड़छाड़ किए जाने का मामला सामने आया है। आरोप है कि खानदानी जमीन का डिमांड गुपचुप तरीके से किसी और के नाम खोल दिया गया है। शिकायत के बावजूद अब तक कोई ठोस कार्रवाई नहीं हुई है, जिससे पीड़ित पक्ष बीते छह महीने से न्याय के लिए चक्कर काट रहा है। प्राप्त जानकारी के अनुसार, मंझौली टू पंचायत अंतर्गत मंझौली गांव में वर्ष 2005 तक प्लॉट संख्या 380, खाता संख्या 1 की 22 एकड़ 62 डिसमिल भूमि सुरेंद्र नारायण और सत्येंद्र नारायण के नाम पर दर्ज थी। हाल ही में उक्त भूमि का डिमांड असमीना बीवी नामक महिला के नाम पर खोल दिया गया है।

इसके साथ ही जमीन की माप में भी हेराफेरी करते हुए 2 एकड़ को 1 एकड़ और 25 डिसमिल को 20 डिसमिल कर रसीद काटी गई है। इस संदर्भ में जब पीड़ित पक्ष अजीत सिंह और अमित कुमार सिंह ने अंचलाधिकारी बागेश्वर राम से शिकायत की, तो उन्होंने कार्रवाई से पल्ला झाड़ते हुए मामला डीसीएलआर कार्यालय के अधीन बता दिया। पीड़ितों का कहना है कि जब जमीन पहले से उनके परिजनों के नाम पर दर्ज थी, तो डिमांड असमीना बीवी के नाम पर कैसे खोल दी गई? असमीना बीवी को तीन बार नोटिस भेजे जाने के बावजूद वह सुनवाई में उपस्थित नहीं हुईं, फिर भी अंचल कार्यालय ने अब तक कोई कार्रवाई नहीं की। इस संबंध में सीओ बालेश्वर राम ने बताया कि मामला पहले से लंबित है और इसकी सुनवाई प्रक्रिया में है। अगली तिथि पर उचित निर्णय ले लिया जाएगा। साथ ही उन्होंने सुझाव दिया कि पीड़ित पक्ष चाहें तो डीसीएलआर कार्यालय में भी अपील कर सकते हैं।

# ग्रामीणों ने लगाया मुख्यमंत्री ग्राम सड़क योजना में भारी अनियमितता का आरोप

**नवीन मेल संवाददाता**

**हैदरनगर।** प्रखंड क्षेत्र के ग्राम चौकड़ी में मुख्यमंत्री ग्राम सड़क योजना से पथ की सुदृढ़ीकरण कार्य में भारी गड़बड़ी किये जाने का आरोप ग्रामीणों ने लगाया है। उन्होंने कहा कि उक्त पथ जपला - मोहम्मदगंज पथ से चौकड़ी तक सड़क का निर्माण कार्य चल रहा है। किन्तु प्राक्कलन मुताबिक कार्य नहीं होने पर इसके अनियमिताओं की जांच कराने की मांग उपायुक्त से की है। उन्होंने कहा कि इसके निर्माण में किसी भी साम्रग्री की गुणवता नहीं है। जिससे हफ्ते के भीतर ही गांव में कराई गई पीसीसी पर धूल उड़ने के अलावा मेटल ढलाई से उपर आ गये हैं। साथ में ढलाई में मेटल चिप्स के स्थान पर इसके डस्ट का प्रयोग किया गया है। बीच मार्ग में निमार्णाधीन पुल -पुलिया की भी हालात ऐसी ही है। ग्रामीणों का कहना है कि पीसीसी कराये जाने के बाद एक बार भी पानी का छिड़काव नहीं कराया गया है। जिसे इसके मजबूतीपर भी सवाल खड़ा होने लगा है। नीतीश पाठक, रोहित पाठक, मिथलेश पाठक, प्रभु चंद्रवंशी, परमानंद पाठक, नीरज लाल, रामेश्वर राम सहित अन्य ग्रामीणों ने ग्रामीण कार्य विभाग के कार्यपालक अभियंता से निर्माण कार्य की गुणवत्ता की जांच करने व संबंधित संवेदक के विरुद्ध सख्त कार्रवाई करने मांग की है।

# शहरी क्षेत्र में विकराल होता पेयजल संकट, सेकेंड फेज पाइपलाइन परियोजना की रफ्तार धीमी

**▸▸ जुडको की 172 करोड़ की योजना अधर में, युवा समाजसेवी बोले–कोयल पर बांध बने बिना स्थायी समाधान संभव नहीं**

**नवीन मेल संवाददाता**

**मेदिनीनगर।** मेदिनीनगर नगर निगम क्षेत्र में पेयजल संकट अब विकराल रूप ले चुका है। शहर के कई वार्डों में गर्मी के दिनों में पानी की बूंद-बूंद के लिए हाहाकार मचा है, जबकि सरकार की बहुप्रतीक्षित सेकेंड फेज पाइपलाइन परियोजना रफ्तार पकड़ने में नाकाम साबित हो रही है।

जुडको द्वारा 172 करोड़ रुपये की लागत से चल रही इस परियोजना का उद्देश्य 412 किलोमीटर क्षेत्र में पाइपलाइन बिछाकर नगर क्षेत्र को पेयजल उपलब्ध कराना है, लेकिन अब तक सिर्फ 212 किलोमीटर क्षेत्र का ही टेंडर हुआ है। शेष क्षेत्र को लेकर न तो स्पष्टता है और न ही कोई कार्ययोजना सामने आई है। इस योजना की समयसीमा मार्च 2026 तय की गई है, लेकिन अब तक की प्रगति को देखते हुए यह लक्ष्य मुश्किल नजर आ रहा है। पंपु कल में बन रहे 37 एमएलडी के इंटेक वेल और चार जल टंकियों में से एक के लिए तो अब तक भूमि भी चिह्नित नहीं हुई है। नगर निगम द्वारा भूमि उपलब्ध नहीं कराए जाने से कार्य अटका हुआ है। निगम क्षेत्र के नव जोड़े गए वार्ड–जैसे 1, 2, 3, 9, 10 आदि–को इस योजना से वंचित रखा गया है। यहां पीएचईडी द्वारा कार्य कराने की बात कही जा रही है, लेकिन बीते वर्षों से निमिया जलापूर्ति योजना और अन्य प्रयास केवल कागजों तक सीमित हैं।

इसी संकट के मद्देनजर सामाजिक कार्यकर्ता सह भाजपा नेता आशीष भारद्वाज ने सोमवार को जुडको द्वारा किए जा रहे सेकेंड फेज पाइपलाइन कार्य का स्थलीय निरीक्षण किया। उन्होंने हाउसिंग कॉलोनी स्थित जुडको कार्यालय जाकर अधिकारियों से परियोजना की जानकारी ली और कार्य की धीमी रफ्तार पर चिंता जताई। भारद्वाज ने बताया कि बीते वर्ष उन्होंने 'पानी यात्रा' के माध्यम से जनजागरण किया था और सरकार को ज्ञापन सौंपकर इस परियोजना की मांग रखी थी। उन्होंने स्पष्ट कहा कि जब तक कोयल नदी पर बांध बनाकर जलसंचय नहीं किया जाएगा, तब तक पेयजल संकट का स्थायी समाधान संभव नहीं। उन्होंने कहा कि नगर निगम और जुडको की लापरवाही के कारण योजना अधर में है। शहर हमारा है, लोग हमारे हैं, और हम उन्हें भगवान भरोसे नहीं छोड़ सकते। हर स्तर पर संघर्ष करेंगे ताकि हर घर तक पानी पहुंचे। इस दौरान विहान पांडेय, सूरज सिंह, प्रभात सिंह, रिशु दुबे, आकाश विश्वकर्मा, राहुल गुप्ता सहित कई लोग मौजूद रहे।

# गुड फ्राइडे पर गिरजाघरों में क्रूस उपासना व प्रार्थना, यीशु के प्रेम व त्याग का स्मरण

**▸▸ शांति की महारानी गिरजाघर, यूनियन चर्च और सीएनआई चर्च में श्रद्धा से मनाया गया पर्व, सामूहिक गीतों से गूंजे चर्च**

**नवीन मेल संवाददाता**

**मेदिनीनगर।** गुड फ्राइडे का पर्व शुक्रवार को शांति और आस्था के साथ मेदिनीनगर के विभिन्न गिरजाघरों में मनाया गया। शांति की महारानी गिरजाघर, यूनियन चर्च और सीएनआई चर्च, रेड़मा में क्रूस उपासना, प्रार्थना सभा और विशेष आराधना आयोजित की गई।

अपराह्न करीब 2:30 बजे शांति की महारानी गिरजाघर में गुड फ्राइडे की आराधना शुरू हुई। मुख्य अनुष्ठाता पल्ली पुरोहित फादर अरविंद मुंडा ने क्रूस उपासना और अन्य धर्म विधियों का संचालन किया। उन्हें फादर संजय गिद्ध, फादर अजय मिंज, जॉर्ज तिग्गा, संतोष, अनीस हांसदा, रौशन, यशवीर और सेबेस्टियन ने सहयोग दिया। फादर अरविंद मुंडा ने अपने प्रवचन में कहा कि क्रूस मार्ग पर चलते हुए यीशु खीस्त ने जो सात वचन कहे, वे आज भी प्रासंगिक और अमर हैं। उन्होंने प्रेम, त्याग और विश्व बंधुत्व का संदेश देते हुए समाज के जरूरतमंदों की सेवा करने का आह्वान किया। इस अवसर पर मसीहियों ने भक्ति गीत प्रस्तुत किए, जिनमें 'जो क्रूस पर कुर्बान है, वो मेरा मसीहा है, हर जख्म जो है वह मेरे गुनाह का है' जैसे गीत शामिल थे।

**यूनियन चर्च में गुड फ्राइडे आराधना :** यूनियन चर्च में भी गुड फ्राइडे पर विशेष आराधना हुई। इसमें डॉ. नीलम होरो, अभिषेक मसीह, शशि मिंज, विल्सन सहित बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित रहे। पादरी प्रभु रंजन मसीह और अन्य वक्ताओं ने प्रभु यीशु के क्रूस पर कहे गए सात वचनों पर प्रकाश डाला। वक्ताओं ने बताया कि इसी दिन येरूशलम में प्रभु यीशु मसीह को क्रूस पर चढ़ाया गया था। उस दौरान आकाश में अंधकार छा गया और अनेक चमत्कारी घटनाएं घटित हुईं। क्रूस पर से यीशु ने कहा था– 'हे ईश्वर! इन्हें क्षमा कर, क्योंकि ये नहीं जानते कि ये क्या कर रहे हैं।' उन्होंने बताया कि यीशु ने अपने सात वचनों के माध्यम से क्षमा, स्वर्ग का आश्वासन, ममता, प्यास, परित्याग, पूर्णता और आत्मसमर्पण का संदेश दिया। सामूहिक रूप से गीतों के माध्यम से इन भावनाओं को श्रद्धालुओं ने प्रकट किया।

# सहकारिता विभाग के राष्ट्रीय प्रशिक्षण में शामिल होंगे एफपीओ अध्यक्ष विवेकानंद

**● चंडीगढ़ में 21 से 25 अप्रैल तक होगा एशियाई स्तर का एनईडीएसी प्रशिक्षण**

**● झारखंड से दो प्रतिभागियों का चयन**

**नवीन मेल संवाददाता**

**मेदिनीनगर।** भारत सरकार के सहकारिता विभाग की ओर से आगामी 21 से 25 अप्रैल तक चंडीगढ़ में आयोजित होने वाले एशिया महाद्वीप स्तरीय एनईडीएसी प्रशिक्षण कार्यक्रम में पलामू के स्वावलंबी सहकारी समिति लिमिटेड के एफपीओ अध्यक्ष विवेकानंद त्रिपाठी भाग लेंगे। झारखंड से चयनित प्रतिभागियों में उनके साथ बोकारो जिले के चंद्रपुरा प्रखंड स्थित कृषक उत्पादन सहकारी समिति के सीईओ अनिल कुमार महतो का भी चयन हुआ है।

विवेकानंद त्रिपाठी ने जानकारी दी कि इस प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य कृषि पद्धतियों को आधुनिक बनाना और सहकारी समितियों के लाभ में वृद्धि के लिए नवीन समाधानों की खोज करना है। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम एशियाई स्तर पर सहकारी क्षेत्र की दक्षता को बढ़ाने और नवाचार को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से आयोजित किया जा रहा है।

# आठ साल बाद भी नहीं चालू हो सका बस पड़ाव

फाइल फोटो

**नवीन मेल संवाददाता**

**मोहम्मदगंज।** स्थानीय रविवारीय साप्ताहिक बाजार के समीप जिला परिषद के दूसरे कार्यकाल में बना बस पड़ाव अबतक चालू नहीं किया गया है। जबकि इसके निर्माण का काम लगभग पूरा कर दिया गया है। बताया जाता है कि 50 लाख से अधिक की लागत से इसका निर्माण कराया गया है। लोगों का कहना है कि इसका उपयोग शुरू करने से इस क्षेत्र के आसपास के बाजार का विकास होने के साथ ही मुसाफिरों के लिए एक निश्चित ठिकाना हो सकता है। मगर इसकी सुधि नहीं ली जा रही है।

### शादी और सभा के काम आ रहा भवन

इसका उपयोग शादी-विवाह जैसे मांगलिक कार्यों और सभा-बैठकों के लिए किया जाता है। जिससे इसके निर्माण की उपयोगिता और सार्थकता पूरी होती है। मगर जिस उद्देश्य से इसका निर्माण कराया गया है, उसकी पूर्ति होती नजर नहीं आती है। जबकि रेलवे स्टेशन और मुख्य सड़क से जुड़े होने की स्थिति में बड़ी-छोटी सवारी गाड़ियों के आवागमन की वजह से अंतरराज्यीय बस पड़ाव के रूप में उपयोगी साबित हो सकती है। वाहनों के जहां-तहां ठहराव से सड़कों पर अव्यवस्था और जाम की स्थिति निजात मिल सकता है। लोगों का कहना है कि जब इस बस पड़ाव का निर्माण किया जा रहा था, तो आसपास के दुकानदारों को इसके चालू होने से उनकी रोजी-रोजगार की गारंटी की उम्मीद जगी थी। जिस पर अब पानी फिरती नजर आने लगी।

# एकाग्रता व निरंतरता ही सफलता की कुंजी : आईजी

**● जीवन के शीर्ष तक पहुंचने का सूत्र लेकर संत मरियम पहुंचे आईजी सुनील भास्कर**

**नवीन मेल संवाददाता**

**मेदिनीनगर।** पलामू प्रमंडल के उत्कृष्ट आवासीय विद्यालय संत मरियम में शिक्षा, संस्कार, समाज और सुरक्षा विषयों को लेकर संध्या में संस्कारशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ पलामू के पुलिस महानिरीक्षक सुनील भास्कर, विद्यालय चेयरमैन अविनाश देव, प्राचार्य कुमार आदर्श और उप प्राचार्य एस. बी. साहा ने दीप प्रज्वलित कर किया। मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित पुलिस महानिरीक्षक सुनील भास्कर ने छात्रों से संवाद करते हुए उन्हें जीवन में शीर्ष तक पहुंचने का सूत्र बताया। उन्होंने कहा कि आज के विद्यार्थी उन्नत प्रौद्योगिकी के साथ गुरुकुल पद्धति से शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। उनके पास सुविधाएं, श्रेष्ठ शिक्षक और मार्गदर्शक हैं। जरूरत है केवल एकाग्रता और निरंतरता के साथ अध्ययन करने की।

उन्होंने कहा कि शिक्षा का उद्देश्य केवल डॉक्टर, इंजीनियर या अधिकारी बनना ही नहीं, बल्कि किसी भी क्षेत्र में उत्कृष्टता हासिल कर समाज और देश की सेवा करना होना चाहिए। अपने अनुभव साझा करते हुए उन्होंने विद्यार्थियों को प्रेरित किया कि वे अभी से अपने सपनों को दिशा दें ताकि समय आने पर अपने हौसलों की उड़ान भर सकें। संस्कारशाला के दौरान उन्होंने कई छात्रों से संवाद कर उनके सपनों को जाना और उन्हें आगे बढ़ने के लिए मार्गदर्शन दिया। विद्यालय के चेयरमैन अविनाश देव ने आईजी सुनील भास्कर का आभार जताते हुए कहा कि छात्रावासी बच्चे हमेशा किसी वरिष्ठ अधिकारी से मिलने को उत्सुक रहते हैं। ऐसे में भास्कर जी का आगमन उनके लिए प्रेरणादायक सिद्ध हुआ। चेयरमैन ने अंगवस्त्र व पुष्पगुच्छ भेंट कर उनका स्वागत किया। इस अवसर पर छात्रावास अधीक्षक उत्कर्ष देव, प्रवीण दुबे, विकास विश्वकर्मा, श्याम किशोर पांडेय, मेंटर्स एडुसर्व शैक्षणिक संस्थान के शिक्षकगण, विद्यालय के समस्त शिक्षक और सैकड़ों छात्र उपस्थित थे।

# नाली निर्माण नहीं होने से हो रही परेशानी

**सिमरिया।** प्रखंड अंतर्गत कुट्टी रंगनिया गांव में एक महीने से नाली निर्माण को लेकर खोदा गया गडढ़ा दुर्घटना का कारण बना हुआ है। इस गड्ढे में कई ग्रामीणऔर जानवर गिर कर चोटिल हो चुके हैं। संवेदक के लापरवाही के कारण निर्माण कार्य शुरू नहीं हो सका है। ग्रामीणों का कहना है कि अगर नाली का निर्माण कार्य नहीं करवाना था तो संवेदक गड्ढा कर कर क्यों छोड़ा है। अगर निर्माण कार्य नहीं शुरू करवाया गया तो कई लोगऔर जानवर चोटिल हो सकते हैं।

# महिलाओं को मिला मशरूम उत्पादन का प्रशिक्षण

**सिमरिया (चतरा)।** सिमरिया प्रखंड के सेरनदाग में शुक्रवार को सेंट्रल कोलफील्ड लिमिटेड की सी एसआरयोजना अंतर्गत प्रवाह संस्था द्वारा 150 महिलाओं को मशरूम उत्पादन का प्रशिक्षण दिया गया। यह कार्यक्रम प्रवाह संस्था द्वारा संचालित महिला उन्नयन योजना के तहत चतरा जिले के सिमरिया, पथलगड़ा, गिद्धौर प्रखंड मे चलाया जा रहा है। इस योजना का उद्देश्य विशेष रूप से गर्भवती महिलाओं, स्तनपान कराने वाली माताओं, किशोरियों, और कुपोषण से प्रभावित महिलाओं को जागरूक करना है। तथा आत्मनिर्भर बनाना है। कार्यक्रम का शुभारंभ परियोजना प्रबंधक अंकित दुबे तथा रिसोर्स पर्सन शंकर महतो द्वारा किया गया। शंकर महतो ने विभिन्न जानकारी दी। इस दौरान महिलाओं के बीच मिल्की मशरूम का बीज पॉली बैग बांटा गया। कार्यक्रम को सफल बनाने में प्रोजेक्ट मैनेजर, कम्यूनिटी मोबिलाइजर दिवाकर साव, निर्मला कुमारी, मीना कुमारी का विशेष योगदान रहा।

# अनियंत्रित ट्रैक्टर पलटा, चालक की मौत

**नवीन मेल संवाददाता**

**केतार।** केतार थाना क्षेत्र के राजघाटी स्थित आयुष्मान आरोग्य केंद्र के समीप शुक्रवार को अनियंत्रित ट्रैक्टर 20 फीट खाई में गिर जाने से चालक अशोक बैठा (55)गंभीर रूप से घायल हो गया। आनन-फानन में स्थानीय ग्रामीणों ने पुलिस के सहयोग से घायल चालक को टेंपो से सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र भवनाथपुर में इलाज के लिए भर्ती कराया। वहां डॉक्टर शैलेश कुमार ने जांच कर मृत घोषित कर दिया। जानकारी के अनुसार अशोक बैठा अपने गांव नावाडीह से ट्रैक्टर पर भूसा लोड कर राजघाटी के समीप अनलोड कर वापस घर नावाडीह आ रहा था। इस क्रम आयुष्मान आरोग्य मंदिर के समीप मुख्य सड़क पर गड्ढा होने के कारण ट्रैक्टर अनियंत्रित होकर गहरी खाई में गिर गई। घटना के बाद थाना प्रभारी अरूण कुमार रवानी, एसआई आदित्य कुमार घटना स्थल पर पहुंच कर घटना की जानकारी ली। पुलिस ने दुर्घटनाग्रस्त ट्रैक्टर को जेसीबी से बाहर निकाल कर ट्रैक्टर जब्त कर थाना ले गयी। भवनाथपुर थाना के एसआई प्रदीप कुमार उरांव ने अस्पताल पहुंच कर परिजनों से जानकारी ली। शव को पोस्टमार्टम के लिए गढ़वा भेजा। अचानक हुई हृदयविदारक घटना से नावाडीह गांव में मातम पसर गया है। परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल है।

## दो बाइक की टक्कर में तीन घायल

**केतार** केतार-पाचाडुमर मुख्य सड़क पर राजघाटी में गुरुवार की रात दो बाइक की टक्कर में तीन लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। घायला अवस्था में सभी को भवनाथपुर सीएचसी में प्राथमिक उपचार के लिए भर्ती कराया गया। घायलों में केतार थाना क्षेत्र के आमवाडीह गांव निवासी अक्षय विश्वकर्मा, उसका पुत्र आरुष कुमार और साली चांदी कुमारी शामिल हैं। परिजनों ने बताया कि तीनों एक ही बाइक पर किसी काम से केतार गए थे। वापसी के क्रम में विपरीत दिशा से आ रहे रविंद्र यादव की बाइक से टक्कर हो गई। सूचना के बाद केतार थाना की पुलिस घटना स्थल पर पहुंच कर दुर्घटनाग्रस्त बाइक को जब्त किया और घायलों को इलाज के लिए भेजा दिया।

## पिकअप की चपेट में आने से बच्चा घायल

**गढ़वा।** कल्याणपुर गांव स्थित केरवारी अहरा के पास शुक्रवार को पिकअप की चपेट में आने से एक बच्च गंभीर रूप से घायल हो गया। घायल बच्चा कल्याणपुर गांव निवासी सरफुल्ला अंसारी का छह वर्षीय पुत्र जीशान अंसारी है। उसे इलाज के लिए सदर अस्पताल में भर्ती कराया गया है। वहां प्राथमिक उपचार के बाद उसे बेहतर इलाज के लिए सदर अस्पताल गढ़वा रेफर कर दिया। परिजनों ने बताया कि जीशान घर से कुछ दूरी पर ट्यूशन पढ़ने के लिए गया था। वापस लौटने के क्रम में एक पिकअप ने उसे धक्का मार दिया।

## डीएसपी ने पत्नी संग मां चतुर्भुजी भगवती का किया दर्शन-पूजन

**नवीन मेल संवाददाता**

**केतार।** एटीएस रांची में पदस्थापित डीएसपी राजेश कुमार ने अपनी पत्नी के संग शुक्रवार को केतार स्थित मां चतुर्भुजी भगवती मंदिर में दर्शन पूजन कर पूरे राज्य में अमन चैन और खुशहाली की कामना की। उन्होंने पूरे मंदिर परिसर में घूम कर सभी देवी देवताओं की पूजा अर्चना कर हवन कुंड में आहुति दी, इसके पश्चात नारियल फोड़ा।उन्होंने मंदिर परिसर की साफ सफाई और प्राकृतिक सौंदर्य की प्रशंसा करते हुए कहा कि मां चतुर्भुजी के दरबार में आने की बड़े दिनों से लालसा थी, जो पूरी हुई। दर्शन पूजन के बाद मंदिर विकास समिति के द्वारा उन्हें मां चतुर्भुजी भगवती का फोटो और चुनरी भेंट कर उनका स्वागत किया गया। मौके पर मंदिर के पुजारी बाल मुकुंद पाठक, हेमंत पाठक, राम विचार साहू, बिनोद भगत सहित अन्य लोग उपस्थित थे।

## एसडीओ ने वाहन समेत दो डीजे सेट जब्त किया

**नवीन मेल संवाददाता**

**गढ़वा।** अनुमंडल पदाधिकारी संजय कुमार ने अपने क्षेत्र भ्रमण के दौरान मेराल तथा गढ़वा प्रखंड में शुक्रवार को क्रमश दो डीजे वाहनों को पकड़ा। डंडई मेराल मार्ग पर हरदाग मोड़ के पास उन्होंने एक डीजे वाहन को बजते देखा तो रोक कर पूछने पर पता चला कि पेशका में किसी बारात में शामिल होने के लिए जा रहा है। जब डीजे मालिक से डीजे प्रतिबंध की बात बतायी गयी, तब डीजे संचालक ने सकारात्मक जवाब नहीं दे पाया। एसडीओ ने डीजे को उतरवाकर उसी की दुकान में ले जाकर सील कर दिया। साथ ही भविष्य में प्रतिबंधित डीजे नहीं बजाने के संदर्भ में यह लिखित अंडरटेकेन लेकर संचालक को ही चाबी सौंप दी कि बिना उनकी लिखित आदेश पर उक्त ताला नहीं खोलेंगे। इसी प्रकार गढ़वा प्रखंड के झलुआ के निकट एक डीजे वाहन से डीजे सेट उतरवाकर डीजे संचालक के इस लिखित जिम्मेनामा में उसकी ही दुकान में सील करवा दिया। भविष्य में डीजे का उपयोग नहीं करेंगे। डीजे संचालक ने बताया कि उक्त डीजे कल्याणपुर में किसी विनोद गुरुजी के यहां बारात में बजाने के लिए जा रहा था। दोनों संचालकों को स्पष्ट कर दिया गया कि यदि पुनरावृत्ति हुई तो उन पर प्राथमिकी दर्ज करने के साथ वाहन भी जब्त कर पुलिस के सुपुर्द कर दिया जाएगा। एसडीओ ने कहा कि डीजे प्रतिबंध को लेकर प्रशासनिक कड़ाई एवं इतनी जागरुकता के बावजूद भी लोग अभी भी डीजे बजाने से बाज नहीं आ रहे हैं। उन्होंने कहा कि न्यायालय के आदेश के अनुसार किसी भी रूप में प्रतिबंधित डीजे का प्रयोग वर्जित है। इसलिए बारात, जुलूस आदि में डीजे का प्रयोग न करें अन्यथा डीजे जब्त हो सकता है। डीजे बुक करने वालों पर भी कार्रवाई हो सकती है। उन्होंने कहा कि उच्च ध्वनि तीव्रता वाले डीजे न केवल स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से खतरनाक हैं, बल्कि कई बार कानून व्यवस्था की परेशानी और झगड़ा फसाद का भी कारण बनते हैं।

## जिप सदस्य ने एक्सरे मशीन चालू कराने की मांग की

**नवीन मेल संवाददाता**

**भवनाथपुर।** सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में लाखों की लागत से लगा डिजिटल एक्स-रे मशीन अब तक चालू नहीं हो पाई है। इसे लेकर भवनाथपुर जिला परिषद सदस्य रंजनी कुमारी उर्फ रंजनी शर्मा ने मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन को पत्र लिखकर मशीन को शीघ्र चालू कराने की मांग की है। उनके इस पत्र को गंभीरता से लेते हुए मुख्यमंत्री सचिवालय द्वारा तत्काल कार्रवाई करते हुए अपर मुख्य सचिव स्वास्थ्य, चिकित्सा शिक्षा एवं परिवार कल्याण विभाग के अपर मुख्य सचिव को मामले में समुचित कार्रवाई का आग्रह किया है। जिला परिषद सदस्य ने कहा कि भवनाथपुर, खरौंधी, केतार और हरिहरपुर क्षेत्र के हजारों लोगों को सामान्य एक्स रे सेवाओं के लिए गढ़वा या अन्य दूर दराज के स्थानों की ओर जाना पड़ता है, जिससे समय और पैसा दोनों की बर्बादी होती है।

## वाहन की चपेट में आने से घायल

**गढ़वा।** गढ़वा-मझिआंव मार्ग पर शहर के अशोक सिनेमा हॉल के पास अज्ञात वाहन की चपेट में आने से एक व्यक्ति गंभीर रूप से घायल हो गया। घायल सदर थाना के सुखबाना गांव निवासी रामेश्वर सोनी को इलाज के लिए सदर अस्पताल में भर्ती कराया गया है। परिजनों ने बताया कि रामेश्वर अपने घर से सुबह बादाम बेचने के लिए बाजार समिति की ओर निकला था। लौटने के क्रम में एक टेंपो ने धक्का मार दिया। घटना के बाद पुलिस ने उसे सदर अस्पताल गढ़वा में ईलाज के लिए भर्ती कराया है।

## पुलिस ने सहायक शिक्षक को किया गिरफ्तार,भेजा जेल

**नवीन मेल संवाददाता**

**भंडरिया।** प्रखंड के करचाली गांव निवासी सह नव प्राथमिक विद्यालय चिरैयाटांड़ के सहायक शिक्षक हसनैन अंसारी को गिरफ्तार कर पुलिस ने जेल भेज दिया है। यह जानकारी थाना प्रभारी सह इस्पेक्टर अभिजीत गौतम मिश्रा ने दी। बताया कि दिसंबर महीने में करचाली पंचायत के मुखिया मोनिका खलखो ने भंडरिया थाना में लिखित आवेदन देकर शिकायत की थी कि विभागीय आदेश के आलोक में वह ग्रामीणों के साथ पंचायत भवन में विशेष ग्रामसभा कर रही थी। इस दौरान वह सहायक शिक्षक पंचायत भवन पहुंच कर मुखिया पर नियम के विरोध में काम करने का दबाव बनाने लगे। इनकार करने पर मुखिया के साथ गाली गलौज, मारपीट के साथ छेड़छाड़ करते हुए ग्राम सभा पंजी फाड़ कर फेंक दिया। बाद में पंचायत भवन में उपस्थित लोगों ने मुखिया को बचाया। इसके बाद पुलिस ने छेड़छाड़ के अलावा सरकारी दस्तावेज फाड़कर फेंकने से संबंधित विभिन्न धाराओं के तहत मामला दर्ज किया था। आरोपी की गिरफ्तारी को लेकर लागतार छापेमारी अभियान चलाया जा रहा था। इसी बीच पुलिस ने उसे गिरफ्तार जेल भेज दिया है।

## डीएवी भवनाथुर में एनसीसी में 50 छात्राओं का चयन किया

**नवीन मेल संवाददाता**

**भवनाथपुर।** डीएवी शताब्दी पब्लिक स्कूल भवनाथपुर में एनसीसी की ट्रेनिंग के लिए डालटनगंज से आए एनसीसी के अधिकारी पवन कुमार और गोकुल कुमार को विद्यालय मुख्य द्वार पर तिलक चंदन और पुष्प गुच्छ देखकर स्वागत किया गया। उक्त अधिकारियों की देखरेख में कक्षा आठवीं व नवमी के 33 छात्र व 17 छात्राओं का चयन किया गया। इस चयन के लिए सभी छात्रों को फिजिकल मेडिकल व मौखिक जांच में शामिल होना पड़ा। इसके बाद अधिकारियों ने सभी बच्चों को एनसीसी के विषय में बताया तथा इसके उद्देश्यों पर प्रकाश डाला। राष्ट्र सेवा में एनसीसी की ट्रेनिंग प्राप्त कर चुके छात्र कैसे अपना सहभाग करेंगे या करते हैं। इस विषय पर भी सभी बच्चों को बताया गया। विद्यालय के प्राचार्य राजेंद्र सचदेवा ने कहा कि यह ट्रेनिंग छात्रों के जीवन में अनुशासन व देशभक्ति का भाव स्थापित करेगा। ट्रेनिंग से सभी बच्चों का भविष्य सुनहरा व उज्जवल होगा। छात्र-छात्राओं को प्राचार्य ने ईमानदारी व लगन से इस ट्रेनिंग को करने की सलाह दी। प्राचार्य ने यह भी बताया कि प्रतिवर्ष50 बच्चे इस एनसीसी की यूनिट से ट्रेनिंग प्राप्त करेंगे। विद्यालय की स्थापना से लेकर अब तक एनसीसी या स्काउट जैसी कोई ट्रेनिंग की सुविधा उपलब्ध नहीं हो पाई थी,लेकिन विद्यालय प्रबंधन और वर्तमान प्राचार्य राजेंद्र सचदेवा के अथक प्रयास से एनसीसी यूनिट की स्थापना हुई। इस सत्र से ही बच्चे अपने ही विद्यालय में एनसीसी की ट्रेनिंग प्राप्त कर सकेंगे। बच्चों में एनसीसी के आने से खुशी व उत्साह का माहौल देखा गया। मौके पर विद्यालय के शिक्षक ओम प्रकाश सिंह, जयशंकर तिवारी, अनिल कुमार द्विवेदी, अरुण कुमार सिंह, प्रवीण कुमार पांडेय, संजय कुमार राय, शौकत अली, सूरज कुमार सिंह, संतोष कुमार गुप्ता, लालकमल द्विवेदी,ब्रजेंद्र कुमार सिंह, सुमन्त धर दुबे आदि उपस्थित थे।

## एसडीएम ने बालू उत्खनन के संवेदनशील क्षेत्रों का किया निरीक्षण

### खनन विभाग, सीओ, थाना प्रभारियों को भी सख्ती बरतने का निर्देश

**नवीन मेल संवाददाता**

**गढ़वा।** अनुमंडल पदाधिकारी संजय कुमार ने शुक्रवार को डंडई व मेराल क्षेत्र के बालू उत्खनन संबंधी संवेदनशील इलाकों का औचक निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने बालू घाटों के अलावा अवैध रूप से उत्खनन वाले संभावित इलाकों का दौरा कर महत्वपूर्ण स्थानीय जानकारियां ली। साथ ही सीओ व थाना प्रभारी को त्वरित कार्रवाई का निर्देश दिया। उन्होंने भ्रमण के क्रम में कई जगह बड़ी मात्रा में डंपिंग की हुई बालू देखा। इस संबंध में जिला खाना पदाधिकारी को सूचित कर अवैध डंप बालू का जांच कर सीओ और थाना प्रभारी से समन्वय बनाकर जब्त करने का निर्देश दिया। भ्रमण के क्रम में बालू के अवैध उत्खनन में संलिप्त मिले ट्रैक्टर व ट्रैक्टर चालकों पर कार्रवाई का निर्देश दिया। उन्होंने कहा कि उपायुक्त शेखर जमुआर के नेतृत्व में जिला खनन टास्क फोर्स नियमित रूप से अवैध खनन के मामलों पर निगरानी कर रही है। अवैध खनन की शिकायत प्राप्त होने पर त्वरित कार्रवाई की जा रही हैं। इस क्रम में शिकायत मिलने पर शुक्रवार को उन्होंने सरस्वतिया, दानरो व यूरिया नदी के तटीय क्षेत्रों का दौरा किया।

## फार्मेसी संकाय के नए छात्रों का किया स्वागत

**गढ़वा।** बाबू दिनेश सिंह विश्वविद्यालय के फार्मेसी संकाय में शुक्रवार को नए छात्रों के स्वागत के लिए कार्यक्रम का आयोजन किया गया। उसमें सीनियर छात्रों द्वारा नए प्रवेश छात्रों का स्वागत किया गया। उस दौरान रंगोली, नृत्य, गीत-संगीत सहित अन्य कार्यक्रम आयोजित किए गए। वहीं पूर्व में किए गए स्पोर्टस इवेंट में विजयी छात्रों को पुरस्कृत किया गया। मिस्टर फ्रेशर और मिस फ्रेशर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। मौके पर निर्णायक डॉ अरविंद सिंह, राकेश सिंह, रूपा तिवारी ने मिस्टर फ्रेशर गौरव राज और मिस फ्रेशर रिया सिंह को चुना। कार्यक्रम के दौरान विश्वविद्यालय के कुलाधिपति दिनेश प्रसाद सिंह ने छात्रों का उत्साहवर्द्धन किया। कुलपति प्रोफेसर एमके सिंह ने छात्रों को हमेशा ऐसे ही कार्यक्रम करते रहने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम में सभी संकाय के विभागाध्यक्ष व अध्यापक उपस्थित रहे। फामेर्सी संकाय के प्रधानाध्यापक प्रोफेसर डॉ मनीष दुबे, राहुल कुमार, नेहा दुबे, महेश सिंह, रोहित गुप्ता, शशि भूषण, अंकिता तिवारी, आनंद, अवनीश, अरुण, हिमांशु सहित अन्य मौजूद थे।

## न्यूज बॉक्स

### विधायक अनंत प्रताप व ताहिर अंसारी बने झामुमो केंद्रीय समिति सदस्य

**श्री बंशीधर नगर।** नगर गढ़ परिसर में सगमा प्रखंड के झामुमो कार्यकर्ताओं ने भवनाथपुर विधायक अनंत प्रताप देव व झामुमो नेता ताहीर अंसारी को पार्टी के 13 वें महाधिवेशन में केंद्रीय समिति सदस्य बनाये जाने पर बाबा बंशीधर की तस्वीर, शॉल ओढ़ाकर तथा माला पहनाकर सम्मानित किया। इस अवसर पर नेताओं ने झारखंड मुक्ति मोर्चा के संस्थापक संरक्षक शिबू सोरेन व झामुमो अध्यक्ष हेमंत सोरेन के प्रति आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि पार्टी द्वारा हम लोगों को जो भी दायित्व मिलेगा, हम ईमानदारी पूर्वक उसका निर्वहन करेंगे। सगमा प्रखंड के कार्यकर्ताओं ने विधायक अनंत प्रताप देव व ताहिर अंसारी को बधाई देते हुए पार्टी के केंद्रीय नेतृत्व के प्रति आभार व्यक्त किया है। मौके पर झामुमो के सगमा प्रखंड अध्यक्ष हरिदास यादव,सचिव गोरख विश्वकर्मा, राहत हुसैन, बसंत पाल,नंदू बैठा, ललन उरांव, राजेश यादव,हीराचंद यादव, गोरख विश्वकर्मा, विजय यादव,राकेश पांडेय,मंगलेश यादव,परमानंद यादव, सुरेंद्र बैठा, मनोज बैठा,जयगोपाल यादव,गणेशी बैठा,सुभाष यादव, हजारी यादव, चंद्रिका यादव, घूरन यादव,बिनोद ठाकुर,अशोक चौबे, लोकेंद्र यादव, अशोक मेहता, अहमद अंसारी, स्वदेशी कुशवाहा, रमेश पासवान सहित अन्य लोग उपस्थित थे।

### शिक्षा के क्षेत्र में बेहतर करने वाले शिक्षकों को सम्मानित किया गया

**श्री बंशीधर नगर।** बिरला ओपन माइंडस इंटरनेशनल स्कूल के तत्वावधान में शिक्षा के महत्व को जन-जन तक पहुंचाने के लिये अमहर और रोहिला गांव में एक शैक्षिक जागरूकता बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में ग्रामवासियों ने इस कार्यक्रम में उत्साहपूर्वक भाग लिया और शिक्षा के महत्व को गहराई से समझा। विद्यालय के प्रतिनिधियों ने बताया कि शिक्षा किस प्रकार जीवन को उन्नति के मार्ग पर ले जाती है। बैठक के दौरान उन व्यक्तियों को, जिन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में असाधारण योगदान दिया है,उन्हें शॉल व स्मृति चिह्न भेंट कर सम्मानित किया गया। ग्राम रोहिला में सेवानिवृत्त शिक्षक हेमंत कुमार पाठक, उमाकांत पाठक तथा प्रधानाध्यापक रंजन सिंह को उनके योगदान के लिये शाल और स्मृति चिन्ह भेंट किया गया। बैठक में निर्देशक मनीष कुमार सिंह, मैनेजर युवराज सिंह, प्राचार्य रविश प्रजापति, भावना ओझा, गार्गी जायसवाल, एडमिशन कॉउंसलिंग टीम से पीयूष रंजन, एवं समाज सेवी उमा सिंह शामिल थे।

**जांच** — डीलर पर होगी कार्रवाई, दिए निर्देश

## एसडीएम की जांच में कम राशन देने की पुष्टि

**नवीन मेल संवाददाता**

**गढ़वा।** सदर एसडीएम संजय कुमान ने मेराल प्रखंड के चरका पत्थर पूर्वी के राशन डीलर संजय प्रसाद गुप्ता की राशन दुकान का शुक्रवार को औचक निरीक्षण कर जांच की। जांच के दौरान राशन वितरण का कार्य किया जा रहा था। जब राशन ले चुके लोगों के थैलों व बोरियों को तौलाया गया तो 35 की वजह 33 किलो वजन पाया गया। लाभुकों ने बताया कि उन्हें हर बार 35 के स्थान पर 33 किलों ही दिया जाता है, किंतु डर के चलते वह कहीं नहीं बोलते हैं। जब इस पर राशन डीलर संजय प्रसाद गुप्ता से पूछा गया तो उन्होंने भी स्वीकार किया कि वह एक से दो किलो इसलिए कम देते हैं, क्योंकि उनको गोदाम से ही कम वजन का बोरा मिलता है। राशन डीलर की उक्त बात मौके पर ही झूठी साबित हो गई, जब गोदाम से मिले बोरों को वहीं तौलाया गया। सभी बोरा का वजन लगभग 50.5 किलो (बोरा सहित) पाया गया। इस मामले को एसडीएम ने गंभीरता से लेते हुए राशन डीलर को फटकार लगाई। कहा कि गरीबों के निवाला में सेंध लगाने का मामला क्षमा की परिधि से बाहर है। यह न केवल अनैतिक है बल्कि आपराधिक मामला है। एसडीओ ने बताया कि डीलर के विरुद्ध कार्रवाई करने की अनुशंसा की जा रही है।

### सरकारी शराब दुकान में कीमत पर भड़के एसडीओ

लगातार मिल रही शिकायतों के आलोक में शुक्रवार को सदर एसडीएम संजय कुमार ने मेराल स्थित एक सरकारी शराब दुकान का गोपनीय तरीके से निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान देखा कि दुकान के कर्मी ग्राहकों से बोतल पर मुद्रित दर से 10- 20 रुपए अधिक ले रहे है। उन्होंने खड़े होकर कर्मियों और ग्राहकों के बीच इस अतिरिक्त शुल्क को लेकर नोक-झोंकभी सुनी। उन्होंने दुकान कर्मियों को अपना परिचय देते हुए उनसे पूछा कि वह अतिरिक्त चार्ज क्यों ले रहे हैं और यह अतिरिक्त राशि कहां जाती है। शराब दुकान पर मौजूद कर्मी पवन कुमार, कृष्ण मुरारी दुबे व छोटू गुप्ता ने बताया कि वह केएस प्लेसमेंट कंपनी की ओर से कार्यरत हैं। उक्त राशि वह अपना खर्च निकालने के लिए वसूलते हैं। एसडीएम ने कहा कि वह इस औचक जांच का लिखित प्रतिवेदन दोषियों पर कार्रवाई की अनुशंसा के साथ उपायुक्त व अन्य विभागीय पदाधिकारियों को भी देंगे। एसडीएम ने बताया कि उक्त सरकारी शराब दुकान के बाहर शराब दुकान से संबंधित न कोई बैनर या बोर्ड दिखा और न ही कोई मूल्य तालिका मिली।

## दाल भात केन्द्र कई दिनों से बंद

**नवीन मेल संवाददाता**

**धुरकी।** प्रखंड परिसर में गरीबों व जरूरतमंदों के लिए मुख्यमंत्री दाल-भात योजना संचालित होती थी। यह दाल-भात केंद्र भी कई दिनों से बंद है। इस कारण इस पर आश्रित लोगों की परेशानी बढ़ गयी है। मजबूरीवश लोगों को होटल में जाकर मंहगी थाली का भोजन करना पड़ रहा है। बता दें कि प्रखंड परिसर में संचालित दाल-भात योजना में यात्री, मजदूर, प्रखंड कर्मी, प्रखंड मुख्यालय आने वाले व्यक्ति भी दाल-भात योजना का लाभ लेते हैं, लेकिन इसके बंद होने से गरीबों के भोजन पर आफत है। बताया गया कि हर दिन लगभग 100 व्यक्ति यहां पांच रु में दाल-भात योजना का लाभ लेते थे। अब लोग भोजन के लिए परेशान हो रहे हैं। दरअसल प्रखंड मुख्यालय में भोजन के साथ पानी पर भी आफत है। यहां चार चापानल लगे हैं, पर मरम्मत व देखरेख के अभाव में पानी नहीं दे रहा। इससे गर्मी और तेज धूप में प्रखंड मुख्यालय आने वाले लोगों को काफी परेशानी हो रही है।

### आवंटन के अभाव में केंद्र बंद

इस संबंध में पूछे जाने पर जिला आपूर्ति पदाधिकारी ने कहा कि आवंटन के अभाव में दाल भात केंद्र बंद है। टेंडर की प्रक्रिया शुरू की जा रही हैञ टेंडर होते ही आपूर्तिकर्ता के माध्यम से योजना चालू कर दिया जायेगा।

## 30 तक राशन कार्डधारियों को ई-केवाईसी कराना अनिवार्य

**बारियातू।** प्रखंड के सभी जन वितरण प्रणाली की दुकानों में आइरिश के माध्यम से ई-केवाईसी करने के लिए ई-पॉस मशीन में सॉफ्टवेयर इनस्टॉल कर दिया गया है। वैसे सभी कार्डधारक जिनके परिवार वालों का बॉयोमेट्रिक से केवाईसी नहीं हो पाया है। अब उनका आंख से आइरिश मशीन द्वारा ई-केवाईसी किया जा सकता है। शेष बचे हुए सभी कार्डधारकों से एमओ आशीष रंजन ने कहा कि अविलंब अपने पोषक क्षेत्र के जन वितरण प्रणाली दुकानदार से मिल कर ई-केवाईसी करवा लें।

## करंट की चपेट में आने से गाय की मौत

**महुआडांड़।** खजूरतला पंचायत चैनपुर में शुक्रवार को बिजली तार के करंट के चपेट में आने से एक गाय की मौत हो गई है। गाय जेरोम कुजूर की थी। पिछले साल भी इस जगह तीन और गायों की मौत हुई थी। उसका मुआवजा आज तक बिजली विभाग द्वारा भुगतान नहीं किया गया है। ग्रामीणों ने जल्द मुआवजा भुगतान करने की मांग की है।

# गुड फ्राइडे: प्रभु यीशू को दी गई यातनाओं को याद किया

**- विश्वासियों ने की पवित्र क्रूस की उपासना**

**नवीन मेल संवाददाता**

**चंदवा।** प्रखंड क्षेत्र में शुक्रवार को मसीही विश्वासियों ने गुड फ्राइडे मनाया। इस अवसर पर गिरजाघरों में विशेष आराधना, क्रूस यात्रा व क्रूस उपासना का आयोजन किया गया। क्रूस यात्रा क्रॉस रास्ता संत अन्ना कॉन्वेंट मैदान से निकल कैथोलिक चर्च पहुंच कर समाप्त हुआ। इसमें प्रभु यीशु के दुखःभोग से संबंधित झांकी प्रस्तुत किया गया। क्रूस यात्रा के दौरान प्रभु यीशु को दी गई यातनाओं को याद किया गया। चंदवा स्थित कैथोलिक गिरजाघर में विशेष प्रार्थना सभा का आयोजन किया गया। मुख्य अनुष्ठाता फादर की देखरेख में आराधना,क्रूस यात्रा व क्रूस उपासना की धर्मविधि संपन्न हुई। आराधना में शहर के विभिन्न यूनिट के मसीही विश्वासी शामिल थे। फादर फबियानुस सिंदुरिया ने कहा कि आज का दिन मसीही विश्वासियों के लिए काफी महत्वपूर्ण है। इस दिन प्रभु यीशु को यातनाएं दी गयी थी और सूली पर चढ़ाया गया था। उन्होंने प्रभु यीशु के संदेश को आत्मसात कर समाजहित में काम करने पर बल दिया। कष्टों व समस्याओं का सामना करने के लिए प्रार्थना की। मसीही विश्वासियों ने प्रभु यीशु के दुखभोग को याद कर उनके प्रति अपनी श्रद्धा प्रकट की। मौके पर फादर फबियानुस सिंदुरिया, फादर जोसेफ, फादर अल्फोंस, फादर मार्सल, फादर प्रदीप पन्ना,सुमन सुनील सोरेन, स्टेफन मिंज सहित काफी संख्या में मसीही समाज के लोग उपस्थित

### पवित्र क्रूस रास्ता के साथ गुड फ्राइडे मनाया गया

**महुआडांड़।** चर्च संत जोसेफ पारिष सहित प्रखंड के साले, पकरीपाठ, चीरोपाठ, चेतमा, तुन्दुटोली चर्च में गुड़ फ्राइडे के अवसर पर विशेष प्रार्थना का आयोजन किया गया। चर्च शुरू होने से पूर्व ईसाई समुदाय के लोगों द्वारा पवित्र क्रूस रास्ता का आयोजन किया गया। जिसमें प्रभु यीशु के मरण काल को याद कर 14 स्थानों पर क्रूस के साथ यात्रा कर उसके दुःखभोग को याद किया गया। दुःखभोग के मरण याद करते हुए युवा संघ के द्वारा प्रभु यीशु के मरण की झांकी प्रस्तुत किया गया। क्रूस रास्ता के बाद मुख्य अनुष्ठानकर्ता फादर ने बताया कि आज जब हम पुण्य शुक्रवार को मना रहे हैं। हमें अपना ध्यान क्रूस की ओर केंद्रित करें। क्रूस पर दुःख सहकर प्रभु हमें दुःख तकलीफ सहने के खीस्तीय अर्थ को समझाते हैं। खीस्तीय दृष्टिकोण से कष्ट प्रभु के दुःखभोग के सहभागी बनने का प्रतीक है। इसी कारण कष्ट सहना पुण्य प्रद माना जाता है। प्रभु की प्राणपीढ़ा मानवजाति के प्रति उनके प्रेम का प्रतीक और प्रमाण है। विशेष प्रार्थना में सभी पल्ली वासी के साथ फादर, सिस्टर ने भाग लिया। पुण्य शुक्रवार को प्रार्थना थे।

## पुलिस ने 37 मवेशी लदे कंटेनर को किया जब्त

**नवीन मेल संवाददाता**

**लातेहार।** पुलिस ने शुक्रवार को बड़ी कार्रवाई करते हुए 37 मवेशियों से भरा एक कंटेनर (यूपी 21 बीएन -1119) को जब्त किया है। इसमें 36 बैल और एक गाय लदे थे। पुलिस अधीक्षक कुमार गौरव को गुप्त सूचना मिली थी कि अवैध पशु लदे कंटेनर रांची की ओर जा रही है। इसके बाद होटवाग गांव के पहाड़ी ढाबा के पास वाहन चेकिंग अभियान चलाया गया। इस दौरान पुलिस ने एक कंटेनर को आते देखा। उसे रोककर जांच की गई। जांच में कंटेनर में गौवंशीय पशु लदे थे। पुलिस ने चालक से दस्तावेज की मांग की। लेकिन वह कोई कागजात नहीं दिखा सका। इसके बाद पुलिस ने कंटेनर जब्त कर चालक विनय सिंह को गिरफ्तार कर लिया। उसने बताया कि वाहन उत्तर प्रदेश का है। वह पलामू के सतरबवा से मवेशी लादकर रांची जा रहा था। मवेशियों को कंटेनर से उतारकर खेतों में छोड़ दिया गया है। थाना प्रभारी दुलड़ चौड़े ने बताया कि सूचना के बाद वाहन चेकिंग अभियान चलाया गया। इस दौरान अवैध पशु लदे कंटेनर पकड़ा गया। इसमें 37 मवेशी थे। चालक को गिरफ्तार किया गया है। इसे तस्करी के लिए ले जाया जा रहा था। मामले में आगे की कार्रवाई की जा रही है।

## पेयजल के लिए दर दर भटक रहे ग्रामीण

**नवीन मेल संवाददाता**

**कुंदा (चतरा)।** प्रखंड क्षेत्र के कुंदा पंचायत अंतर्गत मेदवाडीह गांव में लोकनाथ यादव के घर के समीप लगा चापानल लगभग चार महीने से खराब है। ग्रामीणों ने पेयजल विभाग के कर्मचारियों को कई बार सूचित किया, लेकिन कोई कार्रवाई नहीं हुई। चिल्लाती गर्मी में नल जल योजना से लगा नल भी निजी उपयोग के कारण पूरे दिन पानी नहीं आता है, जिसके कारण लगभग दर्जनों घर के ग्रामीणों को पेयजल के लिए भटकना पड़ रहा है। ग्रामीणों ने बताया कि चापानल खराब होने से उन्हें दूर दूर से पानी लाना पड़ रहा है। पेयजल विभाग के प्रति ग्रामीणों में भारी आक्रोश जताया है। उनका कहना है कि विभाग के कर्मचारी अपनी जिम्मेदारियों को गंभीरता से नहीं लेते हैं। ग्रामीणों ने कई बार विभाग को सूचित किया, लेकिन कोई कार्रवाई नहीं हुई। जिससे ग्रामीणों में विभाग के प्रति अविश्वास बढ़ता जा रहा है।

## जेल से छूटे अपराधिक प्रवृत्ति के लोगों पर विशेष नजर रखें : एसपी

**नवीन मेल संवाददाता**

**लातेहार।** एसपी कुमार गौरव की अध्यक्षता में मासिक अपराध गोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए एसपी ने जिले में अपराध नियंत्रण, विधि व्यवस्था को सुदृढ़ बनाना व अनुसंधान प्रणाली को और अधिक प्रभावी बनाने का निर्देश दिया। एसपी ने जेल से छूटे अपराधिक प्रवृत्ति के लोगों पर विशेष नजर रखने की बात कही ताकि वे पुनः आपराधिक गतिविधियों में संलिप्त न हो सकें। उन्होंने सभी थाना प्रभारियों को लंबित मामलों का शीघ्र निष्पादन करने का निर्देश दिया। इसके साथ ही क्षेत्र में कानून व्यवस्था बनाए रखने,असामाजिक तत्वों पर नजर रखने और आम जनता के साथ समन्वय बनाकर कार्य करने पर भी बल दिया। बैठक में पुलिस की सक्रियता बढ़ाने, गश्ती को नियमित करने और सूचना तंत्र को मजबूत करने की दिशा में भी जरूरी निर्देश दिए गए। एसपी ने कहा कि अपराध पर नियंत्रण और शांति व्यवस्था बनाए रखने के लिए पुलिस को संवेदनशीलता और तत्परता के साथ कार्य करने की नसीहत दी। मौके पर एसडीपीओ अरविंद कुमार,डीएसपी विनोद रवानी, डीएसपी भरत राम, प्रशिक्षु आईपीएस प्रदीप कुमार साहू सहित सभी थाना प्रभारी और पिकेट प्रभारी उपस्थित थे।

## दो सड़क हादसे में एक की मौत, एक रेफर

**नवीन मेल संवाददाता**

**बालूमाथ।** पुलिस अनुमंडल क्षेत्र में अंतर्गत दो अलग-अलग सड़क हादसा में एक की मौत हो गई है। दूसरा गंभीर रूप से घायल है। पहली घटना बारियातू थाना क्षेत्र के नचना ग्राम के पास शुक्रवार अहले शाम को घटी है। वहां सकेंद्र भुइयां पिता जग्गू भुइयां का मोटरसाइकिल दुर्घटना में मौत हो गई है। बताया जाता है कि युवक किसी शादी समारोह से निकल कर मोटरसाइकिल से घर जा रहा थे। इस दौरान मोटरसाइकिल अनियंत्रित होकर पेड़ से जा टकराई, जिससे युवक गिर गंभीर रूप से घायल हो गया। उसे बारियातू थाना पुलिस ने अपने वाहन से बेहोशी की अवस्था में बालूमाथ सामुदायिक स्वास्थ्य में भर्ती कराया। वहां डॉक्टर ने उसे मृत घोषित कर दिया। दूसरी घटना बालूमाथ थाना क्षेत्र के मुरपा बड़गांव के पास गुरुवार देर रात को घटी है। वहां बाबूलाल करमाली (60 वर्ष) को किसी अज्ञात वाहन ने धक्का मार देने से वह घायल हो गए। ग्रामीणों की मदद से बालूमाथ सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती कराया गया। वहां डॉक्टरों ने प्राथमिक उपचार कर बेहतर इलाज के लिए रिम्स रेफर कर दिया।

### सड़क दुर्घटना में महिला की मौत

**लातेहार।** जिला मुख्यालय के मेन रोड़ स्थित समाहणालय गेट के पास सड़क दुर्घटना में एक महिला की मौके पर ही मौत हो गई। जानकारी के अनुसार महिला अपने दामाद मनोज कुमार सिंह के साथ गोवा से लातेहार कपड़ा बदलने आ रही थी। इस बीच समाहरणालय गेट के पास सड़क उंच नीच होने के कारण उनका टीवीएस गाड़ी अनियंत्रित हो गया, जिससे महिला सड़क पर गिर गई। पीछे से आ रहे बोरिंग गाड़ी ने महिला को चपेट में ले लिया है, जिससे मौके पर ही उसकी मौत हो गई। मृतक महिला सोबतिया देवी गोवा की रहने वाली है। घटना की सूचना मिलते ही थाना प्रभारी दुलर चौड़े मौके पर पहुंच कर शव को अपने कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए सदर अस्पताल भेज दिया।

## मुखिया के प्रयासों से पंचायत में 10 किमी कच्ची सड़क को बनाया आवागमन के लायक

**नवीन मेल संवाददाता**

**कुंदा (चतरा)।** नवादा पंचायत मुखिया भरत यादव ने अपने पंचायत क्षेत्र में लगभग 10 किलोमीटर कच्ची सड़क को मरम्मत कर नया कृतिमान स्थापित किया है। प्रखंड क्षेत्र में नवादा पंचायत अति सुदूरवर्ती क्षेत्र होने के कारण यहां के दर्जनों गांव के ग्रामीण पक्की सड़क से वंचित थे, जिससे उन्हें आवागमन में कठिनाई होती थी। मुखिया भरत यादव ने ग्रामीणों की आवागमन समस्या को देखते हुए विभाग से पक्की सड़क बनाने की मांग की, लेकिन विभाग के उदासीन रवैया के कारण उन्होंने अपने निजी प्रयास से कच्ची सड़क को मरम्मत करने का निर्णय लिया। मुखिया ने बाचकुम से लेकर मोरसेरवा स्थान तक लगभग डेढ़ किलोमीटर कच्ची सड़क को जेसीबी की सहायता से मरम्मत कर आवागमन युक्त बनाया है। सड़क बनने से ग्रामीणों को सुगम आवागमन की सुविधा उपलब्ध होगी।

## आदमी जनजाति के बच्चे आज भी शिक्षा से कोसों दूर

**मयूरहंड (चतरा)।** जिले के मयूरहंड प्रखंड के करमा में लगभग 40 घर आदिम जनजाति (बिरहोर) परिवार निवास करते हैं। उनके बच्चे आज भी शिक्षा से वंचित हैं। सरकार ने बिरहोर टोला में आंगनबाड़ी केंद्र के अलावा प्राथमिक विद्यालय खोला है। बावजूद बिरहोर परिवार के बच्चे शिक्षा से कोसों दूर हैं। आंगनबाड़ी केंद्र माह में एक दो बार ही खुलता है। इस स्थिति को सुधारने में बाल विकास परियोजना गंभीर है और ना ही प्रखंड विकास पदाधिकारी। आंगनबाड़ी केंद्र में बच्चों को शिक्षा ग्रहण करने से लेकर कुपोषण से बचाव के लिए सरकार द्वारा पोषाहार उपलब्ध कराई जाती है। लेकिन विभाग की निरंकुशता के कारण शिक्षा के साथ पोषाहार से भी बिरहोर परिवार के बच्चे वंचित रह रहे हैं। सरकार के आदेश पर उपायुक्त के निर्देश पर कुछ माह पूर्व एक्शन प्लान के तहत दर्जनों बार शिविर आयोजित किया गया था। उस समय लगा कि अब बिरहोर परिवारों का काया कल्प होगा, परंतु जमीनी हकीकत है कि दो चार आवास, राशनकार्ड,आयुष्मान कार्ड उपलब्ध कराने भर ही सीमित रह गया। आज भी बिरहोर टोला में गंदगी का अंबार लगा होने के साथ अन्य बुनियादी सुविधाओं का घोर अभाव है।

## पश्चिम बंगाल में लोग सुरक्षित नहीं हैं : अर्जुन मुंडा

**नवीन मेल संवाददाता**

**लातेहार।** पूर्व केंद्रीय मंत्री सह झारखंड के पूर्व सीएम अर्जुन मुंडा ने कहा कि पश्चिम बंगाल में लोग सुरक्षित नहीं हैं। अपने आप को असुरक्षित महसूस कर रहे हैं। लोग वहां से पलायन कर रहे हैं। कुछ मिलाकर वहां स्थिति अच्छी नहीं है। लोगों पर हमले हो रहे हैं। राज्य सरकार को इस पर रोक लगानी चाहिए। पूर्व मुख्यमंत्री पलामू में एक कार्यक्रम में भाग ले कर रांची जा रहे थे। इस दौरान भाजपा जिला कार्यालय में उनका स्वागत किया गया। भाजपा जिला अध्यक्ष पंकज कुमार सिंह व अन्य भाजपा नेताओं ने बुके देकर स्वागत किया। उन्होंने भाजपा कार्यालय का निरीक्षण भी किया। भाजपा से पार्टी को विस्तार कर अधिक से अधिक लोगों को जोड़ने की बात कही। वह यहां के मूलभूत सुविधाओं से रूबरू हुए। मौके पर मुकेश कुमार पांडेय, राजीव रंजन पांडेय, शीला देवी, गोविंद प्रसाद, विष्णु देव प्रसाद गुप्ता, नागमणि कुमार, अश्विनी सिंह, उत्तम प्रसाद, राजबली, आलोक कुमार अकेला, पिंटू उरांव, सोनू सिंह व शिल्पा कुमारी समेत कई भाजपा नेता व कार्यकर्ता मौजूद थे।

## चार सौ मच्छरदानी का वितरण

**टंडवा (चतरा)।** आम्रपाली चंद्रगुप्त परियोजना क्षेत्र के बिंगलात में 400 मच्छरदानी का वितरण अर्पिता महिला मंडल द्वारा किया गया। बताया गया कि खासकर गर्मी के दिनों में गंदगी और जल जमाव के कारण मच्छर तेजी से पनपते हैं। मच्छरदानी का प्रयोग मलेरिया, डेंगू, चिकनगुनिया जैसे बीमारियों से बचाव का सुरक्षित उपाय है। मौके पर महिला मंडल की अध्यक्षा प्रियंका सिंह, हसबुन निशा, सुधा पंडित, प्रमिला सिन्हा, प्रीति करारिया, वंदना सिन्हा, रमेश वर्मा, महेश वर्मा समेत अन्य मौजूद थे।

## तार के सहारे झूल रहा बिजली खंभा हादसे को दे रहा आमंत्रण

**बारियातू।** प्रखंड के राजगुरु गोनिया के बीच तार के सहारे बिजली खंभा झूल रहा है। इससे हादसे होने की प्रबल संभवना बन रही है। राजगुरु के पास प्रतिदिन दर्जनों बच्चे पढ़ने आते हैं। दरवाजा से सटे आने जाने वाले मुख्य सड़क के किनारे से बिजली कनेक्शन दिया गया है। बिजली कनेक्शन वाले बिजली खंभा टूटा है। तेज हवा आने के बाद कभी भी बिजली खंभा गिर सकता है। उक्त सड़क से बेसरा, बाराखाड़, नावाडीह, मकरा, झीरमतकोमा, कुशमाहा, भाटचतरा, व सिबला से ग्रामीण प्रतिदिन राजगुरु होतेआते जाते हैं। सड़क किनारे बिजली खंभा है। गिरने के बाद बड़ी हादसा होने की संभवना बनी हुई है। ग्रामीणों ने बिद्युत विभाग से बिजली खंभा दुरुस्त करने की मांग की है।

## आठ साल पहले दिल्ली काम करने गयी लड़की का रेस्क्यू

**● साइबर सेल की मदद से लड़की को लातेहार में परिजनों को सौंपा गया**

**नवीन मेल संवाददाता**

**लातेहार/महुआडांड़।** साल 2017 में दिल्ली काम करने गयी एक लड़की का लातेहार पुलिस ने दिल्ली में रेस्क्यू कर लातेहार लाकर परिजनों को सौंप दिया। दरअसल जिले के महुआडांड़ थाना क्षेत्र की चीरोपाठ ग्राम निवासी (अंजली काल्पनिक नाम)आठ साल पहले दिल्ली में घरेलु काम करने गयी थीत्र 2018 से उसका कुछ अता पता नहीं चल रहा था। लातेहार पुलिस अधीक्षक कुमार गौरव ने इस मामले पर संज्ञान लेते हुए एसआईटी टीम का गठन कर साथ में लातेहार की साइबर सेल की मदद से उसका दिल्ली में रेस्क्यू कर लातेहार लाकर परिजनों को सौंप दिया गया। अंजली व अन्य दो लड़कियों को दिल्ली में घरेलू काम के लिए भेजा गया था। तीन स्थानीय लोगों ने उन्हें सुनीता मुरमुरिन और उसके पति ब्रजकिशोर सिंह के प्लेसमेंट ऑफिस में भेजा था। एक लड़की बीमार होकर वापस लौट आई। जबकि अंजली वहीं काम करती रही। अधिक काम करने की वजह से अंजली बीमार पड़ गई। इसके बाद सुनीता ने उसे बिरेन्द्र कुमार गुप्ता के घर काम पर लगा दिया। वहां तीन महीने काम करने के बाद भी पैसा नहीं मिलने पर वह 2018 में वहां से भाग गई। उसके बाद से उसका कोई पता नहीं चला। अंजली के माता-पिता ने साल 2023 में महुआडांड थाने में उसकी बेटी के लापता होने की शिकायत दर्ज कराई थी। मामला दर्ज करने के बाद जांच के लिए एसआईटी का गठन किया गया। जांच के क्रम में लातेहार साइबर सेल की मदद से पता चला कि अंजली ने 2023 में अपने आधार कार्ड से मोबाइल सिम लिया था। पिछले 13 अप्रैल को एसआईटी टीम दिल्ली पहुंची। साइबर सेल से मिली लोकेशन के आधार पर रूपनगर थाना क्षेत्र के एक अपार्टमेंट से अंजली को बरामद किया गया। टीम में पुलिस निरीक्षक पीर मोहम्मद, थाना प्रभारी इन्द्रदेव रजवार, महिला थाना प्रभारी सुशीला केसरी समेत अन्य पुलिस कर्मी शामिल थे। पुलिस अंजेला को ले कर लातेहार पहुंची और कागजी कार्रवाई पूरी कर उसे उसके माता-पिता को सौंप दिया गया।

## बाल संसद से बच्चों में नेतृत्व क्षमता का होगा विकास : संजीत

**● लोकतांत्रिक विधि से किया गया चुनाव बच्चों ने सीखी मतदान की प्रक्रिया**

**नवीन मेल संवाददाता**

**चंदवा।** प्रखंड के सुदूरवर्ती गांव स्थित संकुल संसाधन केंद्र काली में बच्चों ने बाल संसद प्रक्रिया के तहत पूरी लोकतांत्रिक विधि का पालन करते हुए चुनाव में भाग लिया। चुनाव में बतौर पर्यवेक्षक के रूप में संकुल साधन से विकास कुमार,जिला शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान के प्रतिनिधि शंकर उरांव,क्षेत्रीय समन्वयक संजीत कुमार,जिला समन्वयक संजय उरांव शामिल हुए। चुनावी प्रक्रिया के बाद बच्चों को संबोधित करते हुए वक्ताओं ने कहा कि जिले में पहली बार पूरी लोकतांत्रिक विधि से बाल संसद का गठन कराया जा रहा जिससे बच्चों में नेतृत्व क्षमता का विकास होगा। बच्चे आने वाले भविष्य में चुनावी प्रक्रिया को सीख सकते हैं। मौके पर उपस्थित चुनावी पर्यवेक्षक संकुल साधन के विकास कुमार में कहा बच्चों के अंदर चुनावी समझ विकसित हो इसके लिए गूगल लिंक के माध्यम से फोटो युक्त उम्मीदवार का नाम दिया गया। प्रधानमंत्री पद के लिए उमवि डुमारो से 11 प्रतिभागी, उमवि माल्हन से 5 और उमवि ढोटी से 2 उम्मीदवार ने पर्चा भरा था। बच्चे अपने पसंदीदा उम्मीदवार के सामने टिक कर रहे थे। छात्र-छात्राओं ने काफी उत्सुकता के साथ चुनावी प्रक्रिया में भाग लिया। इस चुनाव प्रकिया में पोलिंग ऑफिसर व पीठासीन पदाधिकारी के रूप में विद्यालय से कक्षा 8 उत्तीर्ण छात्र-छात्राओं को नियुक्त किया गया था। चुनावी प्रकिया संपन्न होने के बाद विद्यालय के प्रधानाध्यापक और विद्यालय प्रबंधन समिति के अध्यक्ष की उपस्थिति में मतगणना कार्य प्रारंभ हुआ। उमवि डुमारो से कुणाल खरवार अपने निकटतम प्रतिद्वंदी रितिका कुमारी से 12 मत अधिक,उमवि माल्हन से प्रतिमा कुमारी अपने निकटतम प्रतिद्वंदी आफरीन प्रवीण से 48 मत अधिक एवं उमवि ढोटी से मूर्ति कुमारी अपने निकटतम प्रतिद्वंदी सूरज गंझू से 56 मत अधिक ला कर विजय घोषित हुए। चयनित उम्मीदवार अगले कार्य दिवस में अपने मंत्रिमंडल का विस्तार करते हुए शपथ ग्रहण कार्यक्रम आयोजित करेंगे। मौके पर विद्यालय के शिक्षक,प्रबंधन समिति के सदस्य उपस्थित थे।

### मानव जाति को पापों से बचाने के लिए यीशु मसीह क्रूस पर हुए बलिदान

# प्रभु यीशु ने दिया मानवता और प्रेम का संदेश : फादर वीरेंद्र

*पापों से मुक्ति केवल ईश्वर की कृपा और बलिदान से ही संभव : फादर थॉमस पावथिल*

*यीशु मसीह का प्यार निस्वार्थ है, पाप से घृणा करो : फादर विनय केरकेट्टा*

**नवीन मेल संवाददाता**

**लोहरदगा।** गुड फ्राइडे के अवसर पर जिले के सभी चर्चों में सामूहिक आराधना हुई। मौके पर पादरी द्वारा अपने संदेश में बताया गया कि दुनिया में जब पाप भर गए, और जब परमेश्वर एवं मनुष्य के बीच गैप हो गया, तब परमेश्वर ने सम्पूर्ण मानव जाति के पाप क्षमा एवं उद्धार के लिए अपने इकलौते पुत्र यीशू मसीह को आज ही के दिन क्रूस पर बलिदान कर दिया। परमेश्वर द्वारा अपने अद्भुत प्रेम मानव जाति के लिए दिखाया गया। जबकि हम सब पापों में पड़कर ईश्वर से दूर हो गए। तब भी परमेश्वर ने अपने पुत्र को हम सब के लिए बलिदान दे दिया। आराधना के क्रम में यीशु मसीह द्वारा क्रूस पर कहे गए अंतिम सात वचनों पर भी प्रकाश डालने हेतु विभिन्न वक्ताओं जिनमें अमरनाथ लकड़ा, मनोरमा एक्का, सुक्रिता टोप्पो, निरंजन एक्का, ललिता कुजूर, लॉरेंस टोप्पो तथा रिझरेन कुजूर ने वक्तव्य दिये। यीशु मसीह ने क्रूस पर से साथ क्रॉस वाणी कहकर पूरी मानव जाति को संदेश दिया की आपस में प्रेम से रहें और एक दूसरे को क्षमा करें। प्रभु यीशु मसीह के बलिदान से प्रत्येक पापी मनुष्य का मेल मिलाप परमेश्वर के साथ हुआ। मौके पर मुख्य रूप से लालजीत लकड़ा, सुमन टोप्पो, जॉर्ज केरकेट्टा, अजय एक्का, विजय लकड़ा, सुशीला बाड़ा, सुधा लकड़ा, शबनम मिंज, मनोनीता एक्का, पुष्पा बाखला आदि समेत सैकड़ों विश्वासी गण, मंडली के पंचगन, सचिव, महिला संघ, युवा संघ और संडे स्कूल के बच्चों, विभिन्न टोला के द्वारा सुन्दर गीत प्रस्तुति की गई।

## संत बेरनादेत चर्च पतरा टोली में दुःख भोग की झाँकी प्रस्तुत किया

**लोहरदगा।** जिले के मसीही धर्मावलंबियों ने शुक्रवार को गुड फ्राइडे मनाया। इसे प्रेम का दिन बताते हुए मसीही धर्म गुरु फादर विरेंद्र ने कहा कि बलिदान के मार्ग में भी प्रभु यीशु मसीह ने मानवता और प्रेम का संदेश देने का काम किया है। ईशपुत्र होने के नाते येशु मसीह ईश्वर के प्रेम को कोई अलग तरीके से भी कोई आश्चर्यजनक कार्य करके प्रकट कर सकते थे, लेकिन उन्होंने तमाम कष्ट सहे। फादर थॉमस पावथिल ने कहा कि शायद मानव जाति के प्रति ईश्वर का अटूट प्रेम इतने प्रभावशाली ढंग से नहीं होता, जितना कि स्वयं के क्रूस पर लटके रक्तरंजित शरीर से होता। शहर के संत बेनार्डेट चर्च, उसुर्लाइन चर्च, सीएनआई चर्च, एनडब्ल्यूजीईएल चर्च, जीईएल चर्च, पेंतिकोस्टल चर्च, सेवेन डेज आदि धर्म स्थलों में गुड फ्राइडे पर ईश्वर वाणी और उनके पुण्य शुक्रवार के बलिदान मार्ग के स्थानों में किये गये प्रेम, बलिदान और आत्मीयता भाव को प्रार्थनाओं के जरिए स्मरण किया गया। धर्म गुरुओं ने गुड फ्राइडे के धार्मिक अनुष्ठान संपन्न कराये। पल्ली के अलावा उसुर्लाइन चर्च के कार्यक्रम में धर्मगुरुओं की अगुवाई में दुखभोग पाठ, आराधना, पवित्र क्रूस की उपासना की गई। चर्च में विशेष प्रार्थना हुआ। वहीँ संत बेरनादेत चर्च पतरा टोली में दुःख भोग की झाँकी के माध्यम से येशु मसीह को क्रूश पर बलिदान देने की झाँकी प्रस्तुत किया गया, बाइबल का पाठ पहला पाठ राजू बेर्नार्ड कुजूर वही दूसरा पाठ नीलम तिर्की द्वारा किया गया, फादर विनय केरकेट्टा ने कहा की प्रभु येशु मसीह का प्यार निस्वार्थ है प्रभु हमारे मुक्ति भलाई के लिए अपनी कुबार्नी दिए बलिदान दिवस के दिन को हम सब गुड फ्राइडे का दिन के रूप में मनाते है और इनकी कुबार्नी को याद करते है उनकी मृत्यु हमारे जीवन के लिए वरदान है, प्रेम दया क्षमा, सहनशीलता आदि गुणों को अपनाने तथा ईश्वर के मार्ग पर चलने को प्रेरणा देती है` इस अवसर पर जेवियर लकड़ा, ओनीमा तिग्गा, किशोर केरकेट्टा, दिलीप तिग्गा, राजेश कुजूर, फिलिप एक्का, अगुस्तीन टोपनो, संगीता कुजूर, असरिता ढिंडिया, नीलम तिर्की, ज्योति, सुमन बाखला, बसंती टोप्पो सहित संत अन्ना और लिवन्स एकाडमी की धर्म बहनें सहित सैकड़ो मसीही उपस्थित थे। इस मौके पर क्रूस चुम्मा का कार्यक्रम किया गया। आखिर में परम प्रसाद का वितरण किया गया।

## अज्ञात बोलेरा वाहन की चपेट में आने से युवक की मौत

**नवीन मेल संवाददाता**

**भंडरा।** बेड़ो -लोहरदगा मुख्य पथ भंडरा थाना क्षेत्र के पझरी पुल के समीप अज्ञात बोलेरा वाहन की चपेट में आने से युवक की मौत हो गई। युवक की पहचान भंडरा थाना क्षेत्र के पझरी गांव निवासी बिंदेश्वर उरांव के पुत्र सचिन उरांव (19 वर्ष) के रुप में हुई है। स्थानीय लोगों ने बताया कि सचिन अपने मोटर साइकिल से पझरी सियार टोली जा रहा था। तभी अज्ञात बोलेरो वाहन ने पीछे से टक्कर मार फरार हो गया। जिसे 108 एंबुलेंस वाहन की मदद से सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र भंडरा पहुंचाया गया। जहां जांचोपरांत चिकित्सकों ने सचिन को मृत घोषित कर दिया।

## उसुर्लाइन स्कूल की बालिकाओं ने सीखा आग से सुरक्षा के उपाय

**लोहरदगा।** अग्निशामक सुरक्षा सप्ताह के तहत जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन हुआ। फायर ब्रिगेड ने कार्यक्रम का आयोजन उर्सलाइन कॉन्वेंट बालिका विद्यालय में किया। इस दौरान अग्निशमन दल के रामाधार मुंडा, मनीष कुमार शर्मा व गोपी यादव ने आपातकालीन? परिस्थिति में और लापरवाही से गैस और बिजली से दुर्घटना घटने का प्रदर्शन किया। बताया कि कैसे घर में गैस लीकेज हो जाने के कारण आग लग जाती है. आपातकाल स्थिति में दुर्घटना से बचाव और एहतियात की जानकारी फायर ब्रिगेड ने दी। कार्यक्रम में प्रधानाध्यापिका सि आश्रिता, अजय प्रसाद, सि आशा, सि पुष्पा, शेखर, सचिन, अनीता, स्नेहा, ओमन, सि कुमुदिनी, सि मोदेस्ता, मैरियट, अनुपमा, सि अन्ना, सि लिली, सि सुनीता, अंशु, ग्रेस आदि शिक्षक मौजूद थे।

## वज्रपात से एक गाय की मौत

**भंडरा।** भंडरा कुम्बा टोली निवासी ताजिम अंसारी की गाय की मृत्यु वज्रपात से हो गई। ताजिम अंसारी के अनुसार गाय घर के पास बंधा हुआ था. इसी बीच दोपहर में 3 बजे के आसपास वज्रपात हुई .जिससे गाय की मृत्यु हो गई. ताजिम अंसारी बताते हैं कि गाय की मृत्यु से लगभग 30 हजार की नुकसान हुआ है . गाय की मृत्यु की सूचना स्थानीय मुखिया को देते हुए आपदा प्रबंधन से मुआवजा की मांग की गई है।

### धूल, शोर व अनदेखी में घिरा बसारडीह कल्याण अस्पताल

# बड़कीचॉपी-हेसल मार्ग के ट्रकों ने मरीजों की सेहत पर डाला असर

**नवीन मेल संवाददाता**

**लोहरदगा।** जिला के बसारडीह इलाके में स्थित कल्याण विभाग द्वारा संचालित अस्पताल इन दिनों गंभीर परेशानियों का सामना कर रहा है। शुक्रवार को अस्पताल में तैनात चिकित्सक डॉ. एम. कुमार, भर्ती मरीज संजय कुमार और नर्स प्रभा कुमारी ने बताया कि अस्पताल के सामने से गुजरने वाले बॉक्साइट लोडेड भारी वाहनों के कारण ना केवल मरीजों को असुविधा हो रही है, बल्कि पूरे अस्पताल परिसर का वातावरण भी दिन-ब-दिन बिगड़ता जा रहा है। यह अस्पताल बड़कीचॉपी रेलवे स्टेशन के पास स्थित है, और यही रास्ता हेसल के डंपिंग यार्ड तक बॉक्साइट से लदे ट्रकों की नियमित आवाजाही के लिए उपयोग में लाया जा रहा है। ये भारी वाहन कच्ची सड़क से दिन-रात गुजरते हैं, जिससे तेज

शोर और उड़ती धूल अस्पताल के भीतर तक पहुंच रही है। मरीज जहां शांति और आराम के लिए अस्पताल आते हैं, वहीं यहां उन्हें चैन की नींद तक मयस्सर नहीं हो रही। डॉक्टरों के अनुसार, ध्वनि प्रदूषण के साथ-साथ उड़ती लाल रंग की धूल इलाज में बाधा बन रही है। डॉ. एम. कुमार ने बताया कि ये धूलकण ऑपरेशन थियेटर के औजारों, लिक्विड मेडिसिन और अन्य उपकरणों तक पहुंच रहे हैं, जिससे इलाज की गुणवत्ता प्रभावित हो रही है। मरीज संजय कुमार ने कहा कि इलाज के दौरान शोरगुल और धूल के कारण उन्हें काफी परेशानी हो रही है। वहीं नर्स प्रभा कुमारी ने बताया कि इन ट्रकों से उठने वाली धूल उनके कपड़ों और एप्रोन पर जम जाती है, जिससे न सिर्फ सफाई प्रभावित होती है, बल्कि लगातार इस प्रदूषण के संपर्क में रहने से स्वास्थ्य पर भी असर पड़ रहा है।

उन्होंने कहा कि रात की ड्यूटी के बाद जब वे दिन में आराम करना चाहती हैं, तो ट्रकों के शोर और धूल के कारण चैन की नींद लेना भी मुमकिन नहीं हो पाता। अस्पताल प्रशासन की ओर से जिला प्रशासन को कई बार लिखित सूचना देकर वैकल्पिक मार्ग बनाने की मांग की जा चुकी है, लेकिन अब तक कोई ठोस कदम नहीं उठाया गया है। स्थिति लगातार गंभीर होती जा रही है। ट्रकों की आवाजाही के कारण मरीजों की संख्या में भी गिरावट दर्ज की जा रही है, जिससे अस्पताल के भविष्य पर संकट के बादल मंडराने लगे हैं। अब निगाहें जिला प्रशासन पर टिकी हैं कि वह इस समस्या का समाधान कब और कैसे निकालता है, ताकि मरीजों और स्वास्थ्यकर्मियों को राहत मिल सके।

# नगर पालिका क्षेत्र के कचड़े से ग्रामवासी परेशान : पवन तिग्गा

*नगर पालिका जल्द से जल्द इसका समाधान नहीं करेगी तो भाजपा करेगी आंदोलन*

**नवीन मेल संवाददाता**

**लोहरदगा।** भाजपा नेता पवन तिग्गा ने कहा कि जिला के नगर पालिका के 23 वार्ड से प्रतिदिन सूखा कचरा, गीला कचरा इकट्ठा किया जाता है और धर्म कांटा किया जाता है। लोहरदगा जिला के सदर प्रखंड क्षेत्र के निंगनी पंचायत के ब्राह्मणडीहा एवं जोरी पंचायत के ग्राम ओयना में कचरा डंपिंग वार्ड बनाया गया है। नगर पालिका के द्वारा कुल कितने एकड़ जमीन में कचरा डंपिंग यार्ड करना है इसका साइन बोर्ड तक नहीं लगाया गया है। घेरा बाउंड्री वॉल नहीं किया गया है। जिसके चलते कचरा अगल-बगल क्षेत्र में भी फैल गया है। इन क्षेत्रों के बगल में पेट्रोल पंप, आवासीय विद्यालय ब्राह्मणडीहा, लिवेंस एकेडमी स्कूल, देवी मंडप महादेव मंदिर, एवं सरना स्थल, मसना स्थल इन सभी जगह कचडा का अंबार लगा हुआ है। इस क्षेत्र के ग्राम वासियों गीला कचरा एवं सूखा कचरा के दुर्गंध से काफी परेशान है। प्रत्येक घरों में कचरा के कारण बीमारी का प्रकोप बढ़ते जा रहा है। झारखंड के गठबंधन सरकार एवं लोहरदगा नगर कार्यालय के पदाधिकारी से मांग करते हैं कि इन सभी से निजात दिलाई जाए अन्यथा भारतीय जनता पार्टी आंदोलन को बेब्स हो जाएगी इसकी जवाब देही झारखंड सरकार एवं लोहरदगा नगर पालिका के पदाधिकारी होंगे।

## अग्निशमन सेवा सप्ताह के तहत स्कूली बच्चों को मिला फायर सेफ्टी का प्रशिक्षण

**नवीन मेल संवाददाता**

**लोहरदगा।** शीला अग्रवाल सरस्वती विद्या मंदिर लोहरदगा के वंदना सभागार में झारखंड अग्निशमन सेवा लोहरदगा जिला के अधिकारियों के द्वारा फायर सेफ्टी उपकरणों का प्रदर्शन, आपात स्थिति में बचाव के सिखाए तरीके। विद्यालय के प्रधानाचार्य बिपिन कुमार दास, अग्निशमन के अधिकारी रामाधार मुंडा स्टेशन ऑफीसर्स मनीष कुमार शर्मा, सुनील बेसरा , राजीव सिंह उपस्थित थे। भैया -बहनों को आग से होने वाली दुर्घटनाओं के प्रति जागरूक किया। आग लगने से सबसे पहले बरती जाने वाली सावधानियां की जानकारी दी। ज्वलनशील वस्तुओं को सुरक्षित रखने और शॉर्ट सर्किट से बचने की भी उपाय

बताए गए।

फायर एक्सटिंग्विशर, वाटर हाइड्रेट और सेंड बकेट जैसे उपकरणों का आग बुझा कर प्रदर्शन किया गया। अग्निशमन अधिकारी ने बताया कि आग लगने पर घबराना नहीं चाहिए हेल्पलाइन नंबर 112 पर कॉल करना चाहिए। विद्यालय, कार्यालय या घर में फायर अलार्म और सुरक्षित निकास मार्ग की जानकारी जरूरी है। अधिकारियों ने बताया कि अग्नि समाज सेवा सप्ताह का उद्देश्य आग से बचाव की तकनीक सीखना और लोगों को सतर्क बनाना। उन्होंने भैया -बहनों से अपने आसपास के अन्य लोगों को अग्नि सुरक्षा के प्रति जागरूक करने की अपील की कार्यक्रम में कक्षा षष्ठ से दशम तक के भैया -बहनों की संख्या 578, आचार्यगण 22 एवं 09 कर्मचारी मौजूद थे।

### सांसद सुखदेव भगत के मांडर प्रतिनिधि की पत्नी का निधन, कुडू में श्रद्धांजलि

**कुड़ू-लोहरदगा।** स्थानीय सांसद सुखदेव भगत के मांडर विधानसभा प्रतिनिधि सीताराम भगत की पत्नी का देहांत हो गया। अंतिम संस्कार के लिए लातेहार जाने के क्रम में कुडू इंदिरा गांधी चौक के समीप लोहरदगा सांसद प्रतिनिधि साजिद अहमद चंगु की अगुवाई में कांग्रेसियों ने पार्थिक शरीर पर श्रद्धा सुमन अर्पित कर आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की एवं शोक व्यक्त किया। श्रद्धासुमन अर्पित करने वालो में स्वास्थ प्रतिनिधी शोनू कुरैशी, निगरानी समिती के सदस्य जफरउल्लाह खान, निगरानी समिती सदस्य विकास नाथ सहदेव, मुन्ना खान, साजीद अंसारी, राजू टाना भगत, शहरुख खान, इस्राफील खलीफा, मनोज लाल, इरशाद हुसैन, सहजी आलम राजा, प्रमोद पासवान, आसिफ जिलानी, सोनू खान, सबीर अंसारी, अरशद खान, विक्की खान, तफसीर आलम, आरजू खान आदि शामिल हैं।

### मधुर मेडिकेयर हास्पिटल पतरा टोली में निशुल्क चिकित्सा शिविर आयोजित

## हमेशा फिट रहने के लिए अच्छा स्वास्थ्य जरूरी : अजय

*दूरस्थ एवं दुर्गम क्षेत्र के 213 मरीजों ने कराया इलाज*

**नवीन मेल संवाददाता**

**लोहरदगा।** पतराटोली स्थित मधुर मेडिकेयर हास्पिटल तृतीय वर्षगांठ के मौके पर शुक्रवार को निःशुल्क चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। इसमें दूर दराज एवं दुर्गम क्षेत्र से से आए मरीजों ने निःशुल्क इलाज का लाभ लिया। शिविर में हड्डी जोड़ और नस रोग विशेषज्ञ डा विवेक मधुर, जेनरल सर्जन और स्त्री रोग विशेषज्ञ डा नेहा ज्योति , कार्डियोलॉजिस्ट डॉ विनीत कुमार मिश्रा, न्यूरोसर्जन डॉ दीपक कुमार, शिशु रोग विशेषज्ञ डॉ आभा मधुर और डा चंदन कुमार ने शिविर में पहुंचे 213

मरीजों का निःशुल्क इलाज किया। शिविर में ब्लड शुगर, यूरिक एसिड , इसीजी और हड्डी में कैलिसियम की जांच बीएमडी मशीन के द्वारा की गई। सभी मरीजों को आवश्यकतानुसार मुफ्त दवाएं दी गईं। डा विवेक मधुर ने हड्डी, जोड़ और नस रोगों से संबंधित मरीजों का इलाज किया। डॉ विवेक ने कहा कि वर्तमान परिस्थिति में जीवन शैली काफी बदल रही है। लोगों को अपने स्वास्थ्य के प्रति सचेत और जागरूक रहने की आवश्यकता है। इन्होंने मरीजों को हड्डी एवं नस की देखभाल के लिए जरूरी उपाय बताए। डा नेहा ज्योति मधुर ने बवासीर, फिशर, हर्निया, हाइड्रोसिल, पित और किडनी की पथरी, स्तन की गांठ और घाव, पेट की बीमारी और गर्भवती महिलाओं का इलाज किया। डा चंदन कुमार ने भी सामान्य बीमारियों का इलाज किया। हास्पिटल के निदेशक अजय मधुर ने बताया कि मधुर मेडिकेयर हास्पिटल में स्वास्थ्य को लेकर निशुल्क जांच शिविर का आयोजन आगे भी जारी रहेगा। इन्होंने कहा कि मधुर मेडिकेयर का उदेश्य स्वास्थ्य को लेकर जागृत कराना है।माह के प्रथम रविवार को ओपीडी शुल्क निशुल्क रहेगा। शिविर को सफल बनाने में अजय मधुर, सावित्री मधुर, सुरेंद्र ठाकुर, सुशीला कुजूर, उषावती यादव, देवंती बेक, अचरज कुजूर, सूरज यादव, नेहा सिंह गुलाब नायक, अंगद सिंह, साधना ,अमन कुमार, नरगिस खातून, सिद्धार्थ सिंह, मो खालिद , प्रियांशु, खुशी खाखा, शाहिद अंसारी आदि का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

## नुक्कड़ नाटक के माध्यम से समाज में पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया

**नवीन मेल संवाददाता**

**लोहरदगा।** मनोहर लाल अग्रवाल सरस्वती विद्या मंदिर इंटर महाविद्यालय लोहरदगा के छात्र-छात्राओं के द्वारा समाज में नुक्कड़ नाटक के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया गया। छात्र-छात्राओं ने जल संरक्षण, भूमि संरक्षण, वायु संरक्षण से संबंधित संदेश समाज में प्रसारित किया और पर्यावरण संरक्षण के प्रति लोगों को जागरूक किया। कार्यक्रम में महाविद्यालय के सभी छात्र-छात्राएं और सभी आचार्य दीदी जी उपस्थित रहे।

# सेन्हा प्रखंड के मुर्की पथ पर निर्माणाधीन पुल में लीपापोती की हुई शिकायत

*मुखिया एवं ग्रामीणो की शिकायत पर सांसद प्रतिनिधि ने लिया निर्माण कार्य का जायजा*

*लापरवाही इतना की जेक लगाकर दबे अर्धनिर्मित पुल को उठाने का किया गया था प्रयास*

**नवीन मेल संवाददाता**

**सेन्हा।** प्रखंड के उपप्रमुख, मुखिया, एवं ग्रामीणो के द्वारा सांसद सुखदेव भगत को आवेदन देकर सेन्हा मुर्की पथ पर बना रहे पूल निर्माण कार्य में भारी अनियमितता की शिकायत की गई थी। सांसद के निर्देश पर लोहरदगा जिला सांसद प्रतिनिधि साजिद अहमद ने स्थल पहुंचकर अर्ध निर्मित पुल का लिया जायजा। स्थल पर जिला कांग्रेस

सचिव नंद किशोर शुक्ला, इमरान आजाद, उप प्रमुख पौल तिग्गा, सेन्हा मुखिया धनवाज उराव, जिला कार्यकारी युवा अध्यक्ष गुलाम जिलानी, पंचायत अधपक्ष रुसतम अंसारी, तोराड पंचायत अध्यक्ष जीतराम उराव, जितेन्द्र उराव, सादिक अंसारी, अफाक अंसारी, आजम अंसारी, अमित उराव, परवेज आलम आदि उपस्थित थे।

मुखिया एवं ग्रामीण के द्वारा बताया गया की सेट्रिंग करने के उपरान्त छड़ बांधा गया था। वर्षा के कारण सेट्रिंग दब गया। ग्रामीणो ने कार्यस्थल पर आपति दर्ज कराई पर उनकी नही सुनी गई। लीपापोती कर जेक लगाकर उठाने का प्रयास किया गया और बिम्ब आदी ढाल दिया गया। दबाव के कारण पूल साफ तौर पर दब गया। निचे लगाये गए चैनल साफ तौर पर दबे नजर आ रहे है।

विभाग के अधिकारी भी देखने नही आते है। एजेंसी द्वारा स्थानिय जनप्रतिनिधि और ग्रामीणों की नहीं सुनने और इस प्रकार की लापरवाही पर सांसद प्रतिनिधि साजिद अहमद में नाराजगी जताई। उन्होंने कहा कि बाहर की एजेंसियां जो काम कर रही है लोहरदगा को चारागाह समझ बैठी है और लूट मचा रहे हैं। उन्होंने उपस्थित जनों से कहा कि सांसद को आपकी सारी शिकायतों से अवगत करायेंगे इस पर कारवाई अवश्य होगा।

## भाजपा नेता ओमप्रकाश सिंह ने बंगाल हिंसा की निंदा की

**नवीन मेल संवाददाता**

**लोहरदगा।** भारतीय जनता पार्टी प्रदेश कार्य समिति के सदस्य सह वरिष्ठ नेता ओम प्रकाश सिंह ने वक्फ संशोधन कानून के विरोध के नाम पर बंगाल में हाल में हुई हिंसा पर क्षोभ प्रकट करते हुए इसकी तीव्र निंदा की है। उन्होंने कहा है की खुफिया एजेंसियों को जो तथ्य प्राप्त हो रहे हैं, इससे स्पष्ट हो रहा है कि बांग्लादेशी आतंकी संगठन अंसार उल बांग्ला का हाथ होने के पुख्ता सबूत प्राप्त हो रहे हैं।उपद्रव ग्रस्त क्षेत्र तथा उससे सटे जिलों में भी जिहादियों तथा आतंकवादी संगठन का स्लीपर सेल सक्रिय है। इन्हें साजिश रचने,हिंसा फैलाने, अलगाववाद पैदा करने के लिए विदेशी फंडिंग की व्यवस्था भी की जा रही है।सुरक्षा एजेंसीयों ने यह भीअंदेशा जाहिर किया है कि वक्फ संशोधन बिल के आड़ में

स्लीपर सेल से जुड़े लोग मुर्शिदाबाद से सटे जिलों तथा भारत बांग्लादेश के सीमावर्ती क्षेत्रों में भी हिंसा फैलाने की कार्रवाई कर सकती है। भाजपा नेता ओम प्रकाश सिंह ने केंद्र सरकार से इस तरह के अलगाववादी, कट्टरपंथी संगठनों पर कड़ी कार्रवाई के साथ बंगाल की ममता बनर्जी सरकार पर अंकुश लगाने की ठोस योजना बनाने का आग्रह किया है।

### डाडहा-डोंबा-डोडमा सड़क निर्माण के लिए भूमि अधिग्रहण

**भरनो।** डाडहा से डोंबा होते हुए डोडमा तक प्रस्तावित सड़क निर्माण परियोजना के लिए ग्रामीण रैयतों की भूमि का अधिग्रहण किया गया है। जिन प्रभावित रैयतों को अब तक मुआवजा नहीं मिला है, उनके लिए विशेष शिविर का आयोजन किया जा रहा है। यह शिविर 21 और 22 अप्रैल 2025 को डोंबा पंचायत भवन में लगाया जाएगा। शिविर में रैयतों को अपने सभी आवश्यक कागजातों के साथ उपस्थित होना होगा, ताकि लंबित मुआवजा राशि का भुगतान किया जा सके। अंचलाधिकारी ने जानकारी देते हुए बताया कि यह शिविर रैयतों की सुविधा और उनके मुआवजा संबंधी मामलों के त्वरित निष्पादन के उद्देश्य से आयोजित किया जा रहा है।

# गुड फ्राइडे पर आस्था से भरा क्रूस रास्ता धार्मिक कार्यक्रम आयोजित सैकड़ों मसीही हुए शामिल

नवीन मेल संवाददाता

**पालकोट (गुमला)।** गुड फ्राइडे के पावन अवसर पर देवगांव चर्च के अंतर्गत बरडीह यूनिट चर्च द्वारा बरडीह क्रुस टोंगरी में क्रूस रास्ता धार्मिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में येशु मसीह के कलवारी पहाड़ की दुःखमयी यात्रा को स्मरण करते हुए श्रद्धालुओं ने चौदहों स्थानों की यात्रा कर आस्था और पश्चाताप की प्रार्थना की।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि गुमला धर्मप्रांत के काथलिक सभापति सेत कुमार एक्का अपने दल के साथ विशेष रूप से उपस्थित रहे। विशिष्ट अतिथियों में देवगांव पल्ली सह

करौंदाबेड़ा भिखारिएट सभापति, प्रखंड युवा कांग्रेस अध्यक्ष एवं प्रखंड 20 सूत्री कार्यक्रम कार्यान्वयन समिति पालकोट के अध्यक्ष रोहित एक्का, तपकारा की मुखिया कांति केरकेट्टा तथा विधायक प्रतिनिधि प्रदीप सोरेंग मुख्य रूप से मौजूद रहे।

कार्यक्रम का नेतृत्व संत जेवियर चर्च देवगांव के बरडीह यूनिट चर्च के पंचगण एवं मसीही समुदाय के अग्रणीयों द्वारा किया गया। पल्ली पुरोहित फा० बरनाबस केरकेट्टा की अगुवाई में सैकड़ों श्रद्धालुओं ने भाग लिया और येशु मसीह के बलिदान को श्रद्धापूर्वक याद किया।

पूरे आयोजन के दौरान वातावरण श्रद्धा और भक्ति से सराबोर रहा। क्रुस रास्ता की धार्मिक परंपरा को निभाते हुए श्रद्धालुओं ने प्रार्थना, भजन और आत्मचिंतन के माध्यम से इस पवित्र दिन को अत्यंत श्रद्धापूर्वक मनाया। कार्यक्रम ने क्षेत्र में धार्मिक एकता और शांति का संदेश भी दिया।

## गुमला जिले के कई क्षेत्रों में आंधी और बारिश से मिली गर्मी से राहत

### सब्जी की फसलों को नुकसान की आशंका

नवीन मेल संवाददाता

**गुमला।** जिले के कई हिस्सों में शुक्रवार को अचानक मौसम का मिजाज बदला और तेज आंधी के साथ बारिश हुई। इस मौसम बदलाव से जहां लोगों को उमस भरी गर्मी से थोड़ी राहत मिली, वहीं किसानों की चिंता बढ़ गई है। तेज हवा और वर्षा के कारण कई क्षेत्रों में सब्जियों की फसलों को नुकसान पहुंचने की आशंका जताई जा रही है। भरनो, बसिया, सिसई, घाघरा, चैनपुर, डुमरी, जारी, भरनो, विशुनपुर समेत कई प्रखंडों में दोपहर बाद आसमान में काले बादल छा गए और तेज हवा के साथ झमाझम बारिश शुरू हो गई। इस अचानक हुई बारिश से तापमान में गिरावट आई और लोगों को गर्मी से राहत मिली। खासकर स्कूली बच्चों, राहगीरों और खेतों में काम कर रहे मजदूरों को इससे फौरी सुकून मिला।

हालांकि, तेज हवाओं ने कई जगहों पर पेड़ की टहनियों को तोड़ दिया और कुछ क्षेत्रों में बिजली आपूर्ति भी बाधित रही। बारिश के कारण खेतों में लगे टमाटर, लौकी, करेला, भिंडी जैसी सब्जी फसलें आंधी की चपेट में आकर झुक गईं या टूट गईं। इससे किसानों को आर्थिक नुकसान की आशंका है। किसानों का कहना है कि यदि बारिश हल्की होती तो लाभकारी साबित होती, लेकिन तेज हवा और भारी वर्षा ने फसलों को नुकसान पहुंचाया है। कृषि विभाग को चाहिए कि वह जल्द से जल्द खेतों का सर्वे कर नुकसान का आकलन करे और प्रभावित किसानों को राहत प्रदान करे। स्थानीय लोग अब आगामी दिनों में मौसम साफ रहने की उम्मीद कर रहे हैं ताकि खेतों में और अधिक क्षति न हो और जनजीवन सामान्य बना रहे।

### अचानक हुई तेज बारिश से गर्मी से मिली राहत, मौसम हुआ सुहावना

**पालकोट (गुमला)।** पालकोट प्रखंड क्षेत्र में शुक्रवार को दोपहर बाद अचानक मौसम बदला और तेज आंधी के साथ झमाझम बारिश हुई। लंबे समय से झेल रही भीषण गर्मी से परेशान लोगों को इस बारिश ने खासी राहत पहुंचाई। पालकोट मुख्यालय समेत बाघिमा, मिसिर टोली और अन्य ग्रामीण इलाकों में भी अच्छी बारिश हुई, जिससे तापमान में गिरावट आई और लोगों ने राहत की सांस ली। बारिश के साथ आई ठंडी हवा और हल्की फुहारों ने क्षेत्र का माहौल पूरी तरह बदल दिया, और मौसम सुहावना हो गया। स्थानीय लोगों ने बताया कि पिछले कुछ दिनों से तेज धूप और उमस भरी गर्मी के कारण जनजीवन प्रभावित हो रहा था, लेकिन आज की बारिश ने गर्मी से थोड़ी निजात दिलाई है। किसानों के चेहरों पर भी रौनक लौट आई है, क्योंकि यह बारिश उनके लिए भी लाभकारी मानी जा रही है।

# अवैध बालू लोडिंग के दौरान ट्रैक्टर ट्रेलर से दबकर एक किशोर की मौत

### नाबालिगों से कराए जा रहे खतरनाक कार्य पर उठे सवाल

नवीन मेल संवाददाता

**भरनो (गुमला)।** भरनो प्रखंड अंतर्गत मारासिली गांव निवासी सुरेंद्र उरांव उर्फ बौना उरांव के 13 वर्षीय पुत्र आदित्य मिंज की शुक्रवार दोपहर एक दर्दनाक हादसे में मौत हो गई। वह अवैध बालू लोडिंग के लिए ट्रैक्टर पर मजदूरी करने गया था, जहां गाढ़ाटोली पुल के पास ट्रैक्टर का डाला पलटने से वह उसके नीचे दब गया। प्राप्त जानकारी के अनुसार आदित्य अन्य किशोरों के साथ जुरा नदी से अवैध बालू लादकर बूढ़ीपाठ गांव ले जा रहा था। ट्रैक्टर के डाला में वह अकेला बैठा था, इसी दौरान चालक ने संतुलन खो दिया और डाला पलट गया, जिससे आदित्य की मौके पर ही दर्दनाक मौत हो गई। हादसे के बाद चालक ट्रैक्टर का इंजन लेकर भाग निकला। घटना के तुरंत बाद साथी नाबालिग मजदूरों ने आदित्य को बाहर निकालकर भरनो सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पहुंचाया, जहां चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया। सूचना मिलते ही भरनो थाना पुलिस अस्पताल पहुंची और शव को पोस्टमार्टम के लिए गुमला सदर अस्पताल भेज दिया गया। अस्पताल परिसर में परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल है। मृतक की मां ने बताया कि उसका बेटा बिना

बताए सुबह 4 बजे घर से निकला था। हादसे में प्रयुक्त ट्रैक्टर लालटोली गांव का बताया जा रहा है। यह घटना एक बार फिर भरनो क्षेत्र में अवैध बालू कारोबार की हकीकत को उजागर करती है। स्थानीय लोगों के अनुसार क्षेत्र की कई नदियों से प्रतिदिन सुबह से ही ट्रैक्टरों के माध्यम से धड़ल्ले से बालू उठाव हो रहा है, और इसमें नाबालिग चालक व मजदूरों का उपयोग आम बात हो गई है। न तो इनके पास वैध ड्राइविंग लाइसेंस है और न ही सुरक्षा की कोई व्यवस्था। सबसे बड़ी चिंता की बात यह है कि यह सारा धंधा प्रशासनिक संरक्षण में फल-फूल रहा है, और संबंधित विभाग मौन दर्शक बना हुआ है। आज की यह दर्दनाक घटना प्रशासन के लिए चेतावनी है, जिसे गंभीरता से लेते हुए जांच कर अवैध बालू कारोबार पर रोक लगाने की जरूरत है, ताकि भविष्य में ऐसी घटनाएं दोहराई न जाएं।

### सड़क दुर्घटना में घायल दूसरे युवक की भी मौत शोक में डूबा छात्रावास

**गुमला।** टोटो पेट्रोल पंप के समीप बीते मंगलवार रात हुए सड़क हादसे में घायल कीता निवासी 22 वर्षीय युवक संतोष उरांव ने शुक्रवार दोपहर 2 बजे इलाज के दौरान दम तोड़ दिया। संतोष की मौत से उसके परिजन और छात्र समुदाय गहरे शोक में डूब गया है। गौरतलब है कि दुर्घटना के दिन एक पिकअप वाहन ने पीछे से बाइक में सवार तीन युवकों को जोरदार टक्कर मार दी थी। हादसे में आर्मी जवान की मौके पर ही मौत हो गई थी, जबकि संतोष उरांव और बबलू उरांव गंभीर रूप से घायल हो गए थे। दोनों को प्राथमिक उपचार के बाद रिम्स रेफर किया गया था, लेकिन परिजनों ने उन्हें पालकोट रोड स्थित साहु नर्सिंग होम में भर्ती कराया था।

### मोटरसाइकिल दुर्घटना में तीन युवक गंभीर रूप से घायल

**चैनपुर।** चैनपुर थाना क्षेत्र के मालम और डहुडड़गांव के बीच एक दुखद मोटरसाइकिल दुर्घटना में तीन युवक गंभीर रूप से घायल हो गए। घायलों में 17 वर्षीय नीरज मिंज, जो बेंदोरा के निवासी हैं, और उनके साथी 17 वर्षीय कुंदन कुजूर, और 21 वर्षीय, संजीत कुजूर, जो छतरपुर के निवासी हैं, शामिल हैं। तीनों युवक एक बाजाज आरएस मोटरसाइकिल से काफी रफ्तार से बाइक में सवार होकर मालम नवाटोली की ओर जा रहे थे। यह घटना उस समय घटी जब युवक लौटते समय मालम नवाटोली और डहुडड़गांव के बीच पुल के नीचे गिर गए। दुर्घटना की गंभीरता का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि तीनों युवक दुर्घटना के बाद गंभीर रूप से घायल हो गए। स्थानीय राहगीरों ने तुरंत दुर्घटना की सूचना चैनपुर थाना को दी और घायल युवकों की मदद के लिए मौके पर पहुंचे। चैनपुर थाना के जवान भी तेजी से घटना स्थल पर पहुंचे और घायलों को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र चैनपुर ले जाने के लिए सहायता की।

## न्यूज बॉक्स

### घाघरा के कुगांव गांव के तालाब में डूबे वृद्ध व्यक्ति की हो गई मौत शव की तलाश जारी

**घाघरा।** घाघरा थाना क्षेत्र के कुगांव ग्राम में तालाब में डूबे भिखुवा उरांव के शव को खोजने का सिलसिला जारी है वहीं पुलिस प्रशासन शुक्रवार को भी दिन भी खोजने का प्रयास कर ही रही है।वही पुलिस प्रशासन द्वारा मछली मारने वाले मछुआरे के प्रयास से फेंका जाल के माध्यम से भी खोजने का प्रयास उक्त तालाब में पुलिस प्रशासन द्वारा कराई गई। लेकिन भिखुवा के शव को नहीं खोजा जा सका। परिजन आस लगाए बैठे हुए हैं कि भिखुवा का शव मिल पाए।कठिन प्रयास के बाद भी कोई नतीजा सामने नहीं आया है।वही पुलिस प्रशासन एनडीआरएफ की टीम बुलाने को लेकर लगातार प्रयास कर रही है। इस संबंध में थाना प्रभारी पुनीत मिंज ने कहा कि घटनास्थल पर ही पुलिस प्रशासन द्वारा प्रयास किया जा रहा है। इसके साथ ही एनडीआरएफ की टीम को भी मेल के माध्यम से एवं दूरभाष के माध्यम से सूचना दी गई है। जल्द ही एनडीआरएफ टीम पहुंचेगी।

**क्या है मामला :** कल बीते सोमवार को भिखवा उरांव अपने भैंस को चराने के बाद नहावाने के लिए भैंस के साथ तालाब में गए इसके बाद अचानक भिखवा उरांव तालाब में ही डूब गया बीते बृहस्पतिवार को ग्रामीणों ने का शव को काफी खोजबीन की मगर तालाब से शव नहीं निकल पाया।

### भरनो में वज्रपात से दो युवक घायल निजी क्लिनिक में इलाज जारी

**भरनो (गुमला)।** गुमला जिले के भरनो प्रखंड के सरगांव गांव में शुक्रवार शाम को एक दर्दनाक हादसा हुआ, जिसमें 17 वर्षीय गुलफान मियां और 18 वर्षीय इब्राहिम मियां वज्रपात की चपेट में आकर घायल हो गए। घटना के बाद परिजनों ने दोनों युवकों को आनन-फानन में भरनो के एक निजी क्लिनिक में भर्ती कराया, जहां उनका इलाज चल रहा है। मिली जानकारी के अनुसार, दोनों युवक अपने मिर्चा के खेत में कोड़ा कर रहे थे। अचानक काले बादल घिर आए और हल्की बूंदाबांदी शुरू हो गई, इसी दौरान अचानक वज्रपात हुआ और दोनों युवक उसकी चपेट में आकर बेहोश हो गए। हादसे के बाद उनके परिजन घबराए हुए थे, लेकिन समय रहते उन्हें उपचार के लिए अस्पताल पहुंचा दिया गया। डॉक्टरों के अनुसार, दोनों युवकों की स्थिति अब खतरे से बाहर है और उनका इलाज जारी है। इस घटना ने क्षेत्रीय लोगों में भय का माहौल पैदा कर दिया है, और अब लोग वज्रपात से बचने के उपायों को लेकर सतर्क हो गए हैं।

### बिजली की आंख-मिचौली से लोग बेहाल गर्मी व आईपीएल प्रेमियों की बढ़ी परेशानी

**भरनो (गुमला)।** भरनो प्रखंड में बिजली की लगातार आंख-मिचौली से आम जनजीवन प्रभावित हो रहा है। दिनभर हर पांच से दस मिनट के अंतराल पर बिजली का आना-जाना लगा रहता है, जिससे स्थानीय लोग काफी परेशान हैं। वहीं मौसम जरा भी बदला और आंधी-पानी शुरू हुई, तो बिजली कब आएगी, इसका कोई ठिकाना नहीं रहता। इस अनियमित बिजली आपूर्ति का सबसे ज्यादा असर इलेक्ट्रॉनिक सामान बेचने वाले दुकानदारों, गृहणियों और आईपीएल मैच देखने के शौकीनों पर पड़ रहा है। रात्रि में अचानक बिजली गुल हो जाने से लोग मैच का आनंद नहीं ले पा रहे हैं। उधर, दिन में उमस भरी गर्मी से बेहाल लोग बिजली कटौती को लेकर ऊर्जा विभाग के खिलाफ नाराजगी जाहिर कर रहे हैं। लोग मांग कर रहे हैं कि जल्द से जल्द इस समस्या का स्थायी समाधान निकाला जाए, ताकि उन्हें राहत मिल सके।

### 14 वर्षीय छात्रा के साथ चार युवकों ने किया गैंगरेप, प्राथमिकी दर्ज

**गुमला।** सदर थाना क्षेत्र के एक गांव निवासी 14 वर्षीय छात्रा के साथ चार युवकों द्वारा सामूहिक दुष्कर्म किए जाने का मामला प्रकाश में आया है। नाबालिक छात्रा शुक्रवार दिन के 2 बजे अपनी बुआ के साथ गुमला थाना पहुंचकर चार लड़कों के विरुद्ध लिखित आवेदन देते हुए प्राथमिकी दर्ज कराई है। पूरा घटनाक्रम 14 अप्रैल की रात का है। छात्रा अपनी कुछ सहेलियों के साथ गांव में ही एक शादी समारोह में भाग लेने गई थी। रात के करीब 10 बजे नाच गान का कार्यक्रम चल रहा था। इसी बीच छात्रा अपनी दो सहेलियों के साथ बगल के तालाब के पास गई उसकी दोनों सहेलियां पेड़ के नीचे बैठ गई जबकि छात्रा तालाब की ओर गई इसी बीच चार लड़के वहां पहुंचे और उसका मुंह दबाकर सुनसान जगह ले गए। जहां बारी-बारी से चारों ने उसके साथ दुष्कर्म किया। फिर रात करीब 12 बजे उसे छोड़कर भाग गए। लड़की किसी तरह अपने घर पहुंची जहां उसके दादा-दादी दरवाजा खोलें और लड़की के फटे कपड़े और हुलिया को देखकर किसी अनहोनी की आशंका से भयभीत हो गए। इस बीच काफी पूछने पर भी डर से लड़की किसी को कुछ नहीं बताई। उसके व्यवहार में भी परिवर्तन हो गया। क्योंकि आरोपियों ने किसी को बताने पर उसे जान से मारने की धमकी भी दी थी। पीड़िता के माता-पिता दूसरे प्रदेश में मजदूरी करते हैं। छात्रा अपने दादा-दादी के साथ रहकर पढ़ाई करती है। शुक्रवार की सुबह हिम्मत जुटाकर पीड़िता अपने दूर में रहने वाली एक बुआ को फोन कर पूरी घटना की जानकारी दी। जिसके बाद बुआ गांव पहुंची और लड़की को लेकर टोटो थाना पहुंची और सारी बात बताई। वहीं टोटो थाना पर प्रभारी उदेश्वर पाल पीड़िता को लेकर गुमला थाना पहुंचे और प्राथमिकी दर्ज कराई। जिसके बाद पीड़िता का मेडिकल जांच कराया गया। वहीं पुलिस आरोपियों की गिरफ्तारी हेतु छापामारी कर रही है।

### इनर व्हील क्लब ने डीएवी गुमला में बच्चों को दिया दांतों की स्वच्छता का संदेश

## दंतों की देखभाल के टिप्स दिए

नवीन मेल संवाददाता

**गुमला।** इनर व्हील क्लब की अध्यक्ष निर्मला अग्रवाल एवं दंत चिकित्सकों की टीम ने डीएवी पब्लिक स्कूल गुमला में स्कूली बच्चों के बीच दांतों की स्वच्छता को लेकर विशेष जागरूकता अभियान चलाया। कार्यक्रम के तहत करीब 80 बच्चों के दांतों की जांच की गई और उन्हें दांतों की सही देखभाल के तरीके बताए गए।

दंत चिकित्सक डॉ. मन प्रिया अग्रवाल एवं डॉ. अर्चना अग्रवाल ने बच्चों को बताया कि दिन में दो बार ब्रश करना आवश्यक है झ एक बार सुबह और एक बार रात को सोने से पहले। साथ ही टूथपेस्ट के सही चयन, ब्रश बदलने का समय और ब्रश करने की सही

तकनीक के बारे में भी जानकारी दी गई। बच्चों को यह भी बताया गया कि किन खाद्य पदार्थों से दांतों को नुकसान पहुंचता है और किन चीजों को अपने आहार में शामिल करना चाहिए ताकि दांत लंबे समय तक स्वस्थ रहें। डॉ. अर्चना अग्रवाल ने कहा कि दांत हमारे शरीर का एक अहम हिस्सा होते हैं और समय-समय पर उनकी जांच कराना जरूरी होता है ताकि भविष्य में बड़ी समस्याओं से बचा जा सके। कार्यक्रम की शुरूआत डीएवी पब्लिक स्कूल के प्राचार्य डॉ. आर.के. साहू के स्वागत से हुई, जिन्हें इनर व्हील क्लब की अध्यक्ष निर्मला अग्रवाल ने बुके देकर सम्मानित किया। मौके पर क्लब की सचिव राजकुमारी विश्वकर्मा, उषा गुप्ता, मिली कुमारी, पूजा, किरण देवी, आकांक्षा समेत अन्य सदस्य भी मौजूद रहीं।

### भदौली मंडा डांड़ में हरिहर महायज्ञ व श्रीराम कथा का भक्ति पूर्ण आयोजन

## शिव-पार्वती विवाह कथा ने मोहा मन

नवीन मेल संवाददाता

**सिसई (गुमला)।** प्रखंड सिसई अंतर्गत ग्राम भदौली मंडा डांड़ स्थित शिव मंदिर प्रांगण में चल रहे पांच दिवसीय श्री श्री 1008 हरिहर महायज्ञ एवं संगीतमय श्रीराम कथा ने पूरे क्षेत्र को आस्था और भक्ति के रंग में रंग दिया है। धार्मिक उत्साह से सराबोर यह आयोजन ग्रामवासियों समेत दूर-दराज से आए श्रद्धालुओं के लिए भक्ति का केंद्र बन गया है। कार्यक्रम के तीसरे दिन प्रख्यात कथा वाचिका वीणा मिश्रा ने शिव-पार्वती विवाह प्रसंग की अत्यंत भावपूर्ण और संगीतमय प्रस्तुति दी। उनके मधुर स्वर और सरल भाषा में कही गई कथा ने श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। कथा के दौरान जब-जब भजनों की प्रस्तुति हुई, तब-तब श्रद्धालुओं

की तालियों, जयकारों और नृत्य से पूरा वातावरण भक्तिमय हो उठा। महिलाएं, पुरुष और बच्चे भजन के सुरों पर झूमते नजर आए, वहीं 'हर हर महादेव' और 'जय श्रीराम' के उद्घोष से भदौली मंडा डांड़ गूंज उठा। श्रद्धालुओं ने भावविभोर होकर आरती में भाग लिया और संगीतमय भजनों के माध्यम से प्रभु की आराधना की।

हर दिन कार्यक्रम की शुरूआत हनुमान चालीसा और आरती से की जा रही है, जो श्रद्धालुओं को ऊर्जा और भक्तिभाव से भर देती है। कथा वाचिका वीणा मिश्रा के साथ वादन कर रहे कलाकार भी अयोध्या से विशेष रूप से आमंत्रित किए गए हैं, जिनकी संगत ने भजनों की प्रस्तुति को और भी दिव्य बना दिया। तीसरे दिन की कथा में श्रद्धालुओं की भारी भीड़ उमड़ी, जिसे देखते हुए आयोजन समिति द्वारा समुचित व्यवस्था सुनिश्चित की गई थी। कथा स्थल पर शांति, अनुशासन और श्रद्धा का अनुपम संगम देखने को मिला। यह आयोजन न केवल धार्मिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है, बल्कि यह क्षेत्र की सांस्कृतिक एकता और समर्पण का भी प्रतीक बन गया है।

# बड़का दोहर आंगनबाड़ी केंद्र में नहीं होती बच्चों की पढ़ाई

### सिर्फ राशन वितरण तक सीमित है गतिविधियां

*ग्रामीणों ने की जांच व सुधार की मांग, सीडीपीओ ने लिया संज्ञान*

नवीन मेल संवाददाता

**बिशुनपुर (गुमला)।** गुमला जिले के बिशुनपुर प्रखंड के अति सुदूरवर्ती गांव बड़का दोहर में स्थित आंगनबाड़ी केंद्र की स्थिति सरकारी योजनाओं की हकीकत बयां कर रही है। यहां आंगनबाड़ी केंद्र का संचालन सिर्फ पोषाहार वितरण तक ही सीमित रह गया है, जबकि बच्चों की पढ़ाई-लिखाई पूरी तरह ठप है। ग्रामीणों ने आरोप लगाया है कि केंद्र नियमित रूप से नहीं खुलता और ना ही छोटे बच्चों को पोषण युक्त आहार या प्रारंभिक शिक्षा मिलती है।

ग्रामीण कौशल्या देवी ने बताया कि केंद्र में सेविका और सहायिका दोनों की नियुक्ति के बावजूद बच्चों को न पोषाहार मिलता है और न ही शिक्षा। केवल किशोरी, गर्भवती व धात्री महिलाओं को राशन और टीकाकरण के समय केंद्र खोला जाता है।

ग्रामीण सुमित्रा देवी ने भी कहा कि गांव में स्कूल और आंगनबाड़ी केंद्र होने के बावजूद बच्चों की पढ़ाई नहीं होती क्योंकि केंद्र नियमित रूप से खुलता ही नहीं।

वहीं, अरविंद भारती ने कहा कि विभागीय स्तर पर कभी भी आंगनबाड़ी केंद्र की जांच नहीं होती, जिससे सेविका मनमानी करती है। उन्होंने प्रशासन से मांग की कि केंद्र की जांच कर बच्चों को शिक्षा व पोषण का अधिकार दिलाया जाए।

शशि गिरी ने भी जोर देकर कहा कि जब केंद्र में दो कर्मचारी नियुक्त हैं, तो वह रोजाना खुलना चाहिए और बच्चों को पोषण व शिक्षा दोनों मिलनी चाहिए।

इस संबंध में बिशुनपुर के अंचल अधिकारी सह सीडीपीओ शेखर वर्मा ने कहा कि बड़का दोहर केंद्र के बंद रहने की उन्हें कोई जानकारी नहीं थी। उन्होंने कहा कि यह गंभीर मामला है, और यदि शिकायत सही पाई जाती है तो सुपरवाइजर से जांच कराकर सेविका पर कार्रवाई की जाएगी।

यह मामला न सिर्फ सरकारी योजनाओं के क्रियान्वयन पर सवाल खड़ा करता है, बल्कि ग्रामीण बच्चों के भविष्य से भी जुड़ा हुआ है। प्रशासन को शीघ्र हस्तक्षेप कर सुधारात्मक कदम उठाने की जरूरत है।

## बाबा सिद्धेश्वर नाथ मंदिर प्रांगण में रामायण कथा का भव्य आयोजन

नवीन मेल संवाददाता

**पालकोट (गुमला)।** पालकोट प्रखंड के पिंजराडीपा स्थित बाबा सिद्धेश्वर नाथ शिव मंदिर प्रांगण में तीन दिवसीय रामायण कथा का भव्य आयोजन किया गया, जिसका शुभारंभ 13 अप्रैल 2025 से हुआ। यह पहला अवसर था जब मंदिर प्रांगण में इस प्रकार का धार्मिक आयोजन हुआ। कथा वाचन के लिए वाराणसी से पधारे पूज्य पुरोहित इंद्र शंकर झा ने भगवान श्रीराम की आदर्शमयी जीवन गाथा, मर्यादा, त्याग और संस्कारों की विस्तारपूर्वक व्याख्या कर श्रद्धालुओं को भावविभोर कर दिया। यह आयोजन बाबा सिद्धेश्वर नाथ नव निर्माण समिति द्वारा आयोजित किया गया, जिसका समापन समारोह आज संपन्न हुआ। आयोजन में स्थानीय सरना सनातनी समाज की विशेष भूमिका रही, जिन्होंने श्रद्धा और समर्पण के साथ कार्यक्रम को सफल बनाने में हरसंभव सहयोग दिया। समिति के सदस्य वसंत साहू और आकाश साहू ने बताया कि यह कार्यक्रम बाबा सिद्धेश्वर नाथ के दरबार में पहली बार हुआ है, और भविष्य में शिव पुराण जैसे अन्य धार्मिक आयोजनों की योजना भी बनाई जा रही है। इसके साथ ही उन्होंने मंदिर के नव-निर्माण कार्य में सभी सरना सनातनी श्रद्धालुओं से सहयोग की अपील की। इस सफल आयोजन में वसंत साहू, आकाश साहू, दिनेश साहू, संदीप साहू, प्रतीप साहू, बिरसा साहू, बलभद्र साहू, अनिरुद्ध साहू समेत दर्जनों स्थानीय ग्रामीणों का सराहनीय योगदान रहा, जिन्होंने तन-मन-धन से इस धार्मिक आयोजन को सफल बनाया। मंदिर प्रांगण में तीन दिन तक भक्तिमय वातावरण बना रहा, श्रद्धालुओं की भारी भीड़ उमड़ी और रामकथा श्रवण कर सभी ने आध्यात्मिक ऊर्जा का अनुभव किया।

सुप्रभात

विचार प्रवाह

गर्व अंधा करने वाला है, यह महान आत्माओं की विशालता की दृष्टि से हमें वंचित रखता है। विनम्रता वह खुला द्वार है जिससे होकर ईश्वर की दया एवं शक्ति की दिव्य बाढ़, ग्रहणशील आत्माओं में प्रेमपूर्वक प्रवाहित होती है। - श्री श्री परमहंस योगानंद

## संपादकीय

### चीन अमेरिका टैरिफ युद्ध और भारत

चीन पर अमेरिका द्वारा टैरिफ थोपने का निर्णय वैश्विक आर्थिक रणनीति में महत्वपूर्ण बदलाव का संकेत है, लेकिन भारत इसका लाभ उठा सकता है। खासकर उच्च तकनीकी और दूसरे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में बीजिंग पर अपनी निर्भरता कम करना ही वाशिंगटन का उद्देश्य है और यही पूरे एशिया में वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला के पुनर्गठन की वजह बन रहा है। यह पुनर्गठन भारत को दुनिया के लिए केंद्रीय विनिर्माण महाशक्ति के रूप में खुद को फिर से स्थापित करने का स्वर्णिम मौका प्रदान करता है। जैसे-जैसे भू-राजनीतिक तनाव बढ़ रहा है, खासकर हिंद-प्रशांत में चीन से अमेरिका का आर्थिक अलगाव भी तेज हो रहा है। भारत अपने विशाल युवा कार्यबल, सुधरते बुनियादी ढांचे और रणनीतिक प्रोत्साहनों के दम पर वैश्विक उत्पादन नेटवर्क का विश्वसनीय विकल्प बनने की क्षमता रखता है। चीन के इलेक्ट्रिक व्हीकल (ईवी), ईवी बैटरी और सेमीकंडक्टर पर टैरिफ सात से 25 फीसदी के बजाय करीब पचास से सौ फीसदी तक या इससे अधिक करने के पीछे ट्रंप प्रशासन का महज संरक्षणवाद नहीं है, यह आर्थिक रूप से व्यवहार्य और राजनीतिक रूप से विश्वसनीय माने जाने वाले साझेदारों की ओर एक सुनियोजित झुकाव भी है और भारत इसमें बिल्कुल फिट बैठता है। भारत ने भी इस बदलाव को देखते हुए गहन ढांचागत सुधारों और लक्षित प्रोत्साहन योजनाओं के जरिये वैश्विक विनिर्माण केंद्र के रूप में उभरने के लिए आधार तैयार कर लिया है। 1.97 लाख करोड़ रुपये के परिव्यय वाली उत्पादन से जुड़ी प्रोत्साहन (पीएलआई) योजना इलेक्ट्रॉनिक्स और ऑटो घटकों से लेकर फार्मास्यूटिकल्स तथा सौर मॉड्यूल जैसे 14 महत्वपूर्ण क्षेत्रों में फैली हुई है। भारत का इलेक्ट्रॉनिक उत्पाद 26.6 फीसदी वृद्धि के साथ 29.1 अरब डॉलर तक पहुंच गया है। एपल ने भारत में आईफोन उत्पादन में नाटकीय रूप से वृद्धि की है, जिसके 2020 के वैश्विक उत्पादन के एक प्रतिशत से बढ़कर 2026 तक 25 प्रतिशत होने की उम्मीद है। एपल के प्रमुख अनुबंध निर्माता फॉक्सकॉन, विस्ट्रॉन और पेगाट्रॉन तमिलनाडु और कर्नाटक में अपना विस्तार कर रहे हैं। सैमसंग, डेल और एचपी जैसी वैश्विक दिग्गज कंपनियां भी भारत में अपनी आपूर्ति श्रृंखलाएं स्थापित कर रही हैं। भारत की आर्थिक बुनियाद उसे चीन का विकल्प बनाती है। चीन के बजाय भारत में श्रम लागत तीस से चालीस फीसदी कम है। साथ ही, भारत की औसत युवा आयु 28.4 वर्ष, तो चीन की 39 वर्ष है, जो उद्योगों के दीर्घकाल के लिए जनसांख्यिकीय लाभांश प्रदान करती है। भारत ने लॉजिस्टिक्स व बुनियादी ढांचे में महत्वपूर्ण उन्नति की है। गति शक्ति, भारतमाला और सागरमाला जैसी प्रमुख पहलों का उद्देश्य लॉजिस्टिक्स लागत में कटौती करना है, जो वर्तमान में सकल घरेलू उत्पाद का लगभग 13-14 फीसदी है, जिसे सात से आठ फीसदी के वैश्विक मानक के करीब लाना है।

*भू-राजनीतिक तनाव बढ़ रहा है, खासकर हिंद-प्रशांत में चीन से अमेरिका का आर्थिक अलगाव भी तेज हो रहा है।*

# 25 साल का झारखंड कहानी किशुनपुर से रांची बनने की

आज की बात

**सुनील बादल**

झारखंड की राजधानी रांची तेजी से विकसित हो रही है पर कभी कहा जाता था 'पीठ में छउवा और मुड़ में खांची...जब देखो तो बूझो रांची।' यह 1917 में ब्रिटिश शासन के दौरान प्रकाशित रांची गजेटियर में लिखा भी है। जिसका अर्थ है कि जब आप महिलाओं की पीठ पर छोटे बच्चे बांधकर सर पर टोकरी लिए किसी महिला को देखिए तो समझ जाइए कि आप रांची पहुंच गए हैं। लगभग 107 साल बाद भी रांची की यह पहचान बनी हुई है। अब भी बाजार में ग्रामीण क्षेत्रों से आईं सब्जी बेचती या मजदूरी करती महिलाओं की पीठ पर छोटे बच्चे बंधे दिख जाते हैं ।रांची नामकरण पर अनेक लोगों ने अपनी राय दी है पर इस गजेटियर के पहले पन्ने में इसका भी उल्लेख है कि 'रांची' नाम की उत्पत्ति अस्पष्ट है। ऐसा माना जाता है कि रांची का नाम मुंडारी के 'अरंची' शब्द से पड़ा। 'अरंची' मुंडारी भाषा में 'हल जोतने' के सामान को कहते हैं, जबकि यह भी कहा जाता है कि 'रिची' नामक पक्षी से रांची का नाम पड़ा। इन 'रिची' पक्षियों का बसेरा पहाड़ी (रांची पहाड़ी मंदिर) के आसपास में था। 1845 तक ब्रिटिश शासन में इस क्षेत्र का प्रशासन लोहरदगा से संचालित होता था।गजेटियर में चर्चा है कि रांची का पुराना नाम किशुनपुर था । 1845 में 'किशुनपुर' को लोहरदगा से अलग कर दिया। बाद में 'किशुनपुर' ही रांची हो गया।100 साल पहले रिची पहाड़ी (अब रांची पहाड़ी मंदिर) की कुछ पुरानी फोटो मौजूद है। जिसमें ये साफ नजर आता है कि आज जिस शहर की आबादी 15 लाख से अधिक हो गई है, तब इस शहर के आसपास की आबादी कुछ हजार में थी।गिने चुने लोगों की आपस में जान पहचान हुआ करती थी जबकि अभी इसने महानगर का रूप लेना शुरू कर दिया है और अभी राजधानी रांची के जिस मेन रोड में पैदल चलता कठिन है, पहले इस सड़क पर दो-चार लोगों का दिखना भी मुश्किल था।आज के रातू रोड के व्यस्ततम इलाके में चार दशक पहले तक एकलवा आम हुआ करता था और लोग शाम में जाने से डरते थे । 1845 में जब लोहरदगा से किशुनपुर को किया गया, उस वक्त तक रांची नाम की कोई जगह नहीं थी। तब यहां केवल दो-चार गांव थे। जिसमें चुटिया, सिरोमटोली, चडरी, पिठौरिया और पत्थलकुदवा शामिल था। बाद में अपर बाजार और डोरंडा समेत अन्य इलाकों लोग बसे। आधिकारिक रूप से 1899 में जिला बना और इसे रांची कहा गया।रांची शहर के पुराने निवासी अरविंद लाल बताते है कि 1947 में देश की आजादी तक शहर का स्वरूप ज्यादा बड़ा नहीं था। पुरानी रांची और रांची झील से पश्चिम में थोड़ी बहुत आबादी थी। जबकि चुटिया और बहू बाजार बाजार का मुख्य केंद्र था। वहीं ब्रिटिशकाल में बड़ी संख्या में बंगाली समुदाय के लोग थड़पखना, वर्द्धमान कम्पाउंड और कांके रोड में बस गए। गुदरी आजाद बस्ती में मोची और सफाई कर्मी रहते थे। पुरानी रांची को आधुनिक रांची बनाने में बंगाली समाज का बहुत योगदान रहा। विशेषकर डॉक्टर और शिक्षाविदों की बड़ी भूमिका रही। इसके अलावा आजादी के पहले से ही रांची में बड़ी संख्या में गुजराती और कच्छी समाज के संपन्न व्यवसायी रांची में रहते थे। लेकिन अपनी दूरदर्शिता की वजह से वे दुर्ग-भिलाई में कल-कारखाने खुलने पर वहां जाकर बस गए।आज से करीब डेढ़ सौ साल पहले रांची में उद्योग धंधे नहीं थे। सरकारी नौकरियों की संख्या भी सीमित थी। उस वक्त प्राईवेट क्षेत्र में भी नौकरियां नहीं के बराबर थी। पूरी अर्थव्यवस्था कृषि और व्यवसाय पर निर्भर थी। शहर में अलग-अलग पेशा के कई स्थायी केंद्र थे। किराना, कपड़ा, ज्वेलरी, लोहा और हार्डवेयर के लिए अपर बाजार केंद्र था। लोहरा कोचा और चडरी में लोहरा समाज बहुतायत में थे। उस समय रंग रोगन के लिए चूना ही चलता था। जबकि भवन निर्माण के लिए भी चूना का उपयोग सीमेंट की जगह होता था। इसका भट्ठा कोकर और पहाड़ी मंदिर के पीछे इरगु टोली में था।

चर्च रोड, दुर्गा मंदिर के पीछे चूना और नील का सबसे बड़ा बाजार होता था। अभी कुछ लोग डिस्टेंपर और ब्रांडेड रंग के दौर में भी किसी प्रकार इसी से अपनी जीविका चला रहे हैं।अपर बाजार, पुराना जेल के पहले ढिबरी पट्टी में ढिबरी, लालटेन, टिन के बक्सों का निर्माण और बिक्री होता था। कांसा, पीतल के बर्तनों की बिक्री और पॉलिस के लिए चर्च रोड, काली मंदिर रोड प्रसिद्ध था। सदर अस्पताल प्रमुख चिकित्सा सेवा और बेहतर सुविधा का केंद्र था। सुदूर गांवों से लेकर झालदा और पुरुलिया तक के मरीज यहां आते थे। मानसिक रोगियों के लिए तो कांके स्थित केंद्रीय मनः चिकित्सा संस्थान को पूरे देश में अब भी प्रसिद्ध है। अपर बाजार क्षेत्र में नस बैठाने वाले और छोटी-मोटी चिकित्सा के लिए चांदसी डॉक्टर भी मिल जाते थे। पिठौरिया भी स्वर्णकारों और कुर्मी-महतो समाज का बड़ा गढ़ था।

1790 के बाद से झारखंड के कई आदिवासी बहुल इलाकों में ईसाई मिशनरियों का आगमन हो चुका था। ईसाई मिशनरियों की ओर से धर्म प्रचार के साथ ही स्वास्थ्य और शिक्षा के क्षेत्र में सुदूरवर्ती ग्रामीण क्षेत्रों में कई काम शुरू किए गए। रांची में ईसाई मिशनरियों की ओर से कई स्कूल-कॉलेज स्थापित किए गए। जिसके कारण रांची धीरे-धीरे शिक्षा का प्रमुख केंद्र बनता गया। यही कारण है कि 100 साल पहले जब आदिवासी समाज में पढ़ाई-लिखाई का कोई खास महत्व नहीं था। लेकिन सुदूरवर्ती गांव में स्कूल की सुविधा उपलब्ध होने के कारण उनकी सोच में बदलाव आया। अब उनकी तीन-चार पीढ़ियां पढ़-लिख चुकी है। वे भी शिक्षा के महत्व को समझने लगे है।15 नवंबर 2000 को अलग झारखंड राज्य गठन के बाद रांची के स्वरूप में तेजी से बदलाव आया। पिछले 24 सालों के दौरान रांची शहर का तेजी से विस्तार हो रहा है। अब पड़ोसी जिले खूंटी, रामगढ़ और रामगढ़ शहर तक आबादी का विस्तार होता जा रहा है। शहर की आबादी में कई गुणा बढ़ोतरी होने से यातायात व्यवस्था पर भी प्रभाव पड़ा है। शहर के अधिकांश प्रमुख सड़कों पर लोगों को जाम से जूझना पड़ रहा है। हालांकि अभी रांची में तीन फ्लाईओवर भी बन रहे है, जिससे स्थिति में बड़े परिवर्त्तन की उम्मीद है। बड़ा सवाल अभी भी यह है कि अनपढ़,असंगठित और आम झारखंडी अभी भी हाशिए पर क्यों है और कब उसे भ्रष्टाचार से मुक्ति मिलेगी ?

### नेताजी की नाक और लोकतंत्र की राख

आपकी बात

**डॉ. सुरेश कुमार मिश्रा**

नेताजी की नाक केवल एक साधारण नाक नहीं थी, बल्कि इतिहास के सुनहरे पन्नों में दर्ज होने योग्य थी। गाँव के बुजुर्गों का कहना था कि जब नेताजी पहली बार चुनाव लड़े थे, तब उनकी नाक एकदम सामान्य थी—छोटी, संतुलित, और इंसानी सीमाओं के भीतर। लेकिन जैसे-जैसे उनके कार्यकाल बढ़ते गए, वैसे-वैसे उनकी नाक भी लंबी होती चली गई। यह कोई रहस्य नहीं था बल्कि उनकी राजनीतिक सफलता का प्रत्यक्ष प्रमाण था। इतिहासकारों ने तो यहाँ तक सिफारिश कर दी थी कि इस नाक को 'राष्ट्रीय धरोहर' घोषित कर देना चाहिए, ताकि आने वाली पीढ़ियाँ देख सकें कि कैसे राजनीति केवल विचारों से नहीं, बल्कि नाक की लंबाई से भी प्रभावित होती है।

जब किसी पत्रकार ने उनसे पूछ लिया कि "नेताजी, आपकी नाक इतनी लंबी कैसे हो गई?" तो नेताजी ने मुस्कुराते हुए कहा, "जनता के प्यार से!" यह सुनकर जनता हैरान रह गई। कोई यह कहने की हिम्मत नहीं जुटा पाया कि असल में नेताजी की नाक उनके किए गए वादों की लंबाई से मेल खाती थी। जितने वादे, उतनी लंबी नाक! यह नाक एक जीवंत स्मारक बन चुकी थी, जो याद दिलाती थी कि राजनीति में अनुभव केवल काम करने से ही नहीं, बल्कि वादे करने और उन्हें तोड़ने से भी बढ़ता है। नेताजी के पास हर समस्या का समाधान था—बस समस्या का नाम मत लीजिए! अगर किसी गाँव में पानी नहीं आ रहा तो नेताजी कहते, "भाई, पानी नहीं आ रहा, इसका मतलब यह नहीं कि व्यवस्था खराब है। इसका मतलब यह है कि हमारे जल स्रोत सुरक्षित हैं। हम जल संरक्षण को बढ़ावा दे रहे हैं।" बिजली नहीं आती तो उनका जवाब होता, "सरकार जनता को आत्मनिर्भर बनाना चाहती है। मोमबत्ती जलाइए, बचपन की यादें ताजा कीजिए।" जब किसी ने उनसे पूछा कि अस्पतालों में डॉक्टर नहीं हैं, तो उनका जवाब था, "हमने जनता को मजबूत बनाने का प्रण लिया है। बीमारियाँ खुद ही ठीक होने दें, शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाएँ।" इस तर्क में इतनी मजबूती थी कि विरोधियों को भी उनके तर्कशास्त्र के आगे झुकना पड़ता था। चुनाव नजदीक आते ही नेताजी के भाषण और भी चमत्कारी हो जाते। एक दिन जब उन्होंने जनता को संबोधित किया तो बोले, "हमने पाँच सालों में इतने विकास किए हैं कि अगर आप गिनने बैठें तो उंगलियाँ कम पड़ जाएँगी।" जनता ने सवाल किया, "नेताजी, बताइए, कौन-कौन से विकास हुए?" नेताजी मुस्कुराए, चश्मा ठीक किया और बोले, "पहला विकास – हमारी पार्टी मजबूत हुई। दूसरा – हमारा परिवार समृद्ध हुआ।

**(ये लेखक के निजी विचार हैं।)**

## समझदारी : एक पेंडिंग अपडेट जो कभी डाउनलोड नहीं होती

समझदारी आई ही नहीं - उम्र अकेली ही चली आई

अलग बात

**प्रो. आरके जैन**

कहते हैं उम्र के साथ समझदारी आती है। लेकिन हमारे यहाँ उम्र सिर्फ़ चश्मे का नंबर, बालों की सफेदी और घुटनों का दर्द लाती है। समझदारी? वो तो बचपन में ही किसी सरकारी योजना की तरह "लॉन्च" होकर गायब हो जाती है। जिम्मेदारी और उम्र का रिश्ता भी अजीब है-कभी दोनों गलबहियाँ डालकर चलते हैं, कभी एक-दूसरे से आँखें चुराते हैं। और इस आँख-मिचौली में जिंदगी बस तमाशबीन बनी तालियाँ बजाती रहती है। ज़रा गुड्डू को देखिए। चौदह साल की उम्र, लेकिन जिंदगी का टाइमटेबल किसी ग्लोबल कंपनी के सीईओ को भी मात दे। सुबह साइकिल पर अखबार बाँटता है, मानो हाई-स्पीड डिलीवरी ड्रोन पर सवार हो, दिन में स्कूल की बेंच घिसता है, , जहाँ टीचर "पढ़ाई करो, जिम्मेदार बनो" का प्रवचन देते हैं और रात को माँ का सिर दबाकर सुलाता है, जैसे 24x7 स्टार्टअप का वन-मैन-आर्मी हो, क्योंकि "बाबूजी ने तो कब का फोन स्विच ऑफ कर लिया"। पूछो तो मासूमियत से कहेगा, "जिम्मेदारी ने पकड़ लिया, भैया।" मानो जिम्मेदारी कोई पुलिसवाला हो, जो बिना वारंट धर दबोच ले। गुड्डू की उम्र में बच्चे जहाँ पबजी खेलते हैं, वहाँ ये जिंदगी का "सर्वाइवल मोड" खेल रहा है। अब दूसरी तरफ हैं हमारे प्रदीप चाचाजी। उम्र 60 पार, सरकारी नौकरी से रिटायर्ड, पेंशन की गंगा बह रही है। लेकिन जिम्मेदारी? वो तो उनके लिए "अननोन कॉलर" है, जिसे वो बार-बार रिजेक्ट कर देते हैं। गैस सिलेंडर बुक करना हो तो बीवी को पुकारते हैं-"सुनो, वो मोबाइल में कुछ कर दो न!" यूपीआई, ओटीपी, ऑनलाइन बिल पेमेंट-ये सब उनके लिए एलियन टेक्नोलॉजी है। लेकिन फेसबुक? वहाँ सुबह 6:30 बजे "गुड मॉर्निंग" के साथ गुलाब की फोटो और "ज़िंदगी दो पल की, जी लो" वाला स्टेटस डालने में पीएचडी कर रखी है। व्हाट्सएप पर "फॉरवर्डेड मेनी टाइम्स" वाले मैसेज की स्पीड देखकर तो लगता है, चाचाजी 5जी नेटवर्क पर चल रहे हैं। जिम्मेदारी इनके दरवाजे तक दस्तक देती है, पर चाचाजी "नॉट होम" का बोर्ड लगाकर अखबार फड़फड़ाते हुए चाय की चुस्कियाँ लेते रहते हैं। यहाँ जिम्मेदारी भी तो ऑनलाइन शॉपिंग की तरह है। किसी को बिना ऑर्डर किए ही थमा दी जाती है, जैसे गुड्डू को। और किसी को बार-बार रिक्वेस्ट करने पर भी "आउट ऑफ स्टॉक" का मैसेज मिलता है, जैसे चाचाजी को। छोटे बच्चों को देखकर जिम्मेदारी का दिल पसीज जाता है-"लो, तुम ही संभाल लो ये बोझ, तुम्हारे बाप-दादा तो रील्स बनाने में व्यस्त हैं।" और कुछ बुजुर्गों को देखकर वो शर्म से पानी-पानी हो जाती है-"इतने साल हो गए, अब भी नहीं संभाल सकते? ठीक है, बच्चों को ही दे देते हैं।" ये जिम्मेदारी भी न, व्यक्ति देखकर आती है। कुछ को गले का हार बनकर गले पड़ती है, और कुछ के लिए वो "रिटर्न पॉलिसी" वाला पैकेज है, जिसे वो तुरंत डिलीवरी बॉय को लौटा देते हैं। हमारे देश में दो ही चीज़ें टाइम से पहले आती हैं-बालों में सफेदी और जिम्मेदारी। बाकी सब तो सरकारी स्कीम की तरह—घोषणा जोर-शोर से, डिलीवरी अगले जन्म में। लोग जिम्मेदारी से ऐसे भागते हैं जैसे रिश्तेदार की शादी में "नेग" देने से। "अरे, अब इस उम्र में क्या!" मानो जिम्मेदारी कोई फिटनेस चैलेंज हो और उम्र उनका मेडिकल सर्टिफिकेट। कुछ लोग तो जिम्मेदारी को देखकर वैसे ही मुकर जाते हैं, जैसे ऑनलाइन ऑर्डर का सामान देखकर-"ये तो माँगा ही नहीं था!" जिम्मेदारी के भी अपने टाइप हैं। कुछ जिम्मेदारियाँ "डिज़र्व" की जाती हैं, जैसे गुड्डू अपनी माँ की देखभाल करता है। कुछ को "डेलिगेट" कर दिया जाता है, जैसे चाचाजी सारा काम बीवी पर डाल देते हैं। और कुछ तो जिम्मेदारी को कचरे की पेटी में डंप करने के चैंपियन हैं, जैसे वो पड़ोसी, जो मोहल्ले की मीटिंग में बड़े-बड़े वादे करते हैं, मगर सफाई अभियान का वक्त आए तो "बुखार चढ़ गया" का बहाना मारकर गायब हो जाते हैं। समाज में जिम्मेदारी का बोझ भी अजीब तरह से बँटता है। बच्चों को स्कूल बैग के साथ-साथ घर का बोझ भी ढोना पड़ता है। जवानों को नौकरी, शादी, बच्चों की परवरिश—सब एक साथ संभालना पड़ता है। और बुजुर्ग? वो तो "हमने तो अपना समय देख लिया" कहकर पार्क में टहलने निकल लेते हैं। फिर भी दुनिया कहती है, "उम्र के साथ समझदारी आती है।" अरे भाई, यहाँ उम्र के साथ सिर्फ़ हड्डियों का दर्द, आँखों का धुंधलापन और "वो पुरानी बात याद नहीं आ रही" वाला बहाना आता है। जिम्मेदारी निभाने की नीयत? वो तो जन्मकुंडली में ही नहीं लिखी होती।

**(ये लेखक के निजी विचार हैं।)**

### फेसबुक वॉल से

### एक्स से

### आज का दोहा

दरिया जैसी उम्र है, लहरें, भंवर हजार।
काया ढोकर चल रही, जैसे चलें कहार।।

**सोमदत्त शर्मा, गाजियाबाद (उ.प्र.)**

### रचना भेजिए

समाचारों के संबंध में शिकायत या इस पेज के लिए आर्टिकल कृप्या भेजें artical.rnmail@gmail.com
कॉल/व्हाट्सएप 8292553444

**संपादक**

## देश में समाप्त होने के कगार पर नक्सलवाद

देश की बात

**रमेश सर्राफ धमोरा**

पिछले छः दशकों से देश में नासूर बनकर उभरा नक्सलवाद अब समाप्त होने की कगार पर पहुंच गया है। देश के गृहमंत्री अमित शाह ने संसद में घोषणा की है कि 31 मार्च 2026 तक देश में नक्सलवाद को समाप्त कर दिया जाएगा। गृह मंत्री द्वारा की गई यह एक बहुत बड़ी घोषणा है। गत 60 वर्षों से देश नक्सलवाद की समस्या से बुरी तरह पीड़ित रहा है। इस दौरान देश में कई सरकारें आई और चली गई मगर नक्सलवाद का नासूर दिनों-दिन बढ़ता ही रहा था। देश के कई प्रदेशों में तो बहुत बड़े हिस्से में नक्सलवादी अपनी समानांतर सरकार तक चलाते थे। नक्सलवाद प्रभावित जिलों में उनकी हुकूमत चलती थी। वहां केंद्र व राज्य सरकार का कोई असर नहीं दिखता था। नक्सलियों का फरमान ही अंतिम आदेश होता था जिसे लोग मानने को मजबूर थे। मगर अब परिस्थितियों पूरी तरह बदल चुकी है। केंद्र सरकार की नक्सलवाद से मुक्ति के अभियान की सफलता से नक्सलवाद अपनी अंतिम सांसे गिन रहा है। कई बड़े-बड़े नक्सली कमांडर सुरक्षा बलों से मुठभेड़ में ढेर हो चुके हैं या फिर उन्होंने सरेंडर कर अपनी जान बचा ली है। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने पिछले दिनो कहा कि नक्सलवाद मुक्त भारत के निर्माण की दिशा में एक बड़ा कदम उठाते हुए भारत ने वामपंथी उग्रवाद से अति प्रभावित जिलों की संख्या 12 से घटाकर 6 कर दिया है। शाह ने नक्सलवाद को खत्म करने के लिए मोदी सरकार के दृष्टिकोण पर रोशनी डालते हुए और सभी क्षेत्रों में विकास को बढ़ावा देने के लिए देश की प्रतिबद्धता पर जोर देते हुए कहा था कि मोदी सरकार सर्वव्यापी विकास के लिए अथक प्रयासों और नक्सलवाद के खिलाफ दृढ़ रुख के साथ सशक्त, सुरक्षित और समृद्ध भारत बनाने के लिए दृढ़ संकल्पित है। हम 31 मार्च 2026 तक नक्सलवाद को जड़ से उखाड़ फेंकने के लिए प्रतिबद्ध हैं। गृह मंत्रालय के अनुसार भारत में नक्सलवाद से प्रभावित जिलों की कुल संख्या पहले 38 थी। इनमें से सबसे अधिक प्रभावित जिलों की संख्या अब घटकर 6 हो गई है। साथ ही चिंता के जिलों और अन्य वामपंथी उग्रवाद प्रभावित जिलों की संख्या में भी कमी आई है। नक्सलवाद से सबसे अधिक प्रभावित छह जिलों में अब छत्तीसगढ़ में चार जिले बीजापुर, कांकेर, नारायणपुर और सुकमा झारखंड का पश्चिमी सिंहभूम जिला व महाराष्ट्र का गढ़चिरौली जिला शामिल है। इसके अतिरिक्त चिंता के जिलों की संख्या जिन्हें गहन संसाधनों और ध्यान की आवश्यकता है 9 से घटकर 6 रह गई है। ये जिले आंध्र प्रदेश में अल्लूरी सीताराम राजू, मध्य प्रदेश में बालाघाट, ओडिशा में कालाहांडी, कंधमाल और मलकानगिरी और तेलंगाना में भद्राद्री-कोठागुडेम हैं। अन्य वामपंथी उग्रवाद प्रभावित जिलों की संख्या जो नक्सली गतिविधि का भी सामना कर रहे हैं लेकिन कम हद तक 17 से घटकर 6 हो गई है। इनमें छत्तीसगढ़ के दंतेवाड़ा, गरियाबंद और मोहला-मानपुर-अंबागढ़ चैकी, झारखंड का लातेहार, ओडिशा का नुआपाड़ा और तेलंगाना का मुलुगु जिला शामिल हैं। इन जिलों को उनके पुनर्निर्माण और विकास में सहायता करने के लिए केंद्र सरकार विशेष केंद्रीय सहायता (एससीए) योजना के तहत वित्तीय सहायता प्रदान करती है। सबसे अधिक प्रभावित जिलों को 30 करोड़ रुपये मिलते हैं। जबकि सार्वजनिक बुनियादी ढांचे में अंतराल को भरने के लिए चिंता वाले जिलों को 10 करोड़ रुपये आवंटित किए जाते हैं। इन क्षेत्रों की जरूरतों के अनुरूप विशेष परियोजनाओं को भी सरकार द्वारा वित्त पोषित किया जाता है। नक्सलवाद के खिलाफ जीरो टॉलरेंस की नीति के चलते वर्ष 2025 में अब तक केंद्रीय गृह मंत्रालय द्वारा तैयार किए गए आंकड़ों के अनुसार छत्तीसगढ़ में मुठभेड़ों में कम से कम 130 नक्सली मारे गए हैं। इनमें से 110 से ज्यादा बस्तर संभाग में मारे गए जिसमें बीजापुर और कांकेर समेत सात जिले शामिल हैं। देश के विभिन्न हिस्सों से 105 से अधिक नक्सलियों को गिरफ्तार किया गया और 2025 में अब तक 164 ने आत्मसमर्पण कर दिया है। वहीं इससे पहले वर्ष 2024 में 290 नक्सलियों को न्यूट्रलाइज किया गया था 1090 को गिरफ्तार किया गया और 881 ने आत्मसमर्पण किया था। अभी तक कुल 15 शीर्ष नक्सली नेताओं को न्यूट्रलाइज किया जा चुका है। वर्ष 2014 तक कुल 66 फोर्टिफाइड पुलिस स्टेशन थे जबकि मोदी सरकार के पिछले 10 साल के कार्यकाल में इनकी संख्या बढ़कर 612 हो गई है। इसी प्रकार, 2014 में देश में 126 जिले नक्सलप्रभावित थे लेकिन 2024 में सबसे अधिक प्रभावित जिलों की संख्या घटकर मात्र 12 रह गई है। पिछले 5 वर्षों में कुल 302 नए सुरक्षा कैंप और 68 नाइट लैंडिंग हेलीपैड्स बनाए गए हैं। केंद्रीय गृह मंत्रालय के अनुसार वर्ष 2004 से 2014 तक देश में नक्सलवाद से जुड़ी 16,463 हिंसक घटनाएं हुई थीं। लेकिन पिछले 10 वर्षों में इसमें 53 प्रतिशत कमी आई है। वर्ष 2004 से 2014 तक विभिन्न नक्सली हमलों और नक्सल विरोधी अभियानों के दौरान 1851 सुरक्षा कर्मियों की जान गई थी। लेकिन पिछले 10 साल में सुरक्षाबलों के हताहत होने की संख्या 73 प्रतिशत घटकर 509 रह गई है।

**(ये लेखक के निजी विचार हैं।)**

स्वामी, परिजात माइनिंग इण्डस्ट्रीज (इण्डिया) प्रा. लि. के लिए प्रकाशक एंव मुद्रक हर्षवर्द्धन बजाज द्वारा इसके पब्लिकेशन डिवीजन, रेड़मा मेदिनीनगर (डालटनगंज), से प्रकाशित एवं एस एच प्रिंटर्स प्राइवेट लिमिटेड (पूर्व में शिवासाई पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड), नियर टेंडर बागीचा पेट्रोल पम्प, रातू, रांची-835222, झारखंड द्वारा मुद्रित. रजिस्ट्रेशन नं. RNI.61316/94 पोस्टल रजिस्ट्रेशन नं.-13 । प्रधान संपादक : सुरेश बजाज, संपादक : हर्षवर्द्धन बजाज, कार्यकारी संपादक : सुनील सिंह 'बादल', स्थानीय संपादक : राणा अरुण सिंह*, प्रेस कार्यालय : रांची रोड, रेड़मा, मेदिनीनगर, (डालटनगंज) पलामू-822102, फोन नम्बर : 06562-796018, रांची कार्यालय : 502बी, पांचवी मंजिल मंगलमूर्ति हाईट्स, रानी बगान, हरमू रोड, रांची-834001, फोन नं.- 0651-3553943, लोहरदगा कार्यालय : सरस्वती निवास, तेली धर्मशाला के सामने, कृषि मार्केट, लोहरदगा। - फोन : 7903891779, ई-मेल : news.rnmail@gmail.com, article.rnmail@gmail.com (*पीआरबी अधिनियम के तहत खबरों के चयन के लिए जिम्मेवार।)

# मोक्ष नगरी का पिशाच मोचन कुंड
# जहां भटकती आत्माओं को मिलती है मुक्ति

**एजेंसी। वाराणसी**

"नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि" गीता में श्रीकृष्ण बताते हैं कि आत्मा अजर है, अमर है। लेकिन अकाल मृत्यु होने वाले इंसान की आत्मा वर्षों भटकती रहती है। बाबा श्री काशी विश्वनाथ के त्रिशूल पर टिकी नगरी में भटकती आत्मा को भी मोक्ष मिल जाता है। जी हां! गरुण पुराण के काशी खंड में पिशाच मोचन कुंड का उल्लेख मिलता है, जहां पितरों को प्रेत बाधा और अकाल मृत्यु से मुक्ति मिलती है। यहां पर आत्माओं का उधार भी चुकाया जाता है।

बता दें, मोक्षनगरी काशी देश का इकलौता शहर है, जहां अकाल मृत्यु और अतृप्त आत्माओं की शांति के लिए त्रिपिंडी श्राद्ध किया जाता है। मान्यता है कि यहां पर आत्माओं का उधार भी चुकाया जाता है। पीपल के पेड़ पर सिक्का रखकर पितरों का उधार चुकाया जाता है। पिशाच मोचन कुंड के बारे में जानकारी देने से पहले काशी के ज्योतिषाचार्य, यज्ञाचार्य एवं वैदिक कर्मकांडी पं। रत्नेश त्रिपाठी ने बताया कि त्रिपिंडी श्राद्ध क्या होता है? उन्होंने बताया, "पिछली तीन पीढ़ियों के पूर्वजों का पिंडदान करने को त्रिपिंडी श्राद्ध या पिंडदान कहते हैं। इस पूजन में ब्रह्मा, विष्णु और शिव की प्रतिमाओं की प्राण प्रतिष्ठा करके पूजन किया जाता है। मान्यता है कि पूर्वज की असंतुष्ट आत्मा आने वाली पीढ़ियों के सुख में बाधा डालती है। ऐसे में इन आत्माओं को शांत करने के लिए त्रिपिंडी श्राद्ध किया जाता है। पिशाच मोचन कुंड के बारे में विस्तार से जानकारी देते हुए रत्नेश त्रिपाठी ने बताया, "गरुण पुराण के काशीखंड में वर्णित है कि पवित्र गंगा नदी के धरती आगमन से पहले ही पिशाच मोचन कुंड का अस्तित्व था। कुंड के पास पीपल का एक पुराना वृक्ष है और इसी पर भटकती आत्माओं को बैठाया जाता है। उनका ऋण उतारने के लिए वृक्ष पर सिक्का भी बांधा जाता है। इस कर्म से पितरों के सभी उधार उतर जाते हैं और वे बाधाओं से मुक्त होकर मोक्ष की प्राप्ति कर लेते हैं। पं. रत्नेश त्रिपाठी ने आगे बताया, "किसी व्यक्ति की अकाल या असामयिक मृत्यु हो जाती है तो उसकी आत्मा भटकती रहती है। ऐसे में उन आत्माओं को मोक्ष पिशाच मोचन कुंड दिलाता है। कुंड का नाम कैसे पड़ा? इसके पीछे भी कथा है। पिशाच मोचन कुंड का नाम पिशाच नाम के व्यक्ति से पड़ा था, जिसने कई पाप किए थे। हालांकि, इसी जगह पर उसे मोक्ष मिला था। जिनके घर में अकाल मृत्यु होती है, उनके परिजन यहां पर विशेष पूजन, तर्पण करते हैं। काशी के निवासी और पुजारी ज्ञानेश्वर पाण्डेय ने बताया, "पिशाच मोचन कुंड को 'काशी का विमल तीर्थ' भी कहते हैं, जो अति प्राचीन है।

# वक्फ कानून धार्मिक नहीं, मुल्क का कानून है : मुख्तार अब्बास नकवी

**नई दिल्ली (आईएएनएस)**

भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के वरिष्ठ नेता मुख्तार अब्बास नकवी ने शुक्रवार को वक्फ कानून का विरोध करने वालों पर तंज कसा। उन्होंने कहा है कि वक्फ कानून किसी मजहब का कानून नहीं है। भाजपा नेता ने वीडियो बयान में कहा कि वक्फ की लूट पर वैधानिक छूट चाहने वाली लूट की लंपट लामी लामबंद हुई है। उन्होंने कहा कि वक्फ कानून धार्मिक कानून नहीं है। यह संवैधानिक कानून है, यह मुल्क का कानून है। यदि आप मुल्क के कानून में भी मजहब के हिसाब से एंट्री और नो एंट्री का बोर्ड लगाएंगे, तो यह न समाज के लिए अच्छा है और न ही संवैधानिक सिद्धांत के लिए अच्छा है, बल्कि समाज के बिखराव और टकराव की भावनाओं को बढ़ाने वाला है। उन्होंने आगे कहा कि अफसोस की बात है कि कुछ लोग हर सांप्रदायिक फसाद में सियासी मफाद की तलाश करते हैं। उन्होंने कहा कि वक्फ का जो संशोधन हुआ है, यह धार्मिक आस्था के संरक्षण और प्रशासनिक व्यवस्था के सुधार का है। यह मजहब का नहीं, मुल्क का कानून है। बता दें कि मुख्तार अब्बास नकवी ने बुधवार को वक्फ कानून को लेकर पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी और कांग्रेस पार्टी पर जुबानी हमला बोला था।

उन्होंने समाचार एजेंसी आईएएनएस से बात करते हुए ममता सरकार पर आरोप लगाया था कि वह राज्य में बढ़ती सांप्रदायिक हिंसा को नजरअंदाज कर रही हैं और क्रिमिनल-कम्युनल-क्रूर कारीगरों के हाथों की कठपुतली बन चुकी हैं। नकवी ने कांग्रेस और गांधी परिवार पर भी जुबानी हमला बोला था। नेशनल हेराल्ड केस में प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) के सोनिया गांधी और राहुल गांधी के खिलाफ चार्जशीट दाखिल किए जाने के बाद कांग्रेस की ओर से किए जा रहे विरोध प्रदर्शन पर भी नकवी ने टिप्पणी की थी।

## सुप्रीम कोर्ट की आलोचना गलत, कानून संविधान से चलता है : संदीप दीक्षित

कांग्रेस नेता संदीप दीक्षित ने शुक्रवार को समाचार एजेंसी आईएएनएस से खास बातचीत में उपराष्ट्रपति के एक हालिया बयान और वक्फ संशोधन कानून पर सुप्रीम कोर्ट के रुख पर टिप्पणी की। इसके अलावा, उन्होंने पश्चिम बंगाल के मुर्शिदाबाद में हुई हिंसा को लेकर भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) पर सवाल उठाए। उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने हाल ही में कहा था कि कई मामलों में सुप्रीम कोर्ट 'सुपर संसद' की तरह व्यवहार कर रही है। इस पर प्रतिक्रिया देते हुए संदीप दीक्षित ने कहा कि उपराष्ट्रपति का यह कहना दुर्भाग्यपूर्ण है। उन्हें शायद संविधान पढ़ना चाहिए। सुप्रीम कोर्ट को यह अधिकार है कि वह यह देखे कि कोई कानून संविधान की भावना के खिलाफ तो नहीं है। अगर किसी व्यक्ति को लगता है कि कानून असंवैधानिक है, तो वह कोर्ट जा सकता है, और कोर्ट उस पर सुनवाई कर सकती है। उपराष्ट्रपति भी एक संवैधानिक पद है, और सुप्रीम कोर्ट भी। दोनों की मर्यादा है, लेकिन अदालत की आलोचना करना संवैधानिक जिम्मेदारी के खिलाफ है। वोरा समाज द्वारा प्रधानमंत्री से मुलाकात कर वक्फ संशोधन कानून की प्रशंसा किए जाने पर संदीप दीक्षित ने कहा कि उन्हें इस मामले की जानकारी नहीं है।

## वक्फ कानून से मुस्लिम समुदाय खुश कब्जाधारी परेशान : अरुण सिंह

**मुंबई (आईएएनएस)।** भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव अरुण सिंह ने शुक्रवार को समाचार एजेंसी आईएएनएस से खास बातचीत में दाऊदी बोहरा समुदाय के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का वक्फ कानून को लेकर जताए आभार पर प्रतिक्रिया दी। साथ ही उन्होंने नेशनल हेराल्ड केस में प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) की जांच और रॉबर्ट वाड्रा से पूछताछ पर भी तल्ख टिप्पणी की। अरुण सिंह ने कहा कि मुस्लिम संगठनों की ओर से लगातार पत्र भेजे जा रहे हैं, वे इस कानून का स्वागत कर रहे हैं। यह कानून उनके जीवन में बदलाव ला रहा है। जो लोग जमीन पर अवैध **कब्जा** करते हैं, केवल वही इससे परेशान हैं, बाकी सामान्य मुस्लिम समुदाय इससे बहुत खुश है। एक उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा कि 2015 में मुंबई के भिंडी बाजार में किसी ने जमीन खरीदी थी, लेकिन 2019 में किसी तीसरे व्यक्ति ने दावा कर दिया कि यहां नमाज पढ़ी जाती थी, इसलिए जमीन उसकी होनी चाहिए। इस तरह की लाखों शिकायतें प्रधानमंत्री मोदी को भेजी गईं। इन्हीं बातों को ध्यान में रखते हुए यह कानून लाया गया, ताकि बेगुनाहों को न्याय मिल सके। नेशनल हेराल्ड मामले में ईडी की कार्रवाई और रॉबर्ट वाड्रा से पूछताछ पर टिप्पणी करते हुए अरुण सिंह ने कहा कि सोनिया गांधी और राहुल गांधी आज बेल पर हैं।

## बड़े शहरों के सोसायटी में रहने वालों के मेंटेनेंस टैक्स पर लगेगी जीएसटी

**नवीन मेल संवाददता**

**दिल्ली।** राजधानी दिल्ली से लेकर नोएडा या देश के बड़े शहरों की सोसायटियों में रहने वाले लोगों के बारे में केंद्रीय अप्रत्यदक्ष कर एवं सीमा शुल्कं बोर्ड ने एक सर्कुलर जारी कर कहा है कि हाउसिंग सोसायटी की ओर से हर महीने लिए जाने वाले मेंटेनेंस टैक्स के साथ अब लोगों को जीएसटी का भुगतान करना होगा। हाउसिंग सोसायटी, हाईराइज सोसाइटी व बड़े शहरों के नगर निगम के तहत सोसायटी के घरों के लिए ये सर्कुलर लागू होगा ।बोर्ड ने इस संबंध में सर्कुलर जारी कर बताया कि जिन हाउसिंग सोसायटी की ओर से हर महीने 7,500 रुपये से ज्याीदा मेंटेनेंस वसूला जाता है। अब इस राशि के साथ 18 फीसदी जीएसटी भी देना होगा। यानी हर फ्लैट से अब नौ हजार रुपये की राशि मेंटेनेंस के तौर पर वसूली जाएगी। बोर्ड के सर्कुलर की मानें तो मेंटेनेंस पर जीएसटी को 2019 से लागू किया जा चुका है। कई सोसायटी में इसे लेकर कन्फ्यूजन की स्थिति है। ऐसे में ये नया सर्कुलर जारी किया गया है जिसमें बोर्ड ने स्पष्ट किया है कि उन सभी को जीएसटी का भुगतान करना होगा जिनका मेंटेनेंस 7500 से अधिक है। इसके साथ ही सोसायटी का सालाना टर्नओवर भी 20 लाख से अधिक होना चाहिए। अगर इनमें से कोई एक शर्त भी पूरी नहीं होती है तो सोसायटी पर जीएसटी लागू नहीं होगा ।सोसायटी की मेंटेनेंस में मरम्मत, रखरखाव फीस शामिल है। इसमें कार पार्किंग भी शामिल की गई है। एनओसी और लेट पेमेंट ब्याज को शामिल किया गया है।

## मुर्शिदाबाद हिंसा : बदले गए दो पुलिस थानों के अधिकारी

**कोलकाता (आईएएनएस)**

पश्चिम बंगाल के मुर्शिदाबाद जिले के सुती और समसेरगंज पुलिस थानों के प्रभारियों को गुरुवार को बदल दिया गया। ये दोनों इलाके वक्फ (संशोधन) अधिनियम के खिलाफ विरोध प्रदर्शन के दौरान हुई हिंसा से सबसे ज्यादा प्रभावित हुए थे। जिला पुलिस के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया, "यह निर्णय इसलिए लिया गया क्योंकि इन दोनों पुलिस स्टेशनों के अधिकार क्षेत्र में आने वाले इलाके सबसे ज्यादा प्रभावित थे। हिंसा से संबंधित तीन मौतों में से दो समसेरगंज और एक सुती में हुई। यह निर्णय लिया गया कि दोनों पुलिस स्टेशनों का नेतृत्व ज्यादा अनुभवी और उच्च पदस्थ अधिकारियों द्वारा किया जाएगा।

सूत्रों ने बताया कि इन दोनों पुलिस थानों के पूर्व प्रभारियों के खिलाफ मुख्य शिकायत यह थी कि खुफिया तंत्र इस बात का पहले से अनुमान लगाने में विफल रहा कि वक्फ (संशोधन) अधिनियम के खिलाफ विरोध प्रदर्शन इतना हिंसक रूप ले लेगा।

## आज का राशिफल

**मेष :** मन प्रसन्न बना रहेगा। अचल संपत्ति की खरीद अथवा कृषि उद्यम में रुचि पैदा होगी। परिवार के साथ मनोरांजनिक स्थल की यात्रा होगी। आपसी प्रेम-भाव में बढ़ोतरी होगी। भविष्य की योजनाओं पर विचार-विमर्श होगा। अपनों का सहयोग प्राप्त होगा। सभी का सहयोग मिलेगा।

**वृष :** दिन-भर का माहौल आडंबरपूर्ण और व्ययकारी होगा। वरिष्ठ लोगों से कहासुनी के कारण तनाव पैदा हो सकता है। संयमित भाषा का इस्तेमाल करें। कुछ कार्यक्रम बदलने होंगे। आवेग में आकर किये गए कार्यों का मलाल, अवसाद रहेगा। उतावलेपन से बचें। प्रेमभाव बढ़ेगा।

**मिथुन :** घर के सदस्य मदद करेंगे और साथ ही आर्थिक बदहाली से भी मुक्ति मिलने लगेगी। प्रियजनों से समागम का अवसर मिलेगा। मनोरथ सिद्धि का योग है। अवरुद्ध कार्य संपन्न हो जाएंगे। सभा-सोसायटी में सम्मान मिलेगा। पद-प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए कुछ सामाजिक कार्य संपन्न होंगे।

**कर्क :** सामाजिक कार्य संपन्न होंगे। प्रेमभाव बढ़ेगा। आमोद-प्रमोद का दिन होगा और व्यावसायिक प्रगति भी होगी। स्वास्थ्य और जीवन स्तर में सुधार की अपेक्षा रहेगी। ज्ञान-विज्ञान की वृद्धि होगी और सज्जनों का साथ भी रहेगा। स्त्री-संतान पक्ष का सहयोग मिलेगा।

**सिंह :** कुछ कार्य भी सिद्ध होंगे। व्यर्थ की भाग-दौड़ से यदि बचा ही जाए तो अच्छा है। प्रियजनों से समागम का अवसर मिलेगा। अवरुद्ध कार्य संपन्न हो जाएंगे। महत्वपूर्ण कार्य को समय पर बना लें तो अच्छा ही होगा। भाई-बहनों का प्रेम बढ़ेगा। स्वविवेक से कार्य करें। दुर्लभ स्वप्न साकार होंग।

**कन्या :** आशा और उत्साह के कारण सक्रियता बढ़ेगी। आगे बढ़ने के अवसर लाभकारी सिद्ध हो रहे हैं। कुछ आर्थिक संकोच पैदा हो सकते हैं। कोई प्रिय वस्तु अथवा नवीन वस्त्राभूषण प्राप्त होंगे। सभा-गोष्ठियों में मान-सम्मान बढ़ेगा। धार्मिक आस्थाएं फलीभूत होंगी। स्त्री पक्ष का सहयोग मिलेगा।

**तुला :** व्यापार में स्थिति नरम रहेगी। शत्रुभय, चिंता, संतान को कष्टए अपव्यय के कारण बनेंगे। भ्रातृपक्ष में विरोध होने की संभावना है। आय-व्यय समान रहेगा। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। व्यर्थ प्रपंच में समय नहीं गंवाकर अपने काम पर ध्यान दीजिए। मेल-मिलाप से कोशिश सफल होगी।

**वृश्चिक :** कामकाज में आ रहा अवरोध दूर होकर प्रगति का रास्ता मिल जाएगा। मान-सम्मान में वृद्धि होगी। अच्छे कार्य के लिए रास्ते बना लेंगे। अपने हित के काम सुबह-सवेरे ही निपटा लें, क्योंकि आगे कामकाज सीमित तौर पर ही बन पाएंगे। स्वास्थ्य का पाया भी कमजोर बना रहेगा।

**धनु :** यात्रा प्रवास का सार्थक परिणाम मिलेगा। मेल-मिलाप से काम बनाने की कोशिश लाभ देगी। अपने काम में सुविधा मिल जाने से प्रगति होगी। समाज में मान-सम्मान बढ़ेगा। नवीन जिम्मेदारी बढ़ने के आसार रहेंगे। अपने काम को प्राथमिकता से करें चिंतनीय वातावरण से मुक्ति मिलेगी।

**मकर :** मेहमानों का आगमन होगा। राजकीय कार्यों से लाभ। पैतृक सम्पत्ति से लाभ। नैतिक दायरे में रहें। मेहमानों का आगमन होगा। पुरानी गलती का पश्चाताप होगा। विद्यार्थियों को लाभ। दाम्पत्य जीवन सुखद रहेगा। वाहन चालन में सावधानी बरतें। आय के अच्छे योग बनेंगे। सफलता मिलेगी।

**कुंभ :** परिवारजन का सहयोग व समन्वय काम को बनाना आसान करेगा। समाज में मान-सम्मान बढ़ेगा। आय-व्यय की स्थिति समान रहेगी। शैक्षणिक कार्य आसानी से पूरे होते रहेंगे। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। व्यापार व व्यवसाय में ध्यान देने से सफलता मिलेगी। ज्ञानार्जन का वातावरण बनेगा। सफलता मिलेगी।

**मीन :** अपनों का सहयोग प्राप्त होगा। शिक्षा में आशानुकूल कार्य होने में संदेह है। व्यापार व व्यवसाय में स्थिति उत्तम रहेगी। नौकरी में पदोन्नति की संभावना है। मित्रों से सावधान रहें तो ज्यादा उत्तम है। शारीरिक सुख के लिए व्यसनों का त्याग करें। इच्छित कार्य सफल होंगे। सुख-आनंद कारक समय है।

## सुरक्षा बलों को बड़ी कामयाबी, 22 नक्सलियों ने किया आत्मसमर्पण

**सुकमा (आईएएनएस)**

छत्तीसगढ़ के सुकमा जिले में सुरक्षा बलों को बड़ी सफलता मिली है। शुक्रवार को सुकमा के घने जंगलों में चलाए गए एक ऑपरेशन के दौरान 22 नक्सलियों ने सुरक्षा बलों के सामने आत्मसमर्पण कर दिया। आत्मसमर्पण करने वालों में 9 महिलाएं और 13 पुरुष शामिल हैं। इस ऑपरेशन में सुकमा डीआईजी ऑफिस, जगदलपुर डीआईजी ऑफिस के साथ-साथ सीआरपीएफ की कई बटालियनों ने हिस्सा लिया। सुरक्षा बलों के इस संयुक्त प्रयास को नक्सलवाद के खिलाफ चल रही मुहिम में एक महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है।

नक्सलियों ने छत्तीसगढ़ शासन की 'छत्तीसगढ़ नक्सलवादी आत्मसमर्पण पुनर्वास नीति' एवं 'नियद नेल्ला नार' योजना से प्रभावित होकर और अंदरूनी क्षेत्रों में लगातार नवीन सुरक्षा कैंप स्थापित कर पुलिस के बढ़ते प्रभाव से आत्मसमर्पण किया है।

## भूख हड़ताल पर बैठे नौकरी गंवाने वाले शिक्षक, बहाली की उठाई मांग

**मालदा ।** पश्चिम बंगाल के मालदा शहर में नौकरी गंवाने वाले योग्य शिक्षकों ने शुक्रवार को पोस्ट ऑफिस चौराहे पर भूख हड़ताल शुरू की। शिक्षकों ने एक अस्थायी मंच बनाकर 12 घंटे के इस विरोध प्रदर्शन की शुरुआत की, जो सुबह 8 बजे से शाम 8 बजे तक चलेगा। प्रदर्शनकारी शिक्षकों की मुख्य मांग है कि उनकी बहाली हो और पुलिस लाठीचार्ज और हिंसा का विरोध किया जाए। प्रदर्शन में मालदा के इंग्लिश बाजार और आसपास के दूरदराज के इलाकों से सैकड़ों शिक्षक शामिल हुए। शिक्षकों का कहना है कि पश्चिम बंगाल में शिक्षा व्यवस्था को बदनाम करने और शिक्षक समाज पर अत्याचार करने की साजिश हो रही है। वे इस अन्याय के खिलाफ एकजुट होकर अपनी आवाज बुलंद कर रहे हैं।

**केंद्रीय मंत्री जीतनराम मांझी बोले**

## तेजस्वी को इंडी अलायंस में मिली नई जिम्मेदारी, 'लॉलीपॉप थमा दिया गया'

**पटना (आईएएनएस)**

हिंदुस्तानी आवाम मोर्चा (हम) के नेता और केंद्रीय मंत्री जीतनराम मांझी ने इंडिया गठबंधन की बैठक में तेजस्वी यादव को समन्वय समिति का नेता चुने जाने पर सवाल उठाए। उनके चयन को 'लॉलीपॉप' बताया। मीडिया से बातचीत में मांझी ने दावा किया कि गठबंधन में एकता की कमी है और सभी नेता खुद को प्रधानमंत्री पद का चेहरा मान रहे हैं। उन्होंने इसे सत्ता की लड़ाई करार देते हुए कहा कि एनडीए में कुर्सी की ऐसी लड़ाई नहीं है, बल्कि विकास पर ध्यान है। मांझी ने कहा कि इंडिया गठबंधन की पिछली बैठक में भी समन्वय समिति के लिए नेता चुना गया था, जिसे प्रधानमंत्री पद का दावेदार माना गया। उन्होंने तेजस्वी के चयन पर कहा, ' उन्हें लॉलीपॉप थमा दिया गया है। गठबंधन में नेतृत्व को लेकर आपसी मतभेद साफ दिख रहे हैं। बिहार की जनता तेजस्वी को गठबंधन का नेता नहीं मानेगी।' वहीं, पश्चिम बंगाल की स्थिति पर बोलते हुए मांझी ने ममता बनर्जी की सरकार पर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि वहां कानून-व्यवस्था की स्थिति खराब है और राज्य सरकार अपनी जिम्मेदारी नहीं निभा रही।

## गांधी परिवार को कर्मों का फल मिलेगा, जो किया है वो सामने आएगा: सीएम

**नई दिल्ली।** दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने कहा है कि गांधी परिवार को नेशनल हेराल्ड मामले में अपने किए की सजा भुगतनी पड़ेगी। हाल ही में प्रवर्तन निदेशालय ने नेशनल हेराल्ड मामले में कथित मनी लॉन्ड्रिंग के सिलसिले में कांग्रेस नेता सोनिया गांधी, राहुल गांधी और अन्य के खिलाफ आरोप पत्र दाखिल किया है। ईडी ने 9 अप्रैल को दाखिल आरोप पत्र में सोनिया गांधी को आरोपी नंबर 1 और उनके बेटे तथा लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी को आरोपी नंबर 2 के तौर पर नामित किया है। मामले की सुनवाई 25 अप्रैल को होगी। आईएएनएस से विशेष बातचीत में दिल्ली के सीएम ने कहा, "नेशनल हेराल्ड मामले में गांधी परिवार ने जो कुछ भी किया है, उसके लिए उन्हें जवाबदेह होना पड़ेगा।

# खानपान की आदतों में सुधार से 50% तक कम हो सकती है लीवर की बीमारियां

**नई दिल्ली (आईएएनएस)**

मेडिकल विशेषज्ञों ने शुक्रवार को इस बात पर प्रकाश डाला कि लिवर की सेहत और हमारे खान-पान में अहम संबंध है। अगर हम अपनी जीवनशैली में हेल्दी बदलाव ला सकते हैं तो लिवर से जुड़ी बीमारियों को 50 प्रतिशत तक कम किया जा सकता है। वर्ल्ड लिवर डे (19 अप्रैल) से पहले डॉक्टरों ने बताया कि हमारे खाने में ही सेहत का खजाना छुपा है। आजकल शहरों के साथ-साथ गांवों में भी लिवर से जुड़ी बीमारियां बढ़ रही हैं। पहले लिवर की बीमारी का कारण ज्यादातर शराब माना जाता था, लेकिन अब बिना शराब पिए भी लोग 'नॉन-अल्कोहलिक फैटी लिवर डिजीज' से पीड़ित हो रहे हैं। इसका कारण है गलत खानपान, मोटापा और शारीरिक गतिविधियों की कमी।

'फ्रंटियर्स इन न्यूट्रीशन' नाम की पत्रिका में छपी एक एक बड़ी रिसर्च बताती है कि जो लोग ऐसी चीजें खाते हैं जिनसे शरीर में सूजन बढ़ती है (जैसे तली-भुनी और प्रोसेस्ड चीजें), उनमें लिवर की गंभीर बीमारी होने का खतरा 16% ज्यादा रहता है, जिसमें क्रोनिक लिवर डिजीज (सीएलडी) शामिल है। इसके उलट, मेडिटेरेनियन डाइट और अच्छा पोषण वाला खाना खाने वालों में यह खतरा कम हो जाता है। लिवर ट्रांसप्लांटेशन सोसायटी ऑफ इंडिया के अध्यक्ष डॉ. संजीव सैगल कहते हैं, "करीब 50 प्रतिशत लिवर की बीमारियां सिर्फ खाना सुधारने से रोकी जा सकती हैं। शराब, प्रोसेस्ड फूड और आलसी जीवनशैली से लिवर को जो नुकसान होता है, वो सही खानपान से ठीक भी किया जा सकता है। लिवर में खुद को ठीक करने की जबरदस्त क्षमता होती है। अगर समय रहते सही जीवन शैली अपनाई जाए तो सालों की हुई क्षति को भी वापस सुधारा जा सकता है। अगर हम ताजे फल, हरी सब्जियां, साबुत अनाज और प्रोटीन खाएं तो न केवल बीमारी से बच सकते हैं, बल्कि लिवर की मरम्मत भी हो सकती है। डॉ. सैगल कहते हैं, "जब मरीज साफ-सुथरा और संतुलित खाना खाना शुरू करते हैं, तो लिवर की स्थिति बेहतर हो जाती है, शरीर में ऊर्जा लौट आती है और लंबे समय तक अच्छा स्वास्थ्य बना रहता है। इसके लिए जरूरी है कि हम खाने के पैकेट की जानकारी पढ़ें और प्रोसेस्ड फूड कम खाएं।

अगर हम ताजे फल-सब्जी, घर का खाना, भरपूर पानी और सोच-समझ कर भोजन अपनाएं, तो लिवर की बीमारी से बचे रह सकते हैं। पर चीनी से भरे पेय, जंक फूड और फास्ट फूड लिवर को नुकसान पहुंचा रहे हैं। 'न्यूट्रिएंट्स' नाम की पत्रिका में छपी एक और रिसर्च बताती है कि जो मोटे बच्चे बहुत ज्यादा मीठे और प्रोसेस्ड फूड खाते हैं, उन्हें 'एमएएसएलडी' नामक लिवर की बीमारी हो रही है।

## 'राष्ट्रपति नाम का मुखिया उनके पास निजी अधिकार नहीं'

**कपिल सिब्बल का उपराष्ट्रपति को जवाब**

**एजेंसी । नई दिल्ली**

सिब्बल ने आगे कहा कि जब सरकार के कुछ लोगों को न्यायपालिका के फैसले पसंद नहीं आते तो वे उस पर अपनी सीमा लांघने का आरोप लगाने लगते हैं। उन्होंने सवाल किया कि क्या उन्हें पता है कि संविधान ने अनुच्छेद 142 के तहत सुप्रीम कोर्ट को पूर्ण न्याय देने का अधिकार दिया है?

राज्यसभा सांसद कपिल सिब्बल ने शुक्रवार को तमिलनाडु के राज्यपाल आरएन रवि द्वारा विधेयकों को मंजूरी न देने के संबंध में सुप्रीम कोर्ट के फैसले पर जगदीप धनखड़ की टिप्पणी की आलोचना करते हुए कहा कि उपराष्ट्रपति को पता होना चाहिए कि राज्यपाल और राष्ट्रपति मंत्रिपरिषद की 'सहायता और सलाह' पर कार्य करते हैं। उन्होंने कहा कि जगदीप धनखड़ का बयान देखकर मुझे दुख और आश्चर्य हुआ। आज के समय में अगर किसी संस्था पर पूरे देश में भरोसा किया जाता है तो वह न्यायपालिका है।

सिब्बल ने आगे कहा कि जब सरकार के कुछ लोगों को न्यायपालिका के फैसले पसंद नहीं आते तो वे उस पर अपनी सीमा लांघने का आरोप लगाने लगते हैं। उन्होंने सवाल किया कि क्या उन्हें पता है कि संविधान ने अनुच्छेद 142 के तहत सुप्रीम कोर्ट को पूर्ण न्याय देने का अधिकार दिया है? राष्ट्रपति तो केवल नाममात्र का मुखिया है। उन्होंने कहा कि राष्ट्रपति कैबिनेट के अधिकार और सलाह पर काम करते हैं।

# केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव ने भारत में बने अल्ट्रा-ड्यूरेबल टैबलेट की मजबूती का किया परीक्षण

**नई दिल्ली (आईएएनएस)**

केंद्रीय रेलवे और इलेक्ट्रॉनिक्स एवं आईटी मंत्री अश्विनी वैष्णव ने शुक्रवार को सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर भारत में डिजाइन और बनाए गए एक मजबूत और टिकाऊ टैबलेट को शोकेस किया। वीवीडीएन टेक्नोलॉजीज की मैन्युफैक्चरिंग यूनिट से एक वीडियो शेयर करते हुए उन्होंने लिखा, "नहीं टूटेगा, भारत में डिजाइन किया गया है, भारत में बनाया गया है।

वीडियो में, केंद्रीय मंत्री टैबलेट की मजबूती को टेस्ट करते हैं। वे टैबलेट को जमीन पर फेंकते, ऊंचाई से गिराते और यहां तक कि टैबलेट पर खुद खड़े होते दिखाई दे रहे हैं। यह सब टैबलेट की मजबूती को प्रदर्शित करने के लिए किया जाता है। यह पोस्ट 'मेक इन इंडिया' पहल के तहत स्वदेशी, उच्च गुणवत्ता वाले इलेक्ट्रॉनिक्स के लिए भारत के बढ़ते प्रयासों को दर्शाता है। इसी जगह से एक दूसरे वीडियो में केंद्रीय मंत्री ने भारत की एआई सर्वर टेक्नोलॉजी की एक झलक शेयर की, जिसमें कैप्शन लिखा था, "भारत का एआई सर्वर... 'आदिपोली'... वीवीडीएन टेक्नोलॉजीज। यहां वे कर्मचारियों से बातचीत करते और विनिर्माण प्रक्रिया के बारे में जानकारी लेते देखे गए।

यह पहल केंद्रीय मंत्री की फरवरी की पिछली पोस्ट की याद दिलाती है, जिसमें उन्होंने वीवीडीएन टेक्नोलॉजीज के "भारत में डिजाइन और निर्मित" लैपटॉप को पेश किया था। यह घरेलू कंपनी, जो एंड-टू-एंड इलेक्ट्रॉनिक्स उत्पाद विकास में माहिर है, वैश्विक हार्डवेयर विनिर्माण केंद्र बनने की भारत की महत्वाकांक्षा में एक की-प्लेयर बन रही है। यह पहल देश के भीतर अधिक इलेक्ट्रॉनिक उत्पादों के डिजाइन, विकास और उत्पादन को बढ़ावा देकर टेक्नोलॉजी और मैन्युफैक्चरिंग में आत्मनिर्भर बनने के भारत के लक्ष्य के अनुरूप है। उत्पादन-लिंक्ड प्रोत्साहन (पीएलआई) योजना ने घरेलू विनिर्माण में निवेश करने वाली कंपनियों को वित्तीय सहायता प्रदान कर इस प्रयास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

### केंद्रीय मंत्री बोले- स्मार्टफोन बने भारत का सबसे बड़ा निर्यात क्षेत्र

इस साल जनवरी में, सरकार ने जानकारी दी थी कि आईटी हार्डवेयर के लिए पीएलआई 2.0 योजना ने पहले ही 10,000 करोड़ रुपये का उत्पादन किया है। इसके रोलआउट के बाद से केवल 18 महीनों में 3,900 नौकरियां पैदा हुई हैं। इसी बीच, इसे ऐतिहासिक उपलब्धि बताते हुए, केंद्रीय मंत्री वैष्णव ने गुरुवार को कहा कि स्मार्टफोन वित्त वर्ष 2025 के पहले 10 महीनों में भारत की सबसे बड़ी निर्यात श्रेणी के रूप में उभरे हैं, जो सरकार की पीएलआई योजना के तहत एक बड़ी सफलता की कहानी है।

# ईरान को कभी परमाणु हथियार हासिल नहीं करने देंगे : नेतन्याहू

**यरूशलम (आईएएनएस)**

प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने दोहराया कि इजरायल ईरान को परमाणु हथियार हासिल करने नहीं देगा। उनका यह बयान तेहरान और अमेरिकी प्रशासन के बीच नए परमाणु समझौते पर नए सिरे से बातचीत की खबरों के बीच सामने आया।

नेतन्याहू के कार्यालय ने गुरुवार को एक बयान में कहा, "प्रधानमंत्री ने एक से अधिक बार स्पष्ट किया है: इजरायल ईरान को परमाणु हथियार हासिल करने नहीं देगा।"

कार्यालय ने कहा कि नेतन्याहू ने 'ईरान के परमाणु कार्यक्रम के खिलाफ अनगिनत प्रत्यक्ष और गुप्त अभियान चलाए हैं' और 'ईरान के परमाणु कार्यक्रम के खिलाफ वैश्विक अभियान का नेतृत्व किया है।'ईरानी विदेश मंत्री सईद अब्बास अराघची ने पिछले शनिवार को ओमान की राजधानी मस्कट में अमेरिकी राष्ट्रपति के विशेष दूत स्टीव विटकॉफ से तेहरान के परमाणु कार्यक्रम के मुद्दे पर मुलाकात की। दोनों पक्षों ने इस बैठक को 'रचनात्मक' बताया।

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के मार्च की शुरुआत में कहा था कि संयुक्त अरब अमीरात के माध्यम से ईरानी नेताओं का एक पत्र मिला है, जिसमें तेहरान के परमाणु कार्यक्रम पर वार्ता का प्रस्ताव दिया गया था। ईरान बाद में अप्रत्यक्ष वार्ता पर सहमत हो गया।

इजरायल और पश्चिमी सरकारें लंबे समय से ईरान पर परमाणु हथियार क्षमता हासिल करने का आरोप लगाती रही हैं। हालांकि तेहरान इस आरोप का खंडन करता आया है। नेतन्याहू का यह बयान शनिवार को रोम में अमेरिका और ईरानी प्रतिनिधिमंडलों के बीच ओमानी मध्यस्थता वाली दूसरे दौर की वार्ता से पहले आया है। ईरान के परमाणु कार्यक्रम पर मध्यस्थता के जरिए समझौता करने के ट्रंप के प्रयास नेतन्याहू की सैन्य कार्रवाई का उपयोग करके इस मुद्दे से निपटने की लंबे समय से चली आ रही नीति के विपरीत प्रतीत होते हैं।

1. **ईरान पर परमाणु हथियार विकसित करने के आरोप बरकरार :** इज़रायल और पश्चिमी देशों का दावा है कि ईरान परमाणु हथियार क्षमता हासिल करना चाहता है, हालांकि ईरान लगातार इन आरोपों का खंडन करता रहा है।
2. **नेतन्याहू का बयान अमेरिका-ईरान वार्ता से पहले आया :** प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू का यह बयान रोम में होने वाली अमेरिका और ईरानी प्रतिनिधिमंडलों के बीच वार्ता से पहले आया है, जिसमें ओमान मध्यस्थ की भूमिका निभा रहा है।
3. **ट्रंप की कूटनीति और नेतन्याहू की सैन्य नीति में मतभेद :** ईरान के परमाणु कार्यक्रम पर ट्रंप द्वारा मध्यस्थता के जरिए समझौता करने की रणनीति नेतन्याहू की सैन्य कार्रवाई पर आधारित नीति से अलग नजर आती है।

### एक शिविर पर हुआ हमला तो विस्थापितों ने दूसरे में ली शरण, वहां भी हुई बमबारी

**संयुक्त राष्ट्र ।** जमजम विस्थापन शिविर पर बमबारी से बचकर भागे अनुमानित 400,000 लोगों में से अधिकांश ने अन्य सूडानी शरणार्थी शिविर में शरण ली, लेकिन वहां भी बमबारी की गई। संयुक्त राष्ट्र मानवीय एजेंसी ने यह जानकारी दी। संयुक्त राष्ट्र के मानवीय मामलों के समन्वय कार्यालय (ओसीएचए) ने कहा, "जमजम तक पहुंच पूरी तरह से अवरुद्ध है।"ओसीएचए ने कहा, "स्थानीय प्राधिकारियों और साझेदारों की रिपोर्ट से पता चलता है कि सशस्त्र समूह अल फशर और आस-पास के क्षेत्रों, जिसमें अबू शौक शिविर भी शामिल है, पर गोलाबारी जारी रखे हुए हैं, जिससे वहां रहने वाले सभी नागरिक स्पष्ट रूप से भारी खतरे में हैं।"जमजम शिविर पर बमबारी से बचकर भाग रहे 4,00,000 लोगों में से अधिकांश लोग उत्तरी दारफुर राज्य की राजधानी एल फशेर और तावीला शहरों की ओर चले गए।

# गीता और नाट्यशास्त्र यूनेस्को 'मेमोरी ऑफ द वर्ल्ड रजिस्टर' में शामिल

### पीएम मोदी बोले, 'हर भारतीय के लिए गर्व का क्षण'

**नई दिल्ली (आईएएनएस)**

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 'श्रीमद्भगवद्गीता' और भरत मुनि के 'नाट्यशास्त्र' को यूनेस्को के 'मेमोरी ऑफ द वर्ल्ड रजिस्टर' में शामिल किए जाने पर खुशी जाहिर की। उन्होंने इसे प्रत्येक भारतीय के लिए गर्व का क्षण बताया।

दरअसल, शुक्रवार को केंद्रीय मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म 'एक्स' के जरिए जानकारी दी कि 'गीता' और 'नाट्यशास्त्र' को यूनेस्को के 'मेमोरी ऑफ द वर्ल्ड रजिस्टर' में शामिल किया गया है। केंद्रीय मंत्री शेखावत के इसी पोस्ट का जवाब देते हुए पीएम मोदी ने लिखा, ''समूचे विश्व में प्रत्येक भारतीय के लिए गर्व का क्षण। गीता और नाट्यशास्त्र को यूनेस्को के 'मेमोरी ऑफ द वर्ल्ड रजिस्टर' में शामिल किया जाना हमारे शाश्वत ज्ञान और समृद्ध संस्कृति को वैश्विक मान्यता प्रदान किया जाना है। गीता और नाट्यशास्त्र ने सदियों से सभ्यता और चेतना का पोषण किया है। उनकी अंतर्दृष्टि दुनिया को प्रेरित करना जारी रखे हुए है।

इससे पहले केंद्रीय मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा, ''भारत की सभ्यतागत विरासत के लिए एक ऐतिहासिक क्षण। श्रीमद्भगवद्गीता और भरत मुनि का नाट्यशास्त्र अब यूनेस्को के 'मेमोरी ऑफ द वर्ल्ड रजिस्टर' में शामिल किया गया हैं। यह वैश्विक सम्मान भारत की शाश्वत बुद्धिमत्ता और कलात्मक प्रतिभा का जश्न मनाता है।

उन्होंने आगे लिखा, ''ये कालातीत रचनाएं साहित्यिक खजाने से कहीं अधिक हैं, ये दार्शनिक और सौंदर्यपरक आधार हैं, जिन्होंने भारत के विश्व-दृष्टिकोण और हमारे सोचने, महसूस करने, जीने और अभिव्यक्ति के तरीके को आकार दिया है। इसके साथ ही, अब इस अंतर्राष्ट्रीय रजिस्टर में हमारे देश के 14 अभिलेख शामिल हो गए हैं।

## जाम्बिया में एमपॉक्स से दूसरी मौत की पुष्टि, मामले बढ़कर 49 हुए

**लुसाका (आईएएनएस)**

दक्षिणी अफ्रीकी देश जाम्बिया में एमपॉक्स बीमारी से दूसरी मौत की पुष्टि हुई है। अब तक देश में इस बीमारी के कुल 49 मामले सामने आ चुके हैं। स्वास्थ्य मंत्री एलिजा मुचिमा ने गुरुवार को बताया कि जाम्बिया के मुचिंगा प्रांत के मपिका जिले में एमपॉक्स बीमारी से दूसरी मौत हुई है। इस घटना में एक 10 साल का बच्चा भी शामिल है।

देश में पिछले साल अक्टूबर में एमपॉक्स से पहला मामला सामने आया था और इसके बाद पिछले महीने इस बीमारी से पहली मौत हुई। मंत्री जी ने एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में बताया कि देश में 2 अप्रैल से 15 अप्रैल के बीच 13 नए मामले सामने आए हैं। अब तक कुल 49 मामले हो चुके हैं और देश के 10 में से 6 राज्यों में ये मामले मिले हैं। अब तक 32 लोगों का इलाज किया जा चुका है और उन्हें घर भेज दिया गया है, जबकि 15 लोग अभी होम आइसोलेशन पर हैं।

मंत्री ने कहा कि स्वास्थ्य मंत्रालय एमपॉक्स के मामलों की जांच और पता लगाने के लिए और इसे फैलने से रोकने के लिए अन्य सहयोगी संगठनों के साथ मिलकर काम कर रहा है। इस बीच, देश में हैजा के कुल मामले भी 490 तक पहुंच गए हैं। पिछले दो हफ्तों में 18 नए मामले सामने आए हैं। मंत्री ने बताया कि अब तक लगभग 480 लोग ठीक हो चुके हैं।

**साझेदारी बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध**

## प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और एलन मस्क की फोन पर चर्चा

**नई दिल्ली (आईएएनएस)**

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शुक्रवार को कहा कि उन्होंने टेस्ला और स्पेसएक्स के सीईओ एलन मस्क के साथ फोन पर बातचीत की। दोनों नेताओं ने टेक्नोलॉजी और इनोवेशन के क्षेत्रों में भारत और अमेरिका के बीच सहयोग को बढ़ाने के बारे में चर्चा की। पीएम मोदी ने एक्स पर पोस्ट किया, "एलन मस्क से बात की और विभिन्न मुद्दों पर चर्चा की, जिसमें इस साल की शुरुआत में वाशिंगटन डीसी में हमारी बैठक के दौरान उठे विषय भी शामिल थे। हमने टेक्नोलॉजी और इनोवेशन के क्षेत्रों में सहयोग की अपार संभावनाओं पर बातचीत की। भारत इन क्षेत्रों में अमेरिका के साथ अपनी साझेदारी को आगे बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध है। यह बातचीत मस्क की कंपनियों - विशेष रूप से टेस्ला और स्टारलिंक - की भारतीय बाजार में बढ़ती दिलचस्पी के बीच हुई है।

## साइबर घोटाले के जाल में फंसे 4 भारतीय नागरिकों की घर वापसी

**यांगून (आईएएनएस)।** भारत सरकार ने म्यांमार-थाईलैंड बॉर्डर के म्यावाड्डी क्षेत्र में फंसे चार भारतीय नागरिकों की वापसी सुनिश्चित की है। यांगून स्थित भारतीय दूतावास ने शुक्रवार को यह जानकारी दी। चार भारतीय नागरिक म्यांमार-थाईलैंड सीमा के म्यावड्डी क्षेत्र में साइबर घोटाले के नेटवर्क में फंस गए थे। हाल ही में उन्हें म्यांमार के अधिकारियों ने रिहा कर दिया और ह्पा-आन से यांगून लाया गया।

## अमेरिकी विश्वविद्यालय में गोलीबारी : 2 की मौत, 6 घायल

**वाशिंगटन (आईएएनएस)।** फ्लोरिडा स्टेट यूनिवर्सिटी (एफएसयू) कैंपस में हुई गोलीबारी में दो लोगों की मौत हो गई और छह लोग घायल हो गए। पुलिस ने एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में यह जानकारी दी। घायलों और हमले के आरोपी को पास के अस्पताल में भर्ती कराया गया। अधिकारियों ने बताया कि पुलिस ने संदिग्ध को गोली मारने के बाद पकड़ लिया। लियोन काउंटी के शेरिफ वाल्टर मैकनील ने बताया कि हमले के आरोपी का नाम फीनिक्स इकनर है, जिसकी उम्र 20 साल है। वह एफएसयू का छात्र है और एक डिप्टी शेरिफ का बेटा है। जांच में पता चला कि संदिग्ध ने अपनी मां के पुराने हथियार का इस्तेमाल किया, जो अब भी उसकी मां के नाम पर है।

## यमन के ईंधन बंदरगाह पर अमेरिकी हमला, 38 की मौत 102 घायल

**वाशिंगटन (आईएएनएस)**

यमन में एक ईंधन बंदरगाह पर अमेरिकी हमलों में कम से कम 38 लोग मारे गए। अमेरिकी सेना ने कहा कि हमलों का उद्देश्य हूती ग्रुप के लिए ईंधन का स्रोत काटना था। ईरान समर्थित ग्रुप पर वाशिंगटन की सैन्य कार्रवाई शुरू होने के बाद से यह सबसे घातक हमलों में से एक है। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक अल मसीरा टीवी ने कहा कि गुरुवार को पश्चिमी ईंधन बंदरगाह रास ईसा पर हुए हमलों में 102 लोग घायल भी हुए। बता दें अल मसीरा टीवी का संचालन हूती ग्रुप करता है। वहीं अमेरिकी सेंट्रल कमांड ने कहा कि हमलों की शुरुआती घोषणा के अलावा उसके पास कोई जानकारी नहीं है। एक्स पर एक पोस्ट में कहा गया, "इन हमलों का उद्देश्य हूती ग्रुप की शक्ति के आर्थिक स्रोत को कमजोर करना था, जो अपने साथी देशवासियों का शोषण करते रहते हैं और उन्हें भारी पीड़ा पहुंचाते हैं।"जनवरी में राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के पदभार ग्रहण करने के बाद से मध्य पूर्व में यह अमेरिका का सबसे बड़े सैन्य अभियान है।

## क्या यूक्रेन में लागू हो सकता है युद्ध विराम? डोनाल्ड ट्रंप का बड़ा बयान

**मॉस्को (आईएएनएस)**

अमेरिकी राष्ट्रपति ने कहा कि उन्हें वीकेंड में यूक्रेन में संभावित युद्धविराम पर रूस की प्रतिक्रिया मिलने की उम्मीद है। रूसी विदेश मंत्री सर्गेई लावरोव और अमेरिकी विदेश मंत्री मार्को रुबियो के बीच टेलीफोन पर बातचीत के कुछ ही घंटों बाद डोनाल्ड ट्रंप का यह बयान आया। ट्रंप ने व्हाइट हाउस में मीडिया से कहा, "हम इस सप्ताह, वास्तव में बहुत जल्द, उनसे सुनने जा रहे हैं। मुझे लगता है कि हम करीब पहुंच रहे हैं, लेकिन हम आपको बहुत जल्द ही बता देंगे। रूसी विदेश मंत्रालय के मुताबिक लावरोव ने यूक्रेनी संकट के मूल कारणों का व्यापक समाधान करने के लिए अमेरिकी समकक्षों के साथ सहयोग जारी रखने पर सहमति जताई।

पेरिस में मौजूद रुबियो ने रूसी पक्ष को हाल ही में फ्रांस की राजधानी में उनके और अमेरिकी राष्ट्रपति के विशेष दूत स्टीव विटकॉफ के बीच हुई मुलाकातों के बारे में जानकारी दी। इस बीच, संयुक्त राष्ट्र में रूस के दूत वसीली नेबेन्ज्या ने कहा कि इस समय यूक्रेन में युद्ध विराम 'अवास्तविक' है, क्योंकि कीव ऊर्जा ढांचे पर हमले रोकने में नाकाम रहा है।

**कहानी फिल्म जगत की**

## 'मैं शाहरुख खान से ज्यादा व्यस्त हूं' आखिर ये क्यों बोले अनुराग कश्यप?

*फिल्म निर्माता अनुराग कश्यप ने समाज सुधारक ज्योतिराव फुले और सावित्रीबाई फुले के जीवन पर आधारित फिल्म फुले को लेकर हो रहे विरोध की आलोचना करते हुए कहा कि भारत में जातिगत मुद्दों को दर्शाने वाली फिल्मों पर प्रतिबंध क्यों लगाया जाता है। निर्देशक ने फुले में सुझाए गए संशोधनों के लिए केंद्रीय फिल्म प्रमाणन बोर्ड (सीबीएफसी) की भी आलोचना की।*

फिल्म निर्देशक अनुराग कश्यप ने शुक्रवार को सोशल मीडिया पर उन लोगों को करारा जवाब दिया, जो मानते हैं कि वह अब फिल्म उद्योग से दूर हो गए हैं। कश्यप ने कहा कि वह शाहरुख खान से भी ज्यादा व्यस्त हैं और इस साल उनकी पांच फिल्में रिलीज होने वाली हैं। कश्यप ने हाल में घोषणा की थी कि वह मुंबई छोड़कर दक्षिण भारत के शहर में बसने जा रहे हैं। उन्होंने अपने ताजा सोशल मीडिया पोस्ट में 'ट्रोल' को करारा जवाब दिया। प्रसिद्ध फिल्मकार कश्यप ने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर अपने पोस्ट में लिखा, मैंने सिर्फ शहर बदला है, फिल्म बनाना नहीं छोड़ा। जो लोग सोचते हैं कि मैं निराश हो चुका हूं और अब कहीं नहीं हूं, तो बता दूं कि मैं यहीं हूं और शाहरुख खान से भी ज्यादा व्यस्त हूं (मुझे होना भी चाहिये, क्योंकि मैं उतने पैसे नहीं कमाता)। कश्यप ने कहा, मेरे पास 2028 तक समय नहीं है। उम्मीद है कि इस साल मेरे निर्देशन में बनी पांच फिल्में प्रदर्शित होंगी या अभी तीन और अगले साल की शुरुआत में दो फिल्में आएंगी।

भाजपा के प्रदेश प्रवक्ता प्रतुल शाहदेव ने सीएम के यूरोप दौरे पर साधा निशाना, कहा

# सिर्फ सैर सपाटे के लिए है विदेश दौरा

नवीन मेल संवाददाता

रांची। भाजपा के प्रदेश प्रवक्ता प्रतुल शाहदेव ने झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन के यूरोप दौरे पर निशाना साधा है। उन्होंने कहा, यह सिर्फ कैमरा एक्सपोजर और सैर-सपाटे की दृष्टि से किया जा रहा है। यह पूरा दौरा करदाताओं के पैसे का अनावश्यक निवेश है। वे वास्तविकता में पर्यटन के उद्देश्य से स्पेन और स्वीडन का दौरा कर रहे हैं। स्वीडन और स्पेन में वर्ष 2024 में 13 करोड़ पर्यटक घूमने आए थे। मुख्यमंत्री अपने दल के साथ इस संख्या में इस वर्ष इजाफा करने जा रहे हैं।

स्पेन, स्वीडन और झारखंड के औद्योगिक फोकस में आसमान-जमीन का अंतर

प्रतुल ने शुक्रवार को कहा कि झारखंड एक खनन और कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था वाला राज्य है। भारत के जीडीपी का लगभग 15 प्रतिशत हिस्सा कृषि से आता है। देश के साथ झारखंड की बड़ी आबादी रोजगार के लिए प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से कृषि पर आश्रित है। प्रतुल ने कहा कि जबकि स्पेन के जीडीपी का मात्र 2.5 प्रतिशत हिस्सा कृषि से आता है और स्वीडन का तो सिर्फ 1.7 प्रतिशत जीडीपी का हिस्सा कृषि पर आधारित है। कृषि क्षेत्र में तो झारखंड और भारत इन देशों से कहीं आगे हैं।

प्रतुल ने कहा कि झारखंड में कोयला खदानें, लौह अयस्क खदानें, बॉक्साइट खदानें बड़ी संख्या में है। खनन और कृषि क्षेत्र में निवेश प्रदेश के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं। भारत की खनन टेक्नोलॉजी स्पेन और स्वीडन की तुलना में कहीं ज्यादा उन्नत है। इन दोनों देशों में खनन का कोई बहुत बड़ा इतिहास भी नहीं रहा है। प्रतुल ने कहा कि खनन क्षेत्र में इन देशों से कोई बड़े निवेश या टेक्नोलॉजी ट्रांसफर की अपेक्षा नहीं की जा सकती है।

प्रतुल ने कहा, स्पेन और स्वीडन अमेरिका के द्वारा 20 प्रतिशत टैरिफ लगाए जाने के बाद आने वाले गंभीर मंदी की समस्या से निकलने पर फोकस कर रहे हैं। स्पेन की इकोनॉमी का मुख्य आधार टूरिज्म और सर्विस सेक्टर है। उन्होंने कहा, जब तक झारखंड की विधि व्यवस्था नहीं सुधरेगी, तब तक पर्यटकों की संख्या में वृद्धि नहीं हो सकती। मुख्यमंत्री को पहले अपने राज्य के विधि व्यवस्था पर ध्यान देना चाहिए था।

प्रतुल ने कहा कि स्पेन में 25 वर्ष से कम उम्र के युवाओं की बेरोजगारी 28.4 प्रतिशत है। स्पेन के 12,000 यूनिट औद्योगिक यूनिट या तो बंद हो गए हैं या बंदी की तरफ बढ़ रहे हैं। ऐसे में स्पेन के उद्योग पहले अपने घर को बचाएंगे की झारखंड में निवेश करेंगे? प्रतुल ने कहा, वैसे स्पेन का 'ला टोमैटिना' (टोमैटो फेस्टिवल), ' फिएस्टा दे सैन फर्मिन' (बुल चेज) और 'ला लिगा' (स्पेनिश फुटबॉल लीग) पर्यटकों में बहुत प्रसिद्ध है। शायद मुख्यमंत्री जी को भी ये तीनों पसंद है।

प्रतुल ने कहा कि स्वीडन की स्थिति तो और भी खराब हो गई है। वर्ष 2023 में स्वीडन की जीडीपी में 0.7 प्रतिशत से 1.2 प्रतिशत तक कम हुई थी। वहां आवास निर्माण में भारी गिरावट आई है। प्रतिष्ठित संस्था यूरोफाउंड की रिपोर्ट के अनुसार, वर्ष 2024 में स्वीडन में 25 वर्ष से कम उम्र के बेरोजगार युवाओं की संख्या 23.8 प्रतिशत है। स्वीडन में वर्ष 2023 की मंदी में हजारों औद्योगिक इकाइयां रुग्ण हो गई थीं। स्वीडन की सरकार का फोकस उनको बचाने पर है। फिलहाल बाहरी निवेश प्राथमिकता में नहीं है।

प्रतुल ने कहा कि लेकिन अभी भी संभावना है कि मुख्यमंत्री स्पेन और स्वीडन में स्थानीय कंपनियों के प्रतिनिधियों के साथ फोटो खिंचवा कर आएंगे। बड़े निवेश के सहमति पत्र पर हस्ताक्षर का नाटक भी होगा और उसके बाद प्रतिनिधिमंडल देश लौट आएगा। कुछ दिन में सब कुछ भुला दिया जाएगा। लेकिन, पर्यटन का उद्देश्य सफल हो जाएगा।

### औद्योगिक दौरे में उद्योग मंत्री का नहीं रहना, बिन दूल्हे की बारात जैसा

प्रतुल शाहदेव ने कहा कि इस दौरे का एक आश्चर्यजनक पहलू यह भी है कि औद्योगिक निवेश के लिए गए इस प्रतिनिधिमंडल से उद्योग मंत्री ही गायब हैं। प्रतुल ने कहा, यह तो वही स्थिति हो गई कि पूरी बारात रवाना हो गई, लेकिन दूल्हे को घर में ही छोड़ दिया गया। उद्योग मंत्री को नहीं ले जाना यह स्पष्ट कर रहा है कि यह सिर्फ पर्यटन यात्रा है। निवेश लाने से इसका कोई संबंध नहीं।

### स्वीडन में बोफोर्स के हेड क्वार्टर का जरूर दर्शन कर आएं मुख्यमंत्री

प्रतुल ने कहा कि सीएम को स्वीडन के स्टॉकहोम जरूर जाना चाहिए, जहां बोफोर्स का मुख्यालय है। उन्हें उस कार्यालय की कार्य पद्धति से भी बहुत कुछ सीखने को मिलेगा कि भ्रष्टाचार का रास्ता आखिर कैसे सुगम हो सकता है। आखिरकार उनके सहयोगी दल कांग्रेस ने देश के इतिहास का सबसे बड़ा बोफोर्स घोटाला इसी कंपनी के साथ मिलकर किया था।

# केंद्रीय खेल मंत्री से पारा थ्रो बॉल के खिलाड़ियों ने की मुलाकात

नवीन मेल संवाददाता

रांची। केंद्रीय खेल मंत्री (भारत सरकार) डॉ.मनसुख मंडाविया के साथ शुक्रवार को रांची में मुलाकात करने का अवसर प्राप्त हुआ साथ ही साथ माननीय मंत्री ने पारा खेल की जानकारी ली , पारा थ्रो बॉल एशियाई चैंपियनशिप में कांस्य पदक प्राप्त करने के लिए दोनों वर्ग के मुकेश कंचन, सनोज महतो, पवन लकड़ा, मुकेश कुमार, राजेश मेहता, महिमा उरांव, अनीता तिर्की, पुष्पा मिंज, तारामणि लकड़ा, प्रतिमा तिर्की, असुंता टोप्पो, संजुक्ता एक्का इन सभी एशियन खिलाड़ी को माननीय मंत्री महोदय ने सभी खिलाड़ियों को शुभकामनाएं एवं बधाई प्रेषित किया। मौके पर भाई शशांक राज (प्रदेश अध्यक्ष, @बीजेवाईएम), समाजसेवी बड़े भाई ललित ओझा जी मौजूद रहे।

आज आयोजित होने वाले एयर शो के जांबाज पायलट के साथ केंद्रीय रक्षा राज्य मंत्री संजय सेठ एवं वायु सेना के एयर चीफ मार्शल एपी सिंह ने मुलाकात की।

## हाल बेहाल

नए बने रातू रोड में जम रहा बारिश का पानी।

आईटीआई बस स्टैंड के पास बना है करोड़ों रुपए का संयुक्त रसोई घर

# 4 साल पहले भवन बनी, पर व्यवस्था नहीं हुई बहाल

- मध्याह्न भोजन के नाम पर जनता के गाढ़ी कमाई की लूट : संजय सेठ

मनोज मिश्रा

रांची। मध्याहन भोजन (मिड-डे मील) कार्यक्रम के अंतर्गत सरकारी और सरकारी सहायता प्राप्त स्कूलों के बच्चों को दोपहर का भोजन दिया जाता है। इसका मकसद बच्चों के पोषण स्तर में सुधार करना और उनकी पढ़ाई को बढ़ावा देना है। यह कार्यक्रम, भारत सरकार की पोषण शक्ति निर्माण (पीएम-पोषण) पहल का हिस्सा है।

इसी के तहत राजधानी के आईटीआई बस स्टैंड के सामने लगभग चार साल पहले संयुक्त रसोई घर बनाया गया था। इस रसोईघर में जिले के सभी प्राथमिक स्तर (कक्षा 1-5) और उच्च प्राथमिक स्तर (कक्षा 6-8) के स्कूली बच्चों के लिए मध्यान्ह भोजन बनाया जाना था। संयुक्त रसोईघर से भोजन बनाकर जले के सभी 2127 स्कूलों में मध्याहन भोजन पहुंचाने की बात थी।

जनरेटर लगाए गए

एक जगह मध्याहन भोजन बनाकर स्कूलों तक पहुंचाना था जिससे बच्चों का सही पोषण के साथ विकास हो। परंतु करोड़ों रूपए की लागत से बनी भवन का औचित्य क्या रहा जब यह शुरू नहीं हो सका। क्या यह भवन शुरू होगी या यूं ही पड़ा रहेगा। दूसरी ओर उचित रख-रखाव के अभाव में भवन को रिपेयर करने की जरूरत भी आन पड़ी है।

इस सबंध में 'राष्ट्रीय नवीन मेल' के संवाददाता ने जिला शिक्षा अधीक्षक बादल राज से सवाल पूछे तो उन्होंने कहा कि संयुक्त रसोई घर जल्द शुरू होगी।

केंद्रीय रक्षा राज्य मंत्री संजय सेठ

जिला शिक्षा अधीक्षक रांची बादल राज

वहीं इस संबंध में केंद्रीय रक्षा राज्य मंत्री संजय सेठ से बात की गई। उन्होंने बताया कि राज्य में कई भवन ऐसे हैं जो भ्रष्टाचार के भेंट चढ़ गए। भवन तो बन गए परंतु जिस उद्देश्य के लिए भवन का निर्माण हुआ था वह पूरा नहीं हो सका और जनता के गाढ़ी कमाई की लूट मचाई गई। उन्होंने कहा कि ऐसा ही एक और मामला अनगढ़ा का भी है जहां 20 करोड़ रूपए लागत की भवन आईटीआई कॉलेज के नाम पर बनाई गई थी जिसका आज तक उद्घाटन नहीं हुआ है।

# घरों में बिजली लेने के लिए जुस्को कार्यालय में आवेदन करें : सरयू

नवीन मेल संवाददाता

रांची/जमशेदपुर। जमशेदपुर पश्चिमी विधानसभा के विधायक सरयू राय ने प्रेस विज्ञप्ति जारी कर कहा कि गोलमुरी के केबुल टाऊन के उपभोक्ताओं के घरों में अलग अलग बिजली कनेक्शन देने के लिए इंडियन केबुल वर्कर्स यूनियन की रिट याचिका पर झारखंड उच्च न्यायालय ने दिनांक 28.02.2025 को निर्देश दिया है कि इस मामले को 07.03.2025 को अंतिम निपटान हेतु शीर्षक के अंतर्गत सूचीबद्ध किया जाए। इस बीच, आर.पी./कब्जाधारक बिजली कनेक्शन की आपूर्ति के लिए जुस्को लिमिटेड से संपर्क करेगा, जिस पर कानून के अनुसार विचार किया जाएगा। उच्च न्यायालय में बेंच बदल जाने के कारण यह मामला अंतिम निष्पादन के लिए सूचीबद्ध नहीं हो सका परंतु उच्च न्यायालय के आदेश से यह स्पष्ट है कि उपभोक्ता, जुस्को लिमिटेड (वर्तमान टीएसयूआईएसएल) के पास जाएंगे तो इस पर नियमानुसार विचार करेगा। इसका तात्पर्य है कि उपभोक्ता जुस्को (टीएसयूआईएसएल) के समक्ष अपने घरों में बिजली का कनेक्शन प्राप्त करने का आवेदन दे और जुस्को द्वारा उनके आवेदन पर नियमानुसार विचार कर उन्हें कनेक्शन दिया जाए।

वर्तमान में केबुल टाऊन के करीब 1035 उपभोक्ताओं को बिजली देने के लिए जुस्को 9 वेंडरों को बिजली देती है जो अपने स्तर से बिजली देने और उनसे बिजली का बिल वसुलने का काम करती है। नतीजा है कि इससे उपभोक्ताओं को बिजली महंगा मिलता है। मैं 2023 के जून से प्रयासरत हूं कि जुस्को (टीएसयूआईएसएल) उपभोक्ताओं को सीधे बिजली दे परंतु जुस्को (टीएसयूआईएसएल) ने बंद पड़ी केबुल कंपनी के आरपी से इसके लिए एनओसी मांगा जो आज तक नहीं मिला। उसके बाद केबुल कंपनी यूनियन के तरफ से केबल टाऊन निवासी राम विनोद सिंह हाई कोर्ट गए और कोर्ट ने 28 फरवरी, 2025 को आदेश दिया कि उपभोक्ता जुस्को (टीएसयूआईएसएल) के पास जाएं, जुस्को इसपर नियमानुसार कारवाई करेंगे। मैं जुस्को के महाप्रबंधक (विद्युत) को इसके बारे में पूछा तो उन्होंने कहा कि अभी तक उपभोक्ताओं के तरफ से एक भी आवेदन नहीं आया है। आवेदन आएगा तो उसपर विचार किया जाएगा। केबल टाऊन के निवासियों से मेरी अपील है कि वे जितना जल्द हो सके अपने घरों में बिजली लेने के लिए जुस्को (टीएसयूआईएसएल) के कार्यालय में आवेदन करें ताकि उनके घरों में जुस्को की बिजली मिल सके। उपभोक्ताओं को अपने घरों में बिजली लेने के लिए अलग अलग आवेदन भेजना चाहिए।

# जनता से नकारे जाने के बाद भाजपा नेताओं के पास कोई काम नहीं : विनोद पांडेय

नवीन मेल संवाददाता

रांची। झामुमो के वरिष्ठ नेता विनोद कुमार पांडेय ने भाजपा के आरोपों पर पलटवार किया है। उन्होंने कहा है कि हेमंत सरकार की किसी भी सकारात्मक पहल के प्रति भाजपा नेताओं में ईर्ष्या और असुरक्षा सर्वव्यापी है। भाजपा की प्रतिक्रिया में कुछ भी आश्चर्यजनक नहीं है। एक आदिवासी युवा मुख्यमंत्री का विदेश दौरा भाजपा के नेताओं को भला कैसे पच सकता है, ये तो उनके डीएनए में ही नहीं है।

उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन के नेतृत्व में झारखंड जल्द ही कई अन्य देशों में अपनी उपस्थिति दर्ज कराएगा। हेमंत सोरेन का नेतृत्व क्षमता बेमिसाल है। उनके विराट व्यक्तित्व के प्रति लोगों का विश्वास और मजबूत होता जा रहा है। दूसरी ओर विपक्ष के नाम पर भाजपा नकारात्मक और निराशाजनक समूह बनता जा रहा है। भाजपा का एक ही काम है साम्प्रदायिक सद्भावना को बिगाड़ने की साजिश रचना। चुनावों में जनता से नकारे जाने के बाद प्रदेश में भाजपा नेताओं के पास कोई काम नहीं है। इसलिए सरकार के सकारात्मक कार्य या पहल का परिणाम आने से पहले ही भाजपा के नेता अपने मुताबिक काल्पनिक परिणाम गढ़ कर राजनीति में जिंदा रहने की कोशिश कर रहे हैं। झामुमो नेता विनोद पांडेय ने कहा कि जहां तक प्रश्न है स्पेन और स्वीडन का, तो पिछले एक दशक में स्पेन और भारत ने अपने आर्थिक संबंधों को लगातार बढ़ाया है। भारत में 280 से अधिक स्पेनिश कंपनियां काम करती हैं और द्विपक्षीय व्यापार 2024 में 8.78 बिलियन अमरीकी डॉलर तक पहुंच गया है, जो साल-दर-साल 6.3 फीसदी की वृद्धि दशार्ता है। अक्षय ऊर्जा, धातुकर्म उद्योग, स्मार्ट इंफ्रास्ट्रक्चर और इलेक्ट्रिक मोबिलिटी जैसे क्षेत्र दोनों अर्थव्यवस्थाओं के बीच प्रमुख तालमेल का प्रतिनिधित्व करते हैं। झारखंड प्रतिनिधिमंडल स्पेन एवं स्वीडन में अपने यात्रा के दौरान प्रमुख स्पेनिश औद्योगिक और ऊर्जा समूहों, निवेशकों और सार्वजनिक संस्थानों के साथ बातचीत करेगा। निर्धारित व्यापार मंच और बी2बी बैठकें स्पेनिश कंपनियों को झारखंड के महत्वाकांक्षी औद्योगिक रोडमैप, निवेशक सुविधा नीतियों और सार्वजनिक-निजी सहयोग के अवसरों की जानकारी देंगी। प्रतिनिधि मंडल स्वीडन में बैठक करेगा।

## नशा खुरानी गिरोह ने 5 लाख के सामान व नकदी लूटे

रांची। नशा खुरानी गिरोह अक्सर ट्रेन में यात्रियों को अपना शिकार बनाते हैं। लेकिन अब ये गिरोह बसों में भी यात्रियों को शिकार बनाने लगे हैं। ताजा मामला डोरंडा थाना में दर्ज हुआ है। बरियातू के रहने वाले चंदन झा को नशा खुरानी गिरोह ने जूस में नशा मिलाकर पिलाया। फिर उनके पास से 5 लाख रुपए मूल्य के सामान व नकदी लेकर फरार हो गया। इस संबंध में चंदन झा ने डोरंडा थाना में प्राथमिकी दर्ज कराई है। बस वाले के विरुद्ध भी मामला दर्ज कराया गया है। दर्ज प्राथमिकी में बताया गया है कि वे राम नगरी, आशियाना नगर, पटना के मूल निवासी हैं। रांची में बरियातू में रहते हैं। 13 अप्रैल को वे आरजू बस में पटना से रांची के लिए चले। वे रात 8.45 में मीठापुर पुल के पास से बस पर चढ़े। बस में उनका सीट नंबर 10 था। उनके बगल वाली सीट नंबर 9 में एक अन्य व्यक्ति बैठा था। बस चलने के दौरान उसने बातचीत करना शुरू कर दिया, फिर घुलने-मिलने की कोशिश की। चंदन झा के बगल में बैठे यात्री ने रात में उन्हें पीने के लिए जूस दिया। जूस पीने के बाद चंदन झा को कुछयाद नहीं रहा। अगली सुबह जब रांची बस पहुंची तो उनका पांच लाख का सामान व नकदी लूट लिया गया था।

# चेंबर उप समिति की बैठक में संविधान में संशोधन पर चर्चा

नवीन मेल संवाददाता

रांची (हि.स.)। चेंबर को और अधिक सशक्त बनाने और इसकी पहुंच जिला से लेकर प्रखंड स्तर तक बढ़ाने के उद्देश्य से फेडरेशन ऑफ झारखण्ड चेंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज अपने संविधान में संशोधन करेगा। सदस्यों की ओर से प्राप्त सुझाव पर चर्चा करते हुए पूर्व अध्यक्ष ललित केडिया और पवन शर्मा की अध्यक्षता में शुक्रवार को चैंबर भवन में संविधान कमिटी की बैठक हुई। बैठक में सहमति बनी कि चेंबर की 28 अप्रैल को होनेवाली कार्यसमिति की बैठक में सदस्यों के सुझावों पर चर्चा कर, ईओजीएम की तिथि तय की जाएगी। ईओजीएम के माध्यम से संविधान संशोधन को सदस्यों की

सहमति से अंतिम रूप दिया जायेगा। संविधान संशोधन में मुख्यतः कार्यकारिणी समिति, क्षेत्रीय उपाध्यक्ष का चुनाव राज्य के प्रत्येक प्रमंडलों में कराने, क्षेत्रीय प्रमंडलों को सशक्त करने के लिए नियमित अंतराल पर क्षेत्रीय अधिवेशन की अनिवार्यता के अलावा चेंबर को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने पर बल दिया जाएगा। मौके पर चेंबर के पूर्व अध्यक्ष और संविधान कमिटी के चेयरमेन ललित केडिया और पवन शर्मा ने कहा कि बदलती परिस्थितियों और आवश्यकता के अनुसार चेंबर के संविधान में पूर्व में भी संशोधन हुए हैं। उन्होंने कहा कि वर्तमान में ऐसी जरूरतें हैं, जिसे चेंबर के सदस्य महसूस कर रहे हैं। चेंबर सदस्यों की भावना के अनुरूप पुनः इस दिशा में पहल करेगा। बैठक में चेंबर उपाध्यक्ष राहुल साबू, ज्योति कुमारी, महासचिव आदित्य मल्होत्रा, कोषाध्यक्ष रोहित अग्रवाल, कार्यकारिणी सदस्य डॉ अभिषेक रामाधीन उपस्थित थे।

## पृष्ठ एक के शेष

**सीएम सोरेन करेंगे झारखंड के...**

नवीकरणीय), उन्नत विनिर्माण और बुनियादी ढांचे के विकास सहित अपने सबसे गतिशील क्षेत्रों में उच्च गुणवत्ता वाले प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) को आकर्षित करने की राज्य की व्यापक रणनीति का हिस्सा रहेगी। ज्ञात हो कि संसाधन संपन्न राज्यों में से एक झारखंड, देश के औद्योगिक उत्पादन में महत्वपूर्ण योगदान देता है। इसमें टाटा स्टील, स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड (सेल) और एनटीपीसी की जैसे कुछ बड़े नाम हैं। राज्य में वेदांता रिसोर्सेज, टाटा पावर, लिंडे ग्रुप और अदाणी पावर जैसी वैश्विक कंपनियों से भी बड़े निवेश देखने को मिले हैं, जिनमें स्टील उत्पादन, बिजली उत्पादन और गैस इंफ्रास्ट्रक्चर से जुड़ी परियोजनाएं शामिल हैं। इधर, पिछले एक दशक में स्पेन और भारत ने अपने आर्थिक संबंधों को लगातार बढ़ाया है। आज, भारत में 280 से अधिक स्पेनिश कंपनियां काम करती हैं। वर्ष 2024 में द्विपक्षीय व्यापार 8.78 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुंच गया है, जो साल दर साल 6.3 प्रतिशत की वृद्धि दशार्ता है। अक्षय ऊर्जा, धातुकर्म उद्योग, स्मार्ट इंफ्रास्ट्रक्चर और इलेक्ट्रिक मोबिलिटी जैसे क्षेत्र दोनों अर्थव्यवस्थाओं के बीच प्रमुख तालमेल का प्रतिनिधित्व करते हैं। झारखंड का प्रतिनिधिमंडल स्पेन एवं स्वीडन में अपने यात्रा के दौरान प्रमुख स्पेनिश औद्योगिक और ऊर्जा समूहों, निवेशकों और सार्वजनिक संस्थानों के साथ बातचीत करेगा। निर्धारित व्यापार मंच और बी2बी बैठकें स्पेनिश कंपनियों को झारखंड के महत्वाकांक्षी औद्योगिक रोडमैप, निवेशक सुविधा नीतियों और सार्वजनिक-निजी सहयोग के अवसरों की जानकारी देंगी। प्रतिनिधिमंडल स्वीडन में भी बैठक करेगा। टीम 27 अप्रैल को वापस झारखंड लौटेगी। यह 'हेमंत सोरेन 2.0' सरकार के किसी प्रतिनिधिमंडल का पहला विदेशी दौरा है। यह दौरा विदेशी निवेश के लिहाज से काफी महत्वपूर्ण है।

**सर्वाइकल कैंसर उन्मूलन की दिशा में...**

एमओयू वर्षों से लंबित था। आज यह समझौता धरातल पर उतरा है। पूरे देश में राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन और आईएमए द्वारा की गई यह पहली ऐतिहासिक और बहुत ही कारगर पहल है, जो सर्वाइकल कैंसर उन्मूलन की दिशा में मील का पत्थर साबित होगी और दूसरे राज्यों के लिए भी यह एक मिसाल बनेगी। सभी सिविल सर्जन को निर्देश दिया जाएगा कि वे अपने-अपने जिले में सर्वाइकल कैंसर स्क्रीनिंग व्यापक रूप से लगातार चलाएं। इससे राज्य में सर्वाइकल कैंसर उन्मूलन के लिए वीमेन डॉक्टर्स विंग आईएमए झारखंड द्वारा चलाए जा रहे अभियान को बल मिलेगा। ज्ञात हो कि वीमेन डॉक्टर्स विंग वर्ष 2014 से पूरे राज्य के सुदूरवर्ती इलाकों में सर्वाइकल कैंसर के उन्मूलन की दिशा में कार्यरत है और लगातार मेगा महिला स्वास्थ्य शिविरों का आयोजन कर रही है। इस पूरे अभियान की नेतृत्वकर्ता राष्ट्रपति द्वारा नारी शक्ति पुरस्कार से सम्मानित डॉ भारती कश्यप हैं। वे वीमेन डॉक्टर्स विंग आईएमए झारखंड की चेयरपर्सन भी हैं। ज्ञात हो कि वीमेन डॉक्टर्स विंग और स्वास्थ्य विभाग, झारखंड द्वारा सर्वाइकल कैंसर स्क्रीनिंग के लिए बनाए गए झारखंड मॉडल को लक्ष्य से ज्यादा सफलता मिली है। बता दें कि भारत में 67,000 महिलाओं की मौत हर साल सर्वाइकल कैंसर से होती है। सर्वाइकल कैंसर देश में दूसरे नंबर का सबसे बड़ा कैंसर है और सबसे प्रीवेंटेबल और सक्सेसफुली ट्रीटेबल कैंसर भी है।

**अभियान को लगातार जारी रखने की...**

मरीजों को बाद में सर्वाइकल कैंसर हो जाता है। डॉ भारती कश्यप ने कहा, हम लोगों ने देश के वरिष्ठ कैंसर रोग विशेषज्ञों द्वारा राज्य के सभी सरकारी स्त्री रोग विशेषज्ञों को सर्वाइकल प्री-कैंसर की जांच एवं कोलपोस्कोपी गाइडेड क्रायो ट्रीटमेंट का विशेष प्रशिक्षण भी दिलवाया है। इससे हमने पूरे राज्य में प्रशिक्षित चिकित्सकों का एक बहुत बड़ा नेटवर्क भी तैयार किया है। इसके अलावा, राज्य के 14 बड़े सरकारी अस्पतालों में सर्वाइकल कैंसर की जांच और उपचार के लिए डिजिटल काल्पोस्कोप और क्रायो मशीन लगवाई गई हैं। बता दें कि लॉस एंजेलिस में 20 से 25 अप्रैल 2025 को आयोजित होने वाली अमेरिकन सोसाइटी ऑफ कैटरेक्ट एंड रिफ्रैक्टिव सर्जरी की वार्षिक कांफ्रेंस में डॉ भारती कश्यप अपने दो रिसर्च पेपर्स पर व्याख्यान प्रस्तुत करेंगी।

**जुआ विवाद में युवक की टांगी...**

ही छतरपुर थाना पुलिस मौके पर पहुंची। एएसआई राहुल कुमार ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए मेदिनीनगर भेज दिया। थाना प्रभारी प्रशांत प्रसाद ने बताया कि प्रारंभिक जांच में यह स्पष्ट हुआ है कि हत्या किसी अन्य स्थान पर कर शव को घसीटकर मृतक के घर के पास फेंका गया है। संदेह के आधार पर गांव के कुछ लोगों से पूछताछ की जा रही है। पुलिस ने मामले की गहराई से जांच शुरू कर दी है और जल्द ही हत्या के कारणों और आरोपियों का खुलासा किया जाएगा।

**जमशेदपुर में सीएचओ पर धारदार...**

पर एक कुल्हाड़ी छोड़कर भाग गए। ज्योति पिछले पांच साल से इस आरोग्य केंद्र में पदस्थापित हैं। जिस समय उन पर हमला हुआ, उनके पति भी घर के अंदर थे। वह चीख सुनकर बाहर आए, तो ज्योति खून से लथपथ फर्श पर पड़ी थीं। उन्होंने परिजनों को इसकी सूचना दी। इसके बाद उन्हें तुरंत महात्मा गांधी मेमोरियल अस्पताल पहुंचाया गया। यहां प्राथमिक उपचार के बाद हालत गंभीर होने पर उन्हें टाटा मेन हॉस्पिटल रेफर कर दिया गया। घटना की जानकारी मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची। पुलिस आसपास के सीसीटीवी फुटेज खंगालने और प्रत्यक्षदर्शियों से पूछताछ में जुटी हुई है। ज्योति कुमारी स्वास्थ्य केंद्र परिसर में ही अपने परिवार के साथ रहती थीं। पटमदा रेंज के डीएसपी वचनदेव कुमार सहित कई पुलिस अधिकारी टीएमएच पहुंचे हैं। जमशेदपुर के सिविल सर्जन डॉ साहिर पाल भी हॉस्पिटल पहुंचे और घटना की जानकारी ली।

## डब्ल्यूपीएल अब वही प्रभाव दिखा रही है जो आईपीएल ने पुरुष क्रिकेट पर डाला है : स्मृति मंधाना

**नई दिल्ली (आईएएनएस)** । भारत की महिला क्रिकेट टीम की उप-कप्तान स्मृति मंधाना का मानना है कि वूमेन प्रीमियर लीग (डब्ल्यूपीएल) अब धीरे-धीरे वही असर दिखा रही है, जो इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) ने पुरुष क्रिकेट पर 2008 से अब तक डाला है। स्मृति ने आईएएनएस से कहा, "पिछले तीन सालों में हमने देखा है कि डब्ल्यूपीएल कितनी तेजी से आगे बढ़ी है। पहले ज़्यादातर मैच देखने लड़के आते थे, लेकिन अब बहुत सी लड़कियां भी मैदान में आकर मैच देखती हैं। छोटी बच्चियां भी हमारे पास आकर कहती हैं कि वो भी क्रिकेटर बनना चाहती हैं। ये सुनकर बहुत अच्छा लगता है। डब्ल्यूपीएल ने टी20 क्रिकेट को लोगों तक पहुंचाने और मनोरंजन के लिहाज से बड़ा असर डाला है। जिस तरह से आईपीएल ने पिछले 17 से पुरुष क्रिकेट के लिए जो कुछ किया है, मुझे लगता है डब्ल्यूपीएल अब वही काम महिला क्रिकेट के लिए कर रही है। डब्ल्यूपीएल की शुरुआत 2023 में हुई थी, और तभी से भारत के छोटे-बड़े शहरों में लड़कियां बड़ी संख्या में क्रिकेट अकादमियों में शामिल हो रही हैं। स्मृति महाराष्ट्र के सांगली शहर में अपनी खुद की अकादमी भी चलाती हैं और अब दुबई में शुरू हुई नई अकादमी में खिलाड़ियों को बेहतर प्रशिक्षण देने की योजना बना रही हैं।

## श्रीयंका पहली बार विश्व कप फाइनलिस्ट की सूची में, 50 मीटर राइफल 3पी इवेंट में 8वें स्थान पर रहीं

**लीमा (आईएएनएस)।** पेरिस ओलंपियन श्रीयंका सदांगी इस दोहरे चरण वाले दक्षिण अमेरिकी प्रवास पर पहली बार व्यक्तिगत विश्व कप फाइनल के लिए कट बनाने वाली नवीनतम भारतीय निशानेबाज बन गईं, उन्होंने चल रहे अंतर्राष्ट्रीय शूटिंग स्पोर्ट फेडरेशन (आईएसएसएफ) विश्व कप राइफल/पिस्टल/शॉटगन चरण में महिलाओं की 50 मीटर राइफल 3 पोजिशन (3पी) स्पर्धा के फाइनल के लिए क्वालीफाई किया। श्रीयंका अंततः आठवें स्थान पर रहीं, स्टैंडिंग पोजिशन राउंड के 10वें शॉट के बाद बाहर हो गईं, जो 45 शॉट के फाइनल का 40वां शॉट था। पेरिस रजत पदक विजेता यूएसए की सेगेन मैडालेना ने स्वर्ण पदक जीता। सेगेन के प्रयास ने यूएसए को तीन स्वर्ण और छह पदकों के साथ पदक तालिका में शीर्ष पर पहुंचा दिया। प्रतियोगिता के तीसरे दिन के अंत में भारत दो स्वर्ण, एक रजत और एक कांस्य पदक के साथ दूसरे स्थान पर था।

### डेवाल्ड ब्रेविस चेन्नई सुपर किंग्स में शामिल

# इंजर्ड गुरजपनीत आईपीएल से बाहर, गुजरात टाइटंस में फिलिप्स की जगह शनाका जुड़े

**एजेंसी । नई दिल्ली**

साउथ अफ्रीका के युवा बल्लेबाज डेवाल्ड ब्रेविस आईपीएल 2025 में चेन्नई सुपर किंग्स में शामिल हो गए हैं। ब्रेविस ने अपने इंस्टाग्राम हैंडल पर चेन्नई के साथ स्टोरी शेयर की। 2024 में मुंबई इंडियंस के लिए खेलने वाले ब्रेविस को 2025 मेगा ऑक्शन में नहीं खरीदा था। ब्रेविस को तेज गेंदबाज गुरजपनीत सिंह की जगह शामिल किया है। गुरजपनीत नेट प्रैक्टिस के समय इंजर्ड हुए थे। ब्रेविस को सीएसके ने 2.2 करोड़ रुपए में साइन किया है। वहीं गुजरात टाइटंस ने आईपीएल 2025 के बाकी मैचों के लिए चोटिल ग्लेन फिलिप्स की जगह श्रीलंका के ऑलराउंडर दसुन शनाका को शामिल किया है। हालांकि, कागिसो रबाडा के रिप्लेसमेंट की घोषणा नहीं की गई है। शनाका इससे पहले 2023 में जीटी के लिए खेल चुके हैं। उन्हें 75 लाख में गुजरात ने अपने साथ जोड़ा है। 2022 में आईपीएल डेब्यू किया डेवाल्ड ब्रेविड ने 2022 में मुंबई इंडियंस से आईपीएल में डेब्यू किया था। उन्होंने अब तक 10 मैच खेले हैं, जिसमें 230 रन स्कोर किए। इस दौरान उनका स्ट्राइक रेट 133.72 का रहा। फिलिप्स हैदराबाद के खिलाफ चोटिल हुए थे 6 अप्रैल को खेले गए मैच में हैदराबाद की पारी के छठे ओवर में ग्लेन फिलिप्स को चोट लगी। प्रसिद्ध कृष्णा के ओवर में एक थ्रो फेंकते समय उनकी मसल्स में खिंचाव आया। बाद में फिजियो उन्हें मैदान से बाहर ले गए। फिलिप्स अब तक कुल 8 आईपीएल मैच खेले हैं। इस दौरान 65 रन और दो विकेट लिए हैं। फिलिप्स को गुजरात ने आईपीएल 2025 के मेगा ऑक्शन में 2 करोड़ रुपए में खरीदा था। उन्हें 2023 के आईपीएल सीजन में प्लेइंग-11 में मौका नहीं मिला। शनाका ने आईपीएल में गुजरात से खेल चुके हैं शनाका ने अब तक आईपीएलका केवल एक सीजन खेला है, जब उन्हें जीटी के लिए तीन गेम मिले थे, जिसमें उन्होंने केवल 26 रन बनाए थे और दो सीजन पहले उन्हें गेंदबाजी करने का मौका ही नहीं मिला था। रबाडा निजी कारणों से घर लौट गए हैं इस बीच तेज गेंदबाज कागिसो राबाडा भी निजी कारणों से 3 अप्रैल को घर चले गए थे। इस बात पर कोई स्पष्टता नहीं है कि वे कब और क्या भारत लौटेंगे। जीटी ने रबाडा के लिए किसी रिप्लेसमेंट का नाम नहीं बताया है। पॉइंट टेबल में दूसरे स्थान पर जीटी ने अपने छह में से चार गेम जीते हैं और लीग चरण के लगभग आधे मैच खत्म होने के बाद अंक तालिका में दूसरे स्थान पर है। उनका अगला मैच शनिवार को दोपहर का खेल है, जो टेबल-टॉपर्स दिल्ली कैपिटल्स के खिलाफ घरेलू मैदान पर है।

## भारतीय हॉकी टीम में जगह बनाने वाली पूर्वांचल की पहली महिला खिलाड़ी बनी पूजा यादव

**बेंगलुरु (आईएएनएस)।** 21 वर्षीय पूजा यादव वाराणसी के बाहरी इलाके के एक गांव से आती हैं और भारतीय महिला हॉकी टीम में चुनी जाने वाली पूर्वांचल की पहली महिला खिलाड़ी बन चुकी हैं। पिछले कुछ हफ्तों से वह बेंगलुरु के भारतीय खेल प्राधिकरण (साई) के सीनियर नेशनल कैंप में ट्रेनिंग कर रही थीं। अब उन्हें 26 सदस्यीय भारतीय महिला हॉकी टीम में शामिल किया गया है। यह टीम 26 अप्रैल से 4 मई तक ऑस्ट्रेलिया के पर्थ हॉकी स्टेडियम में होने वाले दौरे पर जाएगी। अपने चयन पर बात करते हुए पूजा ने कहा, "जब मुझे पता चला कि मैं भारतीय टीम में चुनी गई हूं, तो बहुत ही अद्भुत अहसास हुआ। गांव से सभी लोगों के फोन आने लगे। मेरे माता-पिता और भाई-बहन बहुत खुश थे। पहले यह सपना जैसा लगता था, लेकिन अब उन्हें मुझ पर गर्व है। उन्होंने आगे कहा, "मुझे इस बात की खुशी है कि मैं पूर्वांचल से पहली महिला खिलाड़ी हूं जो भारतीय टीम तक पहुंची है। मैं चाहती हूं कि मेरे जैसी गांव की लड़कियां भी अपने सपने पूरे करें और उन्हें रोका न जाए। मैं उनके परिवारों से अनुरोध करती हूं कि वे अपनी बेटियों को सहयोग दें, क्योंकि मेहनत और अभ्यास से हम भी ऊंचाइयों तक पहुंच सकते हैं और पूर्वांचल से और महिला खिलाड़ियों को आते हुए देख सकते हैं।

## स्पर्स ने फ्रैंकफर्ट को हराकर यूरोपा लीग के सेमीफाइनल में प्रवेश किया

**बर्लिन (आईएएनएस)।** डोमिनिक सोलंके की पहली हाफ की पेनल्टी निर्णायक साबित हुई, क्योंकि टोटेनहम हॉटस्पर ने इंट्राच फ्रैंकफर्ट पर 1-0 (कुल 2-1) की जीत के साथ यूईएफए यूरोपा लीग के सेमीफाइनल में जगह बनाई। लंदन में 1-1 की बराबरी से उत्साहित फ्रैंकफर्ट ने शानदार शुरुआत की। ह्यूगो एकिटिके ने शुरुआत में ही गोल करने का प्रयास किया, जबकि मारियो गोट्ज ने एक आशाजनक प्रयास किया, जो चूक गया। हालांकि, मेजबान टीम को 17वें मिनट में झटका लगा, जब गोट्ज जांघ की समस्या के कारण लंगड़ाते हुए मैदान से बाहर चले गए, जिससे उन्हें जल्दी ही रणनीति बदलनी पड़ी। फ्रैंकफर्ट ने नियंत्रण बनाए रखा, लेकिन स्पर्स के खेल में आगे बढ़ने के साथ ही वह बढ़त हासिल करने में विफल रहा। जेम्स मैडिसन ने एक शॉट बचाया, लेकिन कुछ मिनट बाद गोलकीपर कौआ सैंटोस द्वारा गिराए जाने पर पेनल्टी जीत ली। सिन्हुआ की रिपोर्ट के अनुसार, सोलनके ने ब्रेक से ठीक पहले स्पॉट से गोल किया।

## केएल राहुल और आथिया शेट्टी ने अपनी बेटी के नाम का किया खुलासा

**एजेंसी । नई दिल्ली**

भारतीय क्रिकेटर केएल राहुल और आथिया शेट्टी ने अपनी बेटी के नाम का खुलासा किया है। इस स्टार कपल ने अपने बेटी का नाम इवारा विपुला राहुल रखा है। आथिया ने अपने सोशल मीडिया हैंडल्स के जरिये बेटी के नाम की घोषणा की। आथिया ने चुने गए नाम का अर्थ भी बताया। आथिया ने इंस्टाग्राम पर लिखा- इवारा संस्कृत मूल का एक शब्द - जिसका अर्थ है भगवान का उपहार। इवारा का मिडिल नाम विपुला उनकी नानी के सम्मान में रखा गया और राहुल उनके पिता की निशानी केएल राहुल के नाम पर रखा गया। आथिया शेट्टी ने अपने पति केएल राहुल के जन्मदिन पर बेटी के नाम का खुलासा किया। केएल राहुल 18 अप्रैल

को अपना 33वां जन्मदिन मना रहे हैं। याद दिला दें कि केएल राहुल और आथिया शेट्टी ने आईपीएल 2025 के पहले सप्ताह में अपनी बेटी के जन्म का स्वागत किया। 24 मार्च को आथिया ने इवारा को जनम दिया था। राहुल ने अपने बच्चे के जन्म की खातिर दिल्ली कैपिटल्स के लिए सीजन के पहले मैच में हिस्सा नहीं लिया था।

### राहुल का धमाकेदार प्रदर्शन

वैसे, केएल राहुल के प्रदर्शन पर गौर करें तो आईपीएल 2025 में उन्होंने शानदार प्रदर्शन किया है। राहुल ने मौजूदा आईपीएल के 5 मैचों में दो अर्धशतकों की मदद से 238 रन बनाए। उनकी औसत 59.50 की रही जबकि स्ट्राइक रेट 154.55 का रहा। राहुल का मौजूदा टूर्नामेंट में सर्वश्रेष्ठ स्कोर 93* रन रहा, जो उन्होंने आरसीबी के खिलाफ 10 अप्रैल 2025 को बेंगलुरु के एम चिन्नास्वामी स्टेडियम पर बनाए थे। वैसे, केएल राहुल ने आईपीएल करियर में अब तक कुल 137 मैच खेले, जिसमें चार शतक और 39 अर्धशतकों की मदद से 4921 रन बनाए। आईपीएल करियर में उनकी औसत 45.99 की रही जबकि स्ट्राइक रेट 135.45 का रहा।

## भारतीय युवा मुक्केबाजों की बड़ी टुकड़ी तैयार एशिया में बजाएंगे दम

**नई दिल्ली।** भारत ने जॉर्डन के अम्मान में आयोजित होने वाली एशियाई अंडर-15 और अंडर-17 मुक्केबाजी चैंपियनशिप के लिए 56 सदस्यीय युवा मुक्केबाजी दल - 30 अंडर-15 और 26 अंडर-17 मुक्केबाज - को मैदान में उतारा है। यह एशियाई मुक्केबाजी द्वारा आयोजित पहला कार्यक्रम है, जिसे एशियाई ओलंपिक परिषद और नवगठित विश्व मुक्केबाजी दोनों द्वारा समर्थन दिया गया है। कोचिंग स्टाफ और अधिकारियों के साथ टीम 17 अप्रैल को अम्मान पहुंची, जहां 18 अप्रैल को ड्रॉ के बाद 19 अप्रैल को प्रारंभिक मुकाबले शुरू होंगे। अंडर-17 लड़कों की टीम में साहिल दुहान और देवांश शामिल हैं, जिन्होंने 2024 एशियाई जूनियर चैंपियनशिप में क्रमशः रजत और कांस्य पदक जीता, साथ ही 2024 स्कूल गेम्स फेडरेशन ऑफ इंडिया (एसजीएफआई) के स्वर्ण पदक विजेता टीकम सिंह भी शामिल हैं।

### व्यापार/लाइफ व साइंस

# सस्टेनेबल खनन के लिए एसईसीएल ने टीएमसी मिनरल के साथ साइन किया 7,040 करोड़ रुपये का एग्रीमेंट

**नई दिल्ली (आईएएनएस)**

देश में टिकाऊ और पर्यावरण के अनुकूल खनन प्रैक्टिस को बढ़ावा देने के लिए साउथ ईस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड (एसईसीएल) ने शुक्रवार को टीएमसी मिनरल रिसोर्सेज प्राइवेट लिमिटेड के साथ 7,040 करोड़ रुपये का एग्रीमेंट साइन किया है। यह एग्रीमेंट कोयला खनन में पेस्ट फिल टेक्नोलॉजी को लागू करने के लिए किया गया है।

एसईसीएल, टीएमसी मिनरल रिसोर्सेज प्राइवेट लिमिटेड के साथ एग्रीमेंट करने वाली पहली सरकारी कंपनी है। कोयला मंत्रालय के मुताबिक, यह देश में टिकाऊ और पर्यावरण के अनुकूल खनन प्रैक्टिस की दिशा में एक बड़ा कदम है। इस एग्रीमेंट के तहत, एसईसीएल के कोरबा क्षेत्र में स्थित सिंघाली भूमिगत कोयला खदान में पेस्ट फिल तकनीक का उपयोग करके बड़े पैमाने पर कोयला उत्पादन किया जाएगा। 25 वर्षों की अवधि में, इस प्रोजेक्ट से लगभग 8.4 मिलियन टन (84.5 लाख टन) कोयले का उत्पादन होने की उम्मीद है। पेस्ट फिलिंग एक आधुनिक भूमिगत खनन टेक्नोलॉजी है जिसमें सतही भूमि अधिग्रहण की आवश्यकता नहीं होती है।

कोयला निकालने के बाद, खनन के कारण बने खाली स्थान को फ्लाई ऐश, ओपनकास्ट खदानों से क्रश किए गए ओवरबर्डन, सीमेंट, पानी और केमिकल्स से बने विशेष रूप से तैयार पेस्ट से भर दिया जाता है। यह प्रक्रिया भूमि के धंसने को रोकती है और खदान की संरचनात्मक स्थिरता सुनिश्चित करती है।

### घनी आबादी वाले क्षेत्र में खनन के लिए पेस्ट फिल तकनीक बनी समाधान

सिंघाली भूमिगत खदान को 1989 में 0.24 मिलियन टन प्रति वर्ष उत्पादन क्षमता के लिए मंजूरी दी गई थी और 1993 में इसका संचालन शुरू हुआ था। वर्तमान में, खदान में जी-7 ग्रेड नॉन-कोकिंग कोयले के 8.45 मिलियन टन निकालने योग्य भंडार हैं। इसे बोर्ड और पिलर पद्धति का उपयोग करके विकसित किया गया था, जिसमें भूमिगत संचालन के लिए लोड हॉल डंपर्स (एलएचडी) और यूनिवर्सल ड्रिलिंग मशीन (यूडीएम) का उपयोग किया गया था। हालांकि, खदान के ऊपर का सतही क्षेत्र घनी आबादी वाला है, जिसमें गांव, हाईटेंशन बिजली की लाइनें और सड़क हैं, जिसके कारण सुरक्षा और पर्यावरण संबंधी चिंताओं के चलते पारंपरिक गुफा निर्माण टेक्नोलॉजी अव्यवहारिक हो जाती हैं। पेस्ट फिल तकनीक से इस क्षेत्र में खनन गतिविधियां अब सतही इन्फ्रास्ट्रक्चर को प्रभावित किए बिना आगे बढ़ सकती हैं।

## भारत एआई पेशेवरों के लिए एक प्रमुख रिसोर्स टैलेंट हब : जयंत चौधरी

**नई दिल्ली।** कौशल विकास और उद्यमिता राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) जयंत चौधरी ने कहा है कि भारत एआई पेशेवरों के लिए एक प्रमुख रिसोर्स टैलेंट हब है। उन्होंने कहा कि 'एआई को अपनाने' के लिए एनवायरमेंट को तैयार करने में सरकार और उद्योगों ने कई प्रयास किए हैं, जो अपने आप में स्पष्ट दिखाई देते हैं। अफ्रीका के सबसे बड़े टेक और स्टार्टअप शो 'जीआईटीएक्स अफ्रीका 2025' में राज्य मंत्री ने स्वास्थ्य सेवा के विकास के माध्यम से कई क्षेत्रों में बड़े बदलाव पेश किए हैं। राज्यमंत्री जयंत चौधरी ने मोरक्को की राजधानी मारकेश में आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित लोगों से कहा, "हम एडवांस टेक्नोलॉजी को अपने स्किलिंग इकोसिस्टम में इंटीग्रेट करने पर तेजी से काम कर रहे हैं, जिनमें एआई, साइबर सिक्योरिटी, फिनटेक और डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर शामिल हैं।

## भारत में अगले 2-3 वर्षों में बढ़कर 700 मिलियन स्क्वायर फीट तक पहुंच सकती है ग्रीन ऑफिस इन्वेंट्री : रिपोर्ट

**अहमदाबाद (आईएएनएस)**

भारत में ग्रीन ऑफिस इन्वेंट्री अगले 2-3 वर्षों में बढ़कर 700 मिलियन स्क्वायर फीट पहुंचने का अनुमान है। यह जानकारी शुक्रवार को जारी रिपोर्ट में दी गई। रिपोर्ट में बताया गया कि आने वाले समय में ग्रीन सर्टिफाइड बिल्डिंग्स में लीज का अनुपात बढ़कर लगभग 80-85 प्रतिशत होने की उम्मीद है, जो कि मौजूदा समय में 75 प्रतिशत के करीब है। भारत के रियल एस्टेट में बड़ा बदलाव आ रहा है। सस्टेनेबिलिटी का महत्व बढ़ रहा है और सभी प्रकार की एसेट्स में वृद्धि देखी जा रही है। क्रेडाई-कोलियर्स की रिपोर्ट के अनुसार, ग्रीन सर्टिफाइड बिल्डिंग्स में ऑक्यूपेंसी लेवल 80-90 प्रतिशत तक अधिक है, और किराया सामान्य

से 25 प्रतिशत अधिक है। भारत में 2024 में ग्रीन सर्टिफाइड ऑफिस स्टॉक 503 मिलियन स्क्वायर फीट रहा है, जो शीर्ष छह शहरों में कुल ग्रेड ए इन्वेंट्री का 66 प्रतिशत था। रिपोर्ट में बताया गया कि इस दशक की शुरुआत के बाद से ग्रीन ऑफिस स्टॉक में 40 प्रतिशत की वृद्धि हुई है, जो डेवलपर्स की बढ़ती प्रतिबद्धता को दिखाता है। ग्रीन सर्टिफाइड ऑफिस स्टॉक में बेंगलुरु की हिस्सेदारी 31 प्रतिशत, दिल्ली एनसीआर की 19 प्रतिशत और हैदराबाद की 17 प्रतिशत है।

## इसुजु मोटर्स इंडिया के वाणिज्यिक वाहनों के निर्यात में वित्त वर्ष 2025 में 24% का उछाल

**नई दिल्ली (आईएएनएस)**

इसुजु मोटर्स इंडिया ने अपने कमर्शियल व्हीकल (सीवी) के निर्यात में 24 प्रतिशत की मजबूत वृद्धि दर्ज की है, जो वित्त वर्ष 2025 में 20,312 यूनिट पर पहुंच गया। यह पिछले वित्त वर्ष में निर्यात की गई 16,329 यूनिट से एक शानदार उछाल को दर्शाता है, जो इस अवधि के दौरान देश में वाणिज्यिक वाहन निर्यातकों में सबसे अधिक है। कंपनी के वैश्विक विकास में खासकर पिकअप ट्रक सेगमेंट मुख्य भूमिका निभा रहा है। कंपनी भारत को घरेलू और अंतरराष्ट्रीय दोनों बाजारों के लिए एक रणनीतिक केंद्र के रूप में इस्तेमाल कर रही है।

## इंफोसिस वित्त वर्ष 2026 में 15,000-20,000 फ्रेशर्स की करेगी भर्ती

**मुंबई (आईएएनएस)**

आईटी प्रमुख इंफोसिस ने हाल ही में घोषणा की है कि कंपनी ने वित्त वर्ष 2025 में 6,388 कर्मचारियों को जोड़ा है, जिससे कंपनी के कुल कर्मचारियों की संख्या अब 3,23,578 हो गई है, जबकि पिछले वित्त वर्ष में कंपनी के कर्मचारियों की संख्या 3,17,240 थी। हालांकि, कंपनी की ओर से स्वीकारा गया कि चौथी तिमाही में कर्मचारियों की संख्या में मामूली वृद्धि दर्ज की गई। इस अवधि के दौरान कंपनी ने 199 कर्मचारियों को जोड़ा। यह इंफोसिस के लिए कर्मचारियों की संख्या में वृद्धि की लगातार तीसरी तिमाही रही। कंपनी ने इससे पहले तीसरी तिमाही में 5,591 और दूसरी तिमाही में 2,456 कर्मचारियों को जोड़ा। धीमी हायरिंग के बावजूद भी कंपनी का कहना है कि वह वित्त वर्ष 2026 में 15,000-20,000 फ्रेश स्नातकों की भर्ती करेगी। इस वर्ष की शुरुआत में इंफोसिस ने अपने मैसूर कैंपस में लगभग 400 ट्रेनी को नौकरी से निकाल दिया था, क्योंकि वे इंटरनल इवैल्यूएशन टेस्ट में तीन बार असफल रहे थे। ये ट्रेनी अक्टूबर 2024 में शामिल लगभग 800 बैच का हिस्सा थे। ट्रेनी की छंटनी पर टिप्पणी करते हुए, इंफोसिस के सीईओ सलिल पारेख ने कहा कि कंपनी एक सख्त मूल्यांकन प्रणाली का पालन करती है, जो दो दशकों से अपरिवर्तित बनी हुई है। पारेख ने प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान कहा, "हमारे पास परीक्षण करने का एक कठोर तरीका है, जो 20 से अधिक वर्षों से एक जैसा है।

## एक मई से नहीं लागू होगा सैटेलाइट आधारित टोलिंग सिस्टम, केंद्र ने जारी किया स्पष्टीकरण

**नई दिल्ली (आईएएनएस)**

केंद्र सरकार ने शुक्रवार को स्पष्टीकरण जारी करते हुए उन रिपोर्ट्स को खारिज कर दिया, जिसमें एक मई से राष्ट्रीय स्तर पर सैटेलाइट आधारित टोलिंग सिस्टम लागू करने की बात कही गई थी। सड़क, परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय द्वारा जारी बयान में कहा गया कि कुछ मीडिया हाउस की रिपोर्ट्स में दावा किया गया है कि एक मई से राष्ट्रीय स्तर पर सैटेलाइट आधारित टोलिंग सिस्टम लागू हो जाएगा और यह मौजूदा फास्टैग आधारित टोल कलेक्शन सिस्टम को रिप्लेस करेगा।